हिन्दी

व्याकरण एवं रचना

Teachers' Manual

कक्षा 6

हिन्दी व्याकरण एवं रचना कक्षा - 6

अध्याय–1 भाषा, बोली, लिपि एवं व्याकरण

1. भाषा वह माध्यम है, जिसके द्वारा हम अपने मनोभावों एवं विचारों को दूसरों तक पहुँचाते हैं तथा दूसरों के मनोभाव एवं विचार सरलता से हम तक पहुँचते हैं।
2. भाषा के दो रूप हैं– (1) मौखिक भाषा (2) लिखित भाषा। एक तीसरा रूप सांकेतिक भाषा को भी माना गया है।
3. राजभाषा—वह सरकारी कार्यालयों की कामकाजी भाषा है। हिन्दी के अलावा अंग्रेजी तथा उर्दू हमारी राजभाषा हैं।
   मातृभाषा—बालक द्वारा अपने घर परिवार में सीखी गई भाषा अथवा मातृभूमि की भाषा मातृभाषा कहलाती है।
4. 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस मनाया जाता है। क्योंकि 14 सितम्बर, 1949 को हिन्दी को भारत की राजभाषा घोषित किया गया था।
5. मैं पश्चिमी राजस्थान का निवासी हूँ। मेरे घर में मातृभाषा मारवाड़ी का प्रयोग होता है।
6. नेपाल की मुख्य भाषा नेपाली है, इसकी लिपि देवनागरी है।
7. मेरी अंग्रेजी की शिक्षिका की मातृभाषा बाङ्ला है।
8. (क) देवनागरी, (ख) शुद्ध, (ग) 14 सितम्बर, (घ) मातृभाषा, (ङ) लिखित।
9. (क) ✗, (ख) ✗, (ग) ✓, (घ) ✗, (ङ) ✓, (च) ✗
10. भाषा का लिखित रूप – ई-मेल, पत्र, पुस्तक, समाचार पत्र।
    भाषा का मौखिक रूप – भाषण, वार्तालाप, मोबाइल फोन पर बात करना।
    भाषा का सांकेतिक रूप – बच्चे का रोना, पक्षियों की चहचहाहट, पुलिस द्वारा ट्रैफिक नियंत्रण।
11.

लिपि	भाषा
गुरुमुखी	पंजाबी
रोमन	अंग्रेजी
देवनागरी	हिंदी
फारसी	उर्दू

खेल-खेल में

1. बोलियों की सूची—
   (i) पश्चिमी राजस्थान – मारवाड़ी
   (ii) उत्तर पूर्वी राजस्थान – मेवाती, अहीरवाटी
   (iii) मध्य पूर्वी राजस्थान – ढूँढाड़ी, हाड़ौती
   (iv) दक्षिण पूर्वी राजस्थान – मालवी
   (v) दक्षिणी राजस्थान – निमाड़ी
   एक अन्य स्वतंत्र भाषा बंगारा है।
2. (क) संस्कृत (ख) प्राकृत
3. (क) पद्मनाभ कवि कृत कान्हड़दे प्रबंध (ख) वेलि क्रिसन रुकमणी री

अध्याय–2 वर्ण–विचार

1. भाषा की सबसे छोटी व अखंड इकाई अथवा ध्वनि 'वर्ण' कहलाती है।
2. **ह्रस्व स्वर**— जिन स्वरों के उच्चारण में कम से कम समय लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। इन्हें मूल स्वर भी कहा जाता है। इनकी संख्या चार है— अ, इ, उ तथा ऋ।
   दीर्घ स्वर— जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर की अपेक्षा अधिक समय लगे तो उन स्वरों को दीर्घ स्वर कहते हैं। ये सात हैं— आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।
3. हिन्दी में कुछ वर्ण न तो स्वर ही होते हैं और न ही व्यंजन, ये अयोगवाह कहलाते हैं। जैसे— अं, अः।
4. **स्पर्श व्यंजन**—इनका उच्चारण करते समय जीभ मुख के विभिन्न भागों जैसे— कंठ, तालु, मूर्धा, दंत अथवा होंठ में से किसी एक का स्पर्श करती है। उदाहरण— क, च, ट, त, प आदि।
5. **व्यंजन के भेद**—उच्चारण के आधार पर व्यंजन के तीन भेद हैं— 1. स्पर्श व्यंजन, 2. अंतःस्थ व्यंजन, 3. ऊष्म व्यंजन।
6. मक्खन, भ्रम, स्नानघर, विद्यालय, मुस्कान।
7. क्ष— क्षमा, क्षत्रिय, अक्षर
   त्र— पत्र, त्रिशूल, मित्र
   ज्ञ— ज्ञान, विज्ञान, यज्ञ
   श्र— श्रम, श्रवण, श्रेष्ठ
8. (क) **गुरुद्वारा**—ग् + उ + र् + उ + द् + व् + आ + र् + आ
   (ख) **साइकिल**—स् + आ + इ + क् + इ + ल् + अ
   (ग) **व्याकरण**—व् + य् + आ + क् + अ + र् + अ + ण् + अ
   (घ) **परिवार**—प् + अ + र् + इ + व् + आ + र् + अ
   (ङ) **वृंदावन**—व् + ऋ + अं + द् + आ + व् + अ + न् + अ
9. (क) राजस्थान (ख) वाणिज्य (ग) मोबाइल (घ) ट्रेन।
10. (क) ✓, (ख) ✗, (ग) ✗, (घ) ✓, (ङ) ✗
11. (क) कण (माँस का) — कला कौशल
    (ख) दंड — सुंदर
    (ग) ताश — खेल
    (घ) खोया गया — ईश्वर
    (ङ) भोजन करना — घर, मकान
    (च) थोड़ा सा — बुढ़ापा
12.

सन्यासी	[✗]	संन्यासी	[✓]
बिमारी	[✗]	बीमारी	[✓]
वधु	[✗]	वधू	[✓]
धुआँ	[✓]	धुँआ	[✗]
मेंढक	[✓]	मेढक	[✗]
त्योहार	[✓]	त्यौहार	[✗]

13. अनुस्वार—रंग, चंदन, अंडा, संबंध, पलंग।
    अनुनासिक—हँस, दाँत, आँगन, चाँद, हँसना।
14. रेफ (र्)—कर्म, धर्म, सूर्य
    पदेन (्र)—क्रम, प्रकार, ट्रक
    ऋ (ृ)—वृक्ष, कृषि, अमृत।

अध्याय–3 शब्द–विचार

1. **शब्द**—वर्णों या अक्षरों के सार्थक समूह को शब्द कहते हैं।
2. **शब्द**—वर्णों के उस समूह को शब्द कहा जाता है जिसका कुछ अर्थ हो। जैसे— कमल।
   पद—जब व्याकरण के नियमों के अनुसार शब्द का वाक्य में प्रयोग होता है तो वह 'पद' कहा जाता है।
3. **शब्द के भेद**—शब्द के चार भेद हैं— 1. उत्पत्ति या स्रोत के आधार पर 2. अर्थ के आधार पर 3. व्युत्पत्ति या रचना के आधार पर 4. प्रयोग के आधार पर।
4. **यौगिक शब्द**—वे शब्द जो अनेक सार्थक शब्दों के मेल से बनते हैं, यौगिक शब्द कहलाते हैं। जैसे—पुस्तकालय, जलयान।
   योगरूढ़ शब्द—वे शब्द जो यौगिक तो होते हैं किन्तु सामान्य अर्थ न देकर विशेष अर्थ को प्रकट करते हैं, योगरूढ़ शब्द कहलाते हैं। जैसे— महात्मा, हिमालय।
5. **विकारी**— घोड़ा, मैं, बुरा, खाना
   अविकारी— तेज, और, धीरे, अथवा
6. एक ही अर्थ प्रकट करने वाले शब्दों को एकार्थी शब्द कहते हैं।
7. (क) ✓, (ख) ✗, (ग) ✓, (घ) ✓, (ङ) ✓
8. **श्याम**—श्रीकृष्ण, काला।
   जलज—कमल, शंख।
   पय—दूध, जल।
   तीर—बाण, किनारा।
9.

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
कंटक	**काँटा**	गृह	**घर**
कूप	**कुँआ**	जिह्वा	**जीभ**
स्वर्ण	**सोना**	अश्रु	**आँसू**
नासिका	**नाक**	अस्थि	**हड्डी**
हस्त	**हाथ**	दुग्ध	**दूध**
पुष्प	**पुहुप**	कर्ण	**कान**

10.

हिमालय	योगरूढ़ शब्द	फल	रूढ़ शब्द
विद्यालय	यौगिक शब्द	पशुपालन	यौगिक शब्द
त्रिनेत्र	योगरूढ़ शब्द	गजानन	योगरूढ़ शब्द
समुद्र	रूढ़ शब्द	प्रधानमंत्री	योगरूढ़ शब्द

11.

अफसोस	**खेद**	गैस	**वायु**
पैंट	**पतलून**	जेल	**कारागार**
खबर	**समाचार**	इज्जत	**सम्मान**
डॉक्टर	**चिकित्सक**	ऑफिस	**कार्यालय**

12.

विकारी शब्द	**अविकारी शब्द**
घोड़ा	अथवा
चूहा	जोर

● *खेल-खेल में*

(क)

अंग्रेजी शब्द	**टेबिल, स्टेशन**	अरबी शब्द	**नकल, किताब, साबुन**
देशज शब्द	**डिबिया**	पुर्तगाली शब्द	**सुरंग**
तत्सम शब्द	**पत्र, अश्रु, दिन**	तद्भव शब्द	**खेत**
फारसी शब्द	**आलू, जूता, सरदार, जमीन**	तुर्की शब्द	**कुली**

(ख) कलम, पुस्तकालय, प्रधानाचार्य, मोबाइल, राजस्थान।

अध्याय–4 शब्द संग्रह

1. समान अर्थ देने वाले शब्द पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं। जैसे– नदी, सरिता, वाहिनी, तटिनी।
2. समान अर्थ वाले शब्दों को पर्यायवाची कहा जाता है, जबकि जिन शब्दों के अर्थ एक से अधिक होते हैं, उन्हें अनेकार्थक शब्द कहा जाता है।
3. किसी शब्द का विपरीत या उल्टा अर्थ देने वाला शब्द विलोम शब्द कहलाता है। जैसे– राजा रंक, दिन रात, बड़ा छोटा।
4. कुल और कूल श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द हैं।
5. गाड़ी चलाने वाला व्यक्ति चालक
6. कनक – सोना, धतूरा, (झंडा) नग – नगीना, (बादल), सर्प
   मित्र – दोस्त, (मैना), सखा घन – हथौड़ा, विष्णु, (बादल)
   पद – चरण, (देह), ओहदा पानी – जल, सम्मान, (धतूरा)
   घट – (घाट), कम, घड़ा कर – हाथ, सूँड़, (कसम)
   वर – (ईश्वर), वरदान, दूल्हा हरि – बंदर, (हाथी), विष्णु
7.

नग	–	नगा
कल	–	मशीन
घन	–	हथौड़ा
कर	–	जप
गुण	–	स्वभाव
कनक	–	धतूरा
चपला	–	लक्ष्मी
अज	–	बकरा

8.

	शब्द	अर्थ	वाक्य
(क)	अक्षर	वर्ण	अच्छे सुन्दर अक्षर लिखने हैं।
		ब्रम्ह	परमात्मा को अक्षर भी कहते हैं।
(ख)	पत्र	पत्ता	पेड़ से पत्र गिर रहे हैं।
		चिट्ठी	राहुल ने कक्षाध्यापक को प्रार्थना पत्र लिखा।
(ग)	मंगल	शुभ	प्रातःकाल ईश्वर स्मरण मंगलदायक है।
		सप्ताह का दिन	कल मंगलवार को मैं जयपुर जाऊँगा।
(घ)	कुल	वंश	महाराणा प्रताप वीर कुल में पैदा हुए थे।
		जोड़	हिसाब कुल कितना हुआ ?

9. (क) निसर्ग (ख) नया (ग) उजाला (घ) शिष्यों (ङ) कायर (च) उत्तीर्ण

10. (क) कामचोर (ख) सबला (ग) निरंकुश (घ) पशुपालक (ङ) नभचर (च) लोकेश्वर (छ) देवालय

11. (क) चिर – पुराना – यह भवन चिरकाल से है।
   चीर – वस्त्र – साधु का चीर पुराना हो गया है।
   (ख) पास – निकट – मथुरा के पास गोकुल नहीं वहाँ है।
   पाश – जाल – कबूतर शिकारी के पाश में फँस गए।
   (ग) परिणाम – नतीजा – वह बहुत तेज दौड़ा, परिणाम में श्रेष्ठ धावक का पुरस्कार जीता।
   परिमाण – मात्रा – अनेक बाढ़ पीड़ितों के लिए भोजन का यह परिमाण बहुत कम है।
   (घ) प्रसाद – भगवान का भोग – पुजारी ने सबको प्रसाद बाँटा।
   प्रासाद – महल – राज प्रासाद में स्वयंवर आयोजित हुआ।

12. (क) चित्रकार (ख) परोपकारी (ग) अनंत (घ) दृष्टिहीन।

अध्याय–5 संज्ञा

1. संज्ञा—किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान अथवा भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं।
2. संज्ञा के प्रमुख तीन भेद हैं—व्यक्तिवाचक, जातिवाचक और भाववाचक।
3. किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु, प्राणी अथवा स्थान का बोध कराने वाले संज्ञा शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञा कहलाते हैं, जबकि जातिवाचक संज्ञा शब्द वे कहलाते हैं जो एक ही प्रकार के सभी व्यक्तियों, वस्तुओं या स्थानों का बोध कराते हैं।
4. व्यक्तिवाचक संज्ञा— गीता, यमुना, मथुरा।
   जातिवाचक संज्ञा—मोर, सड़क, सैनिक।
5. संज्ञा के दो अन्य भेद—(क) समुदायवाचक या समूहवाचक संज्ञा (ख) द्रव्यवाचक संज्ञा।
6. भाववाचक संज्ञा—जिस शब्द से किसी प्राणी, वस्तु या स्थान के गुण, दोष या हमारे मन के भाव का बोध हो, वह भाववाचक संज्ञा कहलाता है। उदाहरण—मेहनत, गर्मी, सर्दी।
7. खट्टा – खटाई, पढ़ना – पढ़ाई।
8. (क) दौड़ (ख) व्यक्ति, स्थान (ग) ताजमहल (घ) दूध (ङ) कक्षा
9. **व्यक्तिवाचक संज्ञा**—भारत, पेट, सूर्योदय।
   जातिवाचक संज्ञा—किसान, कृषि, जनसंख्या, खेती, भारतवासियों, बैल, वस्तु।
   भाववाचक संज्ञा—मेहनत, गर्मी, सर्दी, बरसात।

10. (क) सिंचाई (ख) चौड़ाई (ग) हार (घ) पढ़ाई (ङ) मजदूरी
(च) आशा (छ) कौटिल्य (ज) भोगा

11. (क) हवेली (ख) नमस्कार (ग) हिमालय (घ) गंगा (ङ) गायक
(च) कलम (छ) बुध (ज) हिन्दी (झ) राजस्थान (ञ) दिल्ली।

12. [✗], [✓], [✓], [✓], [✓], [✓]

13. विद्यालय, जयपुर, मोदी, खेल का मैदान, सब्जियाँ, पुस्तक, पेंसिल, पोस्ट ऑफिस, कार्यालय, चिड़ियाघर, नेकर, गेंद, शर्ट, जूता, चप्पल, चौपाल, चरागाह आदि।

● *खेल-खेल में*

लड़के – जातिवाचक संज्ञा, सोना – द्रव्यवाचक संज्ञा, इंदिरा गांधी – व्यक्तिवाचक संज्ञा, पेड़ – जातिवाचक संज्ञा, आम – व्यक्तिवाचक संज्ञा, लड़का – जातिवाचक संज्ञा, गाय – जातिवाचक संज्ञा।

अध्याय–6 सर्वनाम

1. **सर्वनाम** – संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे – सचिन तेंदुलकर एकमात्र बल्लेबाज हैं **जिसने** सौ शतक मारे हैं। 2. टिफिन में लड्डू रख दिए हैं **उन्हें** खा लेना।

2. **निश्चयवाचक सर्वनाम** – यह मेरी पेंसिल है। वे मेरे दादा जी हैं। 'यह' तथा 'वे' शब्द किसी निश्चित वस्तु या व्यक्ति की ओर संकेत कर रहे हैं। अतः ये शब्द निश्चयवाचक सर्वनाम हैं।
अतः वे सर्वनाम शब्द, जो किसी निश्चित वस्तु या व्यक्ति की ओर संकेत करते हैं, निश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। इन्हें संकेतवाचक सर्वनाम भी कहते हैं।
अनिश्चयवाचक सर्वनाम – कोई बाहर दरवाजे पर है। मेरी माँ किसी को भूखा नहीं सोने देतीं। 'कोई' तथा 'किसी' शब्द किसी अनिश्चित व्यक्ति या वस्तु की ओर संकेत कर रहे हैं। ये शब्द अनिश्चयवाचक सर्वनाम हैं।
अतः वे सर्वनाम शब्द जो किसी अनिश्चित व्यक्ति या वस्तु की ओर संकेत करते हैं, अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे – कुछ, कुछ न कुछ, कोई, किसी का, किसी को आदि।

3. कौन तथा किसको अनिश्चयवाचक सर्वनाम हैं।
वाक्य प्रयोग – 1. बाहर दरवाजे पर कौन खड़ा है? 2. यह पुस्तक किसको देनी है?

4. **सर्वनाम के भेद** – हिन्दी में सर्वनाम के छः प्रमुख भेद हैं–
1. पुरुषवाचक सर्वनाम, 2. निश्चयवाचक सर्वनाम, 3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम, 4. संबंधवाचक सर्वनाम, 5. प्रश्नवाचक सर्वनाम, 6. निजवाचक सर्वनाम।
पुरुषवाचक सर्वनाम के भी तीन प्रकार हैं— उत्तम पुरुषबोधक, मध्यम पुरुषबोधक, अन्य पुरुषबोधक।

5.

सर्वनाम शब्द	भेद	सर्वनाम शब्द	भेद
(क) कौन	अनिश्चयवाचक	(ख) अपना	पुरुषवाचक
(ग) यह	संबंधवाचक	(घ) मेरा	पुरुषवाचक
(ङ) वह	पुरुषवाचक	(च) आप	पुरुषवाचक
(छ) उनके	पुरुषवाचक		

6. (क) उसकी (ख) किसकी, (ग) इसने, (घ) जिनको, (ङ) तुममें (च) किससे, (छ) उसको।

7. (क) वह
निश्चयवाचक – वह तो राम है।
पुरुषवाचक – राम पढ़ रहा है। वह अवश्य सफल होगा।

(ख) वह

निश्चयवाचक – वह मेरी गाड़ी है।

गुणवाचक – गुलाब अच्छा है। वह गेंदा का है।

(ग) वे

निश्चयवाचक – ये आम खा रहे हैं।

गुणवाचक – आम रसीले हैं। वे पीले रंग के हैं।

8. सर्वनाम शब्द — भेद

सर्वनाम शब्द	भेद
जो	संबंधवाचक
अपने आप	निजवाचक
क्या	प्रश्नवाचक
बहुत कुछ	अनिश्चयवाचक
तुम्हारा	मध्यम पुरुष
यह	अन्य पुरुष वाचक

9.

(क) तुम्हें	राकेश तुम्हें बुला रहा है।
(ख) कोई	दरवाजे पर कोई खड़ा है।
(ग) किसी को	वह किसी को दान दे रहा है।
(घ) जैसा वैसा	जैसा करोगे वैसा भरोगे।
(ङ) जिसने उसे	जिसने पुस्तक दी उसने उसे पैसे लिए।
(च) कुछ न कुछ	जीवन में कुछ न कुछ करते रहना चाहिए।

10. (क) बर्तन में कुछ पड़ा है।

(ख) उसे यहाँ बुलाओ।

(ग) तुम कहाँ जा रहे हो?

(घ) जो परिश्रम करेगा, वह इनाम पाएगा।

(ङ) हमारा घर मथुरा में है।

अध्याय–7 विशेषण

1. **विशेषण**—जो शब्द किसी व्यक्ति, प्राणी या वस्तु के गुण, आकार, मात्रा अथवा संख्या की विशेषता बताते हैं; वे सभी विशेषण शब्द कहलाते हैं।
2. **विशेषण**—वे शब्द जो किसी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, **विशेषण** शब्द कहलाते हैं एवं जिन शब्दों की विशेषता बताई जाती है, उन्हें **विशेष्य** कहते हैं।
3. **सर्वनाम**—संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे– यह, वह, वे, ये आदि। उदाहरण– 1. यह घूमने गया। 2. वह फल है। 3. वे गायिका हैं।
   सार्वनामिक विशेषण—सर्वनाम शब्द संज्ञा से पहले आकर उसकी विशेषता बताते हैं। जैसे– यह, वह, वे, ये आदि। उदाहरण– 1. यह लड़का घूमने गया। 2. वह फल मीठा है। 3. ये लड़कियाँ गायिका हैं।
4. **संख्यावाचक विशेषण**—संज्ञा या सर्वनाम की निश्चित/अनिश्चित संख्या का ज्ञान होता है। उदाहरण–1. वह दस पेंसिल चाहता है। (निश्चित संख्यावाचक) 2. वह मेले से बहुत सारी पुस्तकें खरीद लाया। (अनिश्चित संख्यावाचक)

परिमाणवाचक विशेषण—संज्ञा या सर्वनाम की निश्चित/अनिश्चित नाप-तोल का ज्ञान होता है। उदाहरण— 1. यह दस कुंतल गेहूँ गाड़ी पर ले गया। (निश्चित परिमाणवाचक) 2. नैनी का गला कई किलोमीटर लम्बा है। (अनिश्चित परिमाणवाचक)

5. (क) विशेषण शब्द — हरा-भरा भेद — गुणवाचक विशेषण
(ख) विशेषण शब्द — कुछ भेद — अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण
(ग) विशेषण शब्द — दो किलोग्राम भेद — निश्चित परिमाण वाचक विशेषण
(घ) विशेषण शब्द — सौ ग्राम भेद — निश्चित परिमाण वाचक विशेषण
(ङ) विशेषण शब्द — कई किलोमीटर भेद — अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण
(च) विशेषण शब्द — बहुत सा भेद — अनिश्चित परिमाण वाचक विशेषण

6.

विशेषण	**विशेष्य**	**विशेषण**	**विशेष्य**
ऊँची	दीवार	लाल	झंडा
दो	किताबें	बाहरी	डिब्बा
लड़ाकू	बालक	खट्टा	नींबू
सुगंधित	पुष्प		

7.

		भेद	**वाक्य**
(क)	कुछ	अनिश्चित संख्यावाचक	कुछ छात्र पढ़ रहे हैं।
(ख)	प्रथम	निश्चित संख्यावाचक	राष्ट्रपति भारत के प्रथम नागरिक हैं।
(ग)	थोड़े से	अनिश्चित संख्यावाचक	थोड़े से पक्षी उड़ रहे हैं।
(घ)	दयालु	गुणवाचक	भगवान परम दयालु हैं।
(ङ)	पर्याप्त	अनिश्चित परिमाणवाचक	उसके पास पर्याप्त दूध है।
(च)	पाँच लीटर	निश्चित परिमाणवाचक	सुनयना पाँच लीटर घी लाई।

8.

		उत्तरावस्था	**उत्तमावस्था**
(क)	उच्च	उच्चतर	उच्चतम
(ख)	अधिक	अधिकतर	अधिकतम
(ग)	दीर्घ	दीर्घतर	दीर्घतम
(घ)	मधुर	मधुरतर	मधुरतम
(ङ)	सुंदर	सुंदरतर	सुंदरतम
(च)	श्रेष्ठ	श्रेष्ठतर	श्रेष्ठतम

9.

(क)	बाग	हरा-भरा बाग	लाल बाग
(ख)	पक्षी	सफेद पक्षी	काला पक्षी
(ग)	पहाड़	ऊँचा पहाड़	बर्फीला पहाड़
(घ)	धर्म	धार्मिक व्यक्ति	धर्म स्थान
(ङ)	संसार	संसारी लोग	सांसारिक व्यवहार
(च)	प्रस्ताव	प्रस्तावित कथन	प्रस्तावित योजना

10.

(क)	अर्थ	सरल अर्थ	(ख)	गाना	मधुर गाना
(ग)	किताब	मोटी किताब	(घ)	सोना	कड़वा पानी सोना

(ङ)	मान	बहुमान	(च)	विज्ञान	भौतिक विज्ञान
(छ)	पालना	छोटा पालना	(ज)	अपना	अपना घर

11. (क) ऐतिहासिक (ख) अपराधी (ग) भीतरी (घ) भारतीय (ङ) सही

अध्याय–8 क्रिया

1. **क्रिया**— किसी कार्य के होने या किए जाने का संकेत देने वाले शब्द क्रिया कहलाते हैं। जैसे—बच्चे खेल रहे हैं।
2. **सकर्मक क्रिया**—
   जिस वाक्य में क्रिया का सीधा प्रभाव कर्म पर पड़ता है उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। आज हम सब घर को जाएँगे। बालिका ने फूलों की माला बनाई।
   यहाँ जाएँगे तथा बनाई का प्रभाव क्रमशः 'घर', 'फूलों की माला' पर पड़ रहा है। 'घर' तथा 'फूलों की माला' कर्म शब्द हैं।
   इन वाक्यों में क्रिया के साथ कर्म उपस्थित है। अतः ये सकर्मक क्रिया हैं क्या अथवा किसको शब्दों से बने प्रश्नों का स्पष्ट उत्तर मिलने पर वाक्य में सकर्मक क्रिया होती है।
3. **प्रेरणार्थक क्रिया**—जब कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी दूसरे से करवाये, तब वह क्रिया प्रेरणार्थक क्रिया कहलाती है। जैसे—रमेश ने मोहन से पत्र **लिखवाया** रहीम ने करीम से श्याम को पुस्तक **दिलवाई**।
4. **नामधातु क्रिया**—जो क्रियाएँ संज्ञा या विशेषण शब्दों से बनती हैं, वे **नामधातु क्रिया** कहलाती हैं। जैसे— राम शरमाता है। तोता बहुत बतियाता है।
5. **पूर्वकालिक क्रिया के वाक्य**—(i) वह खाना खाकर सो गया।
   (ii) वह खेलकर घर आ गया।
   (iii) वह पढ़कर स्कूल चला गया।
6. काल—क्रिया के जिस रूप से कार्य करने या होने के समय का ज्ञान प्राप्त हो, उसे काल कहते हैं। काल के निम्नलिखित तीन भेद होते हैं—
   वर्तमान काल, भूतकाल, भविष्यत काल।
7. भूतकाल—तनुजा ने कपड़े धो लिए।
   वर्तमान काल—मंदिर में भक्त कीर्तन कर रहे हैं।
   भविष्यत् काल—भुवनेश थोड़ी देर में विद्यालय जाएगा।
8.

	क्रिया रूप	**प्रत्यय**	**वाक्य**
(क)	पढ़	आई	राम पढ़ाई कर रहा है।
(ख)	गा	ता	वह गीत गाता है।
(ग)	लगा	या	मोहन ने धाक लगाया।
(घ)	चमक	ता	सूरज चमकता है।
(ङ)	सो	ता	राम सोता है।
(च)	बरस	ता	बादल जोर से बरसता है।
(छ)	तैर	ता	शेर सिंह नदी में तैरता है।

9.

	कर्ता	**कर्म**	**क्रिया**
(क)	मोहन ने	हलवा	खाया
(ख)	मैं	विद्यालय	जाऊँगा

(ग)	हम सब	पेड़ पर	चढ़ गए
(घ)	गाय	घास	नहीं खा रही है
(ङ)	मुझसे	पत्र	लिखा नहीं जा रहा था
(च)	अपना	सामान नीचे	रख दीजिए।

10. (क) बरस रहा है। — सकर्मक क्रिया
  (ख) रहे हैं। — अकर्मक क्रिया
  (ग) गिर गया — सकर्मक क्रिया
  (घ) बोता है — सकर्मक क्रिया
  (ङ) दी — सकर्मक क्रिया
  (च) करते हैं — सकर्मक क्रिया

11. (क) पढ़ना, (ख) भागना (ग) उसकी (घ) कूदना, (ङ) सींच, (च) चिल्लाओ।

12. ठोकर ठुकराना, गाली गलियाना, शरम शरमाना, धक्का धकियाना, फुसफुस फुसफुसाना, जूता जुतियाना, दौड़ दौड़ना, कूद कूदना, लँगड़ा लँगड़ाना, बात बतियाना, अपना अपनाना, चक्कर चकराना, हाथ हथियाना, लात लतियाना।

13. (क) बैठकर (ख) कूद (ग) टकराई (घ) ले गए (ङ) पढ़ेंगे (च) दौड़ना (छ) आ गए (ज) होगी।

14. (क) चुका था भूतकाल (ख) रहता है वर्तमान काल (ग) होगी भविष्यत् काल (घ) रहा था भूतकाल (ङ) गए हैं वर्तमान काल (च) गिराए भूतकाल।

15. (क) उसके हाथ से घड़ा गिर गया।
  (ख) विराट ने पाँच गेंदों पर बीस रन बनाए।
  (ग) लड़के का पैर वहीं फँस गया।
  (घ) मुझे वहाँ नहीं जाना है।
  (ङ) चन्द्रमा सदा रात को चमकता है।
  (च) हम यह दूध नहीं पिएँगे।
  (छ) वह अगले सोमवार को घर जाएगा।

16. (क) वर्तमान काल – चौकीदार घर जा रहा है।
  भविष्यत्काल – चौकीदार घर जाएगा।
  (ख) भूतकाल – बच्चे आम खा रहे थे।
  भविष्यत्काल – बच्चे आम खाएँगे।
  (ग) वर्तमान काल – पुष्पा पत्र लिख रही है।
  भूतकाल – पुष्पा पत्र लिख रही थी।

अध्याय–9 अव्यय

1. **अव्यय**—जिन शब्दों के रूप लिंग, वचन, कारक आदि के साथ नहीं बदलते, उनको अव्यय या अविकारी शब्द कहा जाता है।
2. **अव्यय के भेद**—अव्यय के चार भेद हैं— क्रिया विशेषण, संबंध बोधक, समुच्चय बोधक, विस्मयादिबोधक।
3. **क्रिया विशेषण**—जो अव्यय शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं, उन्हें क्रिया विशेषण कहते हैं।

4. **कालवाचक क्रिया विशेषण**—जो अव्यय शब्द क्रिया के होने का काल (समय) बताते हैं, उनको कालवाचक क्रिया विशेषण कहा जाता है।
5. **अंतर**—वे शब्द जो किसी संज्ञा या सर्वनाम शब्द की विशेषता बताते हैं, विशेषण कहे जाते हैं, जबकि जो अव्यय शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं, उन्हें क्रिया विशेषण कहते हैं।
6. **संबंधबोधक अव्यय**—जो अव्यय शब्द संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के साथ आकर उनका वाक्य के अन्य शब्दों से संबंध बताते हैं, उनको संबंधबोधक अव्यय कहा जाता है। उदाहरण—विद्यालय के सामने सुंदर वाटिका है। 'के सामने' शब्द संज्ञा या सर्वनाम का संबंध वाक्य के किसी अन्य शब्द से जोड़ रहे हैं। ऐसे शब्दों को संबंधबोधक कहा जाता है।
7. (क) धीरे से – रीतिवाचक क्रिया विशेषण
   (ख) कब – कालवाचक क्रिया विशेषण
   (ग) अचानक – रीतिवाचक क्रिया विशेषण
   (घ) बहुत – परिमाणवाचक क्रिया विशेषण
   (ङ) प्रतिदिन – कालवाचक क्रिया विशेषण
   (च) पास – स्थानवाचक क्रिया विशेषण
8. (क) नियमपूर्वक (ख) कम (ग) इधर-उधर (घ) भीतर (ङ) परसों
9. (क) हल से (ख) पकड़ कर (ग) दो बजे (घ) ऊपर (ङ) के पास (च) के मारे (छ) जितना उतना।
10. (क) राम और भरत राजा दशरथ के पुत्र थे।
   (ख) वह प्रथम आया, **क्योंकि** वह तेज दौड़ा।
   (ग) मेरा घूमने का मन है **परंतु** कल परीक्षा है।
   (घ) आज लगातार बारिश हो रही है **इसलिए** विद्यालय का अवकाश है।
   (ङ) कार **अथवा** ट्रक ही इस रास्ते पर चलते हैं।
   (च) हमने बहुत मेहनत की अतः हमें सफलता मिलेगी।
   (छ) सुरेश ने बहुत समझाया **लेकिन** नीतू नहीं मानी।
11. (क) बाप! यह क्या हो गया?
   (ख) अरे! तुम गए नहीं।
   (ग) छिः! कितनी गंदगी फैलाई हुई है तुमने।
   (घ) अहा! यह तो बहुत स्वादिष्ट है।
   (ङ) वाह! क्या सुंदर दृश्य है।
   (च) ओह! मैं भूल गया।
   (छ) बचो! आगे से कार आ रही है।
12. (क) शोक (ख) पीड़ा (ग) भय (घ) आश्चर्य (ङ) आशीर्वाद (च) चेतावनी (छ) घृणा (ज) स्वीकृति।

अध्याय–10 उपसर्ग तथा प्रत्यय

1. जो शब्दांश किसी शब्द के पूर्व जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन करके कुछ विशेषता लाते हैं, उपसर्ग कहलाते हैं।
2. हिन्दी में चार प्रकार के उपसर्ग होते हैं— 1. संस्कृत उपसर्ग, 2. उर्दू उपसर्ग, 3. हिन्दी उपसर्ग, 4. संस्कृत के अव्यय।
3. प्रत्यय— वे शब्दांश जो शब्द के अंत में जुड़कर उसके अर्थ में विशेषता या परिवर्तन ला देते हैं, प्रत्यय कहलाते हैं।
4. प्रत्यय के मुख्यतः दो भेद हैं— 1. कृत् प्रत्यय, 2. तद्धित प्रत्यय।

5.

शब्द	उपसर्ग	नया शब्द	भेद (उपसर्ग)
देशी	स्व	स्वदेशी	हिन्दी उपसर्ग
पता	ला	लापता	उर्दू उपसर्ग
बोली	अन	अनबोली	हिन्दी उपसर्ग
शासन	अनु	अनुशासन	हिन्दी उपसर्ग
जय	परा	पराजय	हिन्दी उपसर्ग
लोक	पर	परलोक	संस्कृत उपसर्ग
मान	अप	अपमान	हिन्दी उपसर्ग

6.

शब्द	उपसर्ग	शब्द	उपसर्ग
निपुण	नि	अमान्य	अ
अत्याचार	अति	अज्ञान	अ
कमज़ोर	कम	प्रताप	प्र
सहपाठी	सह	निबंध	नि
बाइज़्ज़त	बा	परिवहन	परि
समुचित	सम	अप्रसन्नता	अप्र

7.

शब्द	प्रत्यय	मूल शब्द	शब्द	प्रत्यय	मूल शब्द
भुलक्कड़	अक्कड़	भूल	दयालु	आलु	दया
लड़ाका	आका	लड़	लड़ाकू	आकू	लड़
लुटेरा	एरा	लूट	चढ़ावा	आवा	चढ़
बोली	ई	बोल	कृपालु	आलु	कृपा

8.

आलु	दयालु	कृपालु	आहट	घबराहट	खिलखिलाहट
हार	पालनहार	सृजनहार	एरा	सँपेरा	ममेरा
तम	निकटतम	दीर्घतम	आवट	लिखावट	दिखावट
अक	बैठक	बंधक	आन	उठान	लदान

9.

दिख	+	आवट	=	दिखावट	अच्छा	+	ई	=	अच्छाई
हँस	+	ना	=	हँसना	लोहा	+	आर	=	लोहार
लड़	+	आई	=	लड़ाई	मोटा	+	पन	=	मोटापन
भूल	+	आ	=	भूला	चोर	+	ई	=	चोरी
फूल	+	दान	=	फूलदान	चर	+	आ	=	चारा

खेल-खेल में

अध्याय–11 कारक

1. कारक – जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम का संबंध वाक्य में प्रयुक्त क्रिया से जोड़ते हैं, कारक कहलाते हैं।
2. कारक के भेद – हिन्दी में कारक के आठ भेद हैं – 1. कर्ता कारक, 2. कर्मकारक 3. करण कारक, 4. संप्रदान कारक, 5. अपादान कारक, 6. संबंध कारक, 7. अधिकरण कारक, 8. संबोधन कारक।
3. करण कारक – जिस कारक चिह्न से कर्ता द्वारा किए गये कार्य करने के साधन ज्ञात हों, उसे करण कारक कहते हैं। जैसे – रमेश कार से जयपुर जा रहा है।
   अपादान कारक – जिस विभक्ति चिह्न से संज्ञा या सर्वनाम से अलगाव या तुलना होने का बोध हो, उसे अपादान कारक कहते हैं। जैसे – राम कृष्ण से लम्बे हैं।
4. (क) टेबल पर पुस्तकें किसने रखी हैं? (अधिकरण कारक)
   (ख) हे ईश्वर! ये आपने क्या कर दिया? (संबोधन कारक)
   (ग) सुमन ने माँ के लिए साड़ी खरीदी। (संप्रदान कारक)
   (घ) मोहन का बैग कहीं खो गया है। (संबंध कारक)
   (ङ) मोहन को बहुत तेज बुखार है। (कर्म कारक)
   (च) रवि काला होते हुए भी गोरों से अधिक निराला है। (करण कारक)
   (छ) मुझ से यह काम नहीं हो पा रहा है। (करण कारक)
5.

कारक	**विभक्ति चिह्न**
संप्रदान	को, के लिए
संबोधन	हे! अरे!
करण	से, के द्वारा
कर्ता	ने
सम्बन्ध	का, की, के, रा, री, रे, ना, नी, ने
अपादान	से
अधिकरण	पर, में

6. (क) [✗], (ख) [✓], (ग) [✓], (घ) [✓], (ङ) [✓]
7.

(क)	हे!	हे! प्रभु रक्षा कीजिए।
(ख)	के लिए	मोहन रमेश के लिए पुस्तक लाया है।
(ग)	में	मोहन कक्षा छह में पढ़ता है।
(घ)	से	पेड़ से पत्ता झड़ गया।
(ङ)	ने	राम ने रावण को मारा।
(च)	की	यह राम की कार है।
(छ)	को	पिता ने पुत्र को शाबाशी दी।

8.

कारक चिह्न	सम्बन्धित कारक
के लिए	संप्रदान कारक
में	अधिकरण कारक
का	संबंध कारक
ने	कर्ता कारक
पर	अधिकरण कारक
से	करण कारक

अध्याय–12 संधि एवं समास

1. **संधि—** निकटवर्ती वर्णों अथवा स्वरों के मेल से होने वाले सार्थक परिवर्तन को संधि कहते हैं।
2. संधि तीन प्रकार की होती हैं—

   (i) स्वर संधि— दो स्वरों के मेल से होने वाले परिवर्तन को स्वर संधि कहते हैं। उदाहरण— गिरि + ईश (ई + ई = ई) गिरीश।

   (ii) व्यंजन संधि— जब किसी व्यंजन का किसी स्वर अथवा व्यंजन से मेल होकर सार्थक परिवर्तन हो जाए, तो उसे व्यंजन संधि कहते हैं। उदाहरण— दिक् + गज = दिग्गज।

   (iii) विसर्ग संधि — विसर्ग के साथ स्वर या व्यंजन के मेल से होने वाले सार्थक परिवर्तन को विसर्ग संधि कहते हैं। उदाहरण— अधः + गति = अधोगति।
3. **स्वर संधि के उदाहरण—** दीप + अवली = दीपावली, राजा + इंद्र = राजेंद्र।

   व्यंजन संधि के उदाहरण— जगत् + ईश = जगदीश। दिक् + अंबर = दिगंबर।
4.

दीर्घ संधि	नर	+	अधीन	=	नराधीन।	स्व	+	अर्थ	=	स्वार्थ।
गुणसंधि	हित	+	उपदेश	=	हितोपदेश।	राजा	+	इन्द्र	=	राजेन्द्र।
वृद्धि संधि	एक	+	एक	=	एकैक ।	पुत्र	+	ऐषणा	=	पुत्रैषणा।
यण संधि	यदि	+	अपि	=	यद्यपि ।	अति	+	अधिक	=	अत्यधिक।
अयादि संधि	ने	+	अन	=	नयन ।	नौ	+	अन	=	नयन।

5. **संधि विच्छेद**

   दुः + चल, निः + रोग, जगत् + ईश, सुस्वागत + आगमन, नौ + इक नाविक महा + उत्सव
6. **समास—**दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से निर्मित सार्थक शब्द समास कहलाता है।
7.

1.	कर्मधारय समास	कमलनयन	कमल के समान नयन
	बहुव्रीहि समास		कमल जैसे नयन हैं जिसके अर्थात् विष्णु
2.	कर्मधारय समास	घनश्याम	घन के समान श्याम (काला)
	बहुव्रीहि समास		घन के जैसा श्याम है जिसका अर्थात् श्रीकृष्ण

8. **समास के भेद—**हिंदी में समास के छह भेद हैं— 1. अव्ययीभाव समास 2. तत्पुरुष समास 3. कर्मधारय समास 4. द्विगु समास 5. द्वंद्व समास 6. बहुव्रीहि समास।
9. **कर्मधारय समास एवं बहुव्रीहि समास में अंतर—**वह समास जिसका पूर्व पद विशेषण तथा उत्तर पद विशेष्य हो, कर्मधारय समास कहलाता है। जैसे— महाराजा = महान है जो राजा। जबकि जिस समास के पूर्व पद एवं उत्तर पद दोनों ही गौण हों, उनके स्थान पर कोई अन्य पद प्रधान हो वह बहुव्रीहि समास कहलाता है। जैसे— लंबोदर—लंबा उदर—लंबा है उदर जिसका अर्थात् गणेश।
10. **द्विगु समास—** जिस समास में पूर्व पद संख्यावाची हो, उसे द्विगु समास कहते हैं। इसमें समूह का बोध होता है।

    जैसे— दोपहर — दो + पहर दो पहरों का समूह

    पंचमढ़ी— पाँच + मढ़ी पाँच मढ़ियों का समूह

    बहुव्रीहि समास—जिस समास में पूर्व पद एवं उत्तर पद दोनों ही गौण हों और उनके स्थान पर अन्य कोई पद प्रधान हो, वह बहुव्रीहि समास कहलाता है।

	पूर्व पद	उत्तर पद	समास विग्रह
जैसे– लंबोदर	लंबा	उदर	लंबा है उदर (पेट) जिसका अर्थात् गणेश।

11.

	समास	समास-विग्रह	भेद
(क)	कपोड़पति	करोड़ों का पति	तत्पुरुष समास
(ख)	पंचतत्व	पंच तत्व	द्विगु समास
(ग)	चतुर्भुज	चार हैं जिसकी भुजाएँ अर्थात् विष्णु	बहुव्रीहि समास
(घ)	दिन-रात	दिन और रात	द्वन्द्व समास
(ङ)	महादेव	महान है जो देव अर्थात् शिव	बहुव्रीहि समास
(च)	हाथों हाथ	हाथों ही हाथों में	अव्ययी भाव समास

12.

	समास विग्रह	समास	समास का भेद
(क)	शक्ति के अनुसार	यथाशक्ति	अव्ययी भाव समास
(ख)	महान है जो आत्मा	महात्मा	बहुव्रीहि समास
(ग)	लंबा है उदर जिसका अर्थात् गणेश	लंबोदर	बहुव्रीहि समास
(घ)	कमल के समान चरण	चरण कमल	कर्मधारय समास
(ङ)	गुण तथा दोष	गुण-दोष	द्वन्द्व समास
(च)	आठ आनों का समूह	अठन्नी	द्विगु समास

- ***खेल-खेल में***

1.

महा	+	आत्मा	=	महात्मा	दीर्घ संधि
सूर्य	+	उदय	=	सूर्योदय	गुण संधि
ने	+	अन	=	नयन	अयादि संधि
विद्या	+	आलय	=	विद्यालय	दीर्घ संधि

2. **अव्ययीभाव**– यथाशक्ति आजन्म। **तत्पुरुष**– गृह प्रवेश, पंकज, घुड़दौड़।
कर्मधारय– महादेव। **द्विगु**– त्रिनेत्र, दोपहर, त्रिभुज, चतुर्मास, शताब्दी।
द्वंद्व– भाई-बहिन, रात-दिन। **बहुव्रीहि**– महादेव, पुरुषोत्तम।

अध्याय–13 लिंग तथा वचन

1. **लिंग**– वे शब्द रूप जो प्रयोग में पुरुष अथवा स्त्री जाति का बोध कराते हैं, लिंग कहलाते हैं।
2. **लिंग की पहचान–पुल्लिंग**– जिन शब्दों में आ, आव, पा, न, क आदि प्रत्यय जुड़े हों वे सामान्यतः पुल्लिंग होते हैं। सभी पहाड़ों, वृक्षों, दिनों, ग्रहों के नाम सामान्यतः पुल्लिंग होते हैं, जैसे– हिमालय, आम, रविवार, शुक्र आदि।

अनाजों के नाम–	गेहूँ, चना, चावल आदि।
सागर, महासागरों के नाम–	काला सागर, हिन्द महासागर आदि।
रत्नों के नाम–	मूँगा, हीरा आदि।
कुछ धातुओं का नाम–	सोना, ताँबा आदि।
शरीर के कुछ अंग–	मुँह, दाँत, कान आदि।

यदि शब्दों में खाना, वाला, दान तथा ऐरा आदि प्रत्यय का प्रयोग हो तो– जैसे– दवाखाना, पानवाला, पीकदान, चचेरा, फुफेरा आदि।

स्त्रीलिंग– जिन शब्दों के अंत में इया, ई, आवट, आहट, ता, आई आदि प्रत्यय हों तो वे शब्द स्त्रीलिंग कहलाते हैं।

जैसे– ई — साड़ी, चिन्दी, बिन्दी   आवट — लिखावट, सजावट

आहट — मुस्कुराहट, घबराहट   ता — निजता, प्रभुता।

इया — बंदरिया, चुहिया   आई — लड़ाई, मिठाई।

नदियों के नाम — गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र आदि।

भाषा एवं बोलियों के नाम — अवधी, खड़ी बोली, हिन्दी।

शरीर के कुछ अंग — नाक, आँख, जीभ आदि।

कुछ समूहवाचक शब्द — पुलिस, भीड़, मंडली, सेना, सभा आदि।

4. पाँच सदैव स्त्रीलिंग शब्द– हिन्दी, मिठास, माला, पूर्णिमा, पंक्ति।

3. वचन के मुख्यतः दो भेद हैं– 1. एकवचन, 2. बहुवचन।

1. एकवचन– आदमी ने टोपी पहन रखी है। पक्षी पेड़ पर बैठा है।
'आदमी, टोपी' तथा 'पक्षी, पेड़' शब्द किसी एक वस्तु या प्राणी की जानकारी दे रहे हैं। ऐसे शब्द एकवचन शब्द हैं। अतः वे शब्द जो किसी वस्तु या प्राणी की संख्या में एक होने का बोध कराते हैं, एकवचन कहलाते हैं।

2. बहुवचन– सभी आदमियों ने टोपियाँ पहन रखी हैं। पक्षियों का झुंड पेड़ पर बैठा है। 'आदमियों, टोपियों', 'पक्षियों' शब्द एक से अधिक होने की जानकारी दे रहे हैं। अतः ये शब्द अनेक अर्थात् बहुवचन हैं।
अतः वे शब्द जो किसी वस्तु, स्थान या व्यक्ति की संख्या में एक से अधिक होने का बोध कराते हैं, बहुवचन कहलाते हैं।

5. **स्त्रीलिंग के नियम**– 1. अकारान्त पुल्लिंग शब्दों को आकारान्त कर देने से वे स्त्रीलिंग हो जाते हैं। जैसे– छात्र, छात्रा।

2. अकारान्त एवं आकारान्त शब्दों को ईकारान्त कर देने से वे स्त्रीलिंग हो जाते हैं। जैसे– लड़का, लड़की, नर, नारी।

पुल्लिंग के नियम– 1. जिन शब्दों के अन्त में आ, पा, वा, पन लगा है, वे प्रायः पुल्लिंग होते हैं। जैसे– पान, दाना।

2. सभी पहाड़ों, वृक्षों, दिनों, ग्रहों के नाम सामान्यतः पुल्लिंग होते हैं। जैसे– गेहूँ, सागर, सोना आदि।

6. सदैव पुल्लिंग– बाल, चित्र, पैसा, तीरकमान।
सदैव स्त्रीलिंग– जीभ, लड़ाई, मेज, मंडली, कुर्सी, कलम, घबराहट।

7. (क) **अभिमानिनी** औरत से कोई बात नहीं करना चाहता।
(ख) **धोबिन ने** आज कपड़े नहीं दिये थे।
(ग) **प्रधानाचार्या** पद की गरिमा के अनुकूल बात करती हैं।
(घ) **गायिका** का गायन कमाल का था।
(ङ) **कवयित्री** की बात से श्रोता मंत्रमुग्ध हो गए।
(च) शेर जंगल में घूम रहा है।

8.

	शब्द	**लिंगभेद**	**वाक्य**
(क)	हवन	पुल्लिंग	यज्ञशाला में हवन हो रहा है।
(ख)	चाय	स्त्रीलिंग	चाय पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।
(ग)	बस्ता	पुल्लिंग	मेरा बस्ता किधर रखा है।
(घ)	तम्बाकू	स्त्रीलिंग	तम्बाकू इधर रख दो।
(ङ)	कलम	स्त्रीलिंग	रमेश की कलम चोरी हो गई।
(च)	गिलास	पुल्लिंग	एक गिलास दूध पी लो।
(छ)	सिनेमा	पुल्लिंग	कोरोना के कारण आजकल सभी सिनेमा हाल बंद हैं।

(ज) बस स्त्रीलिंग स्कूल की बस खराब हो गई।

(झ) गृहकार्य पुल्लिंग आज मैंने गृह कार्य पूरा कर लिया है।

(ञ) सड़क स्त्रीलिंग यह सड़क जयपुर को जाती है।

9. (क) वीरांगना, (ग) कवयित्री, (ङ) आचार्या, (छ) स्वामिनी, (झ) [illegible] (ट) चिड़िया/चिड़ी,
(ख) ऊँटनी, (घ) विदुषी, (ज) बेटी, (ञ) बिलौटा/नर बिल्ली, (ठ) मादा भालू, (ड) इंद्राणी।

10. [✓], [✗], [✗], [✓], [✓], [✗]

11. (क) ग्वालिन (ख) छात्र (ग) वीरांगना (घ) सड़क (ङ) कवि (च) चिड़िया

12. चिड़ियाँ, माताएँ, नदियाँ, मालाएँ, गायिकाएँ, शत्रु, मित्र, बोतलें, आँखें, पर्वत।

13. (क) बच्चा पतंग उड़ा रहा है।
(ख) सैनिकों ने शत्रुओं पर आक्रमण किया।
(ग) रेगिस्तान में ऊँट पर सवारी की जाती है।
(घ) क्यारियों में मिर्चों के पौधे लग रहे हैं।
(ङ) चोर ने व्यापारी का वाहन चुरा लिया।

14. (क) आँधी आ रही है।
(ख) सूरज पूर्व दिशा में उदय हो रहा है।
(ग) गायक मधुर स्वर में गा रहा है।
(घ) उपवन में अनेक वृक्षों पर चिड़ियाँ बैठी हैं।
(ङ) रोगी के प्राण निकल गए।
(च) पिता की आँखों से आँसू टपक रहे हैं।

अध्याय–14 वाक्य–विचार

1. दो या दो से अधिक शब्दों के सार्थक समूह को वाक्य कहते हैं।
2. प्रयोग के आधार पर वाक्य के दो प्रमुख भेद हैं–
(1) **अर्थ के आधार पर**—विधानवाचक वाक्य, निषेधवाचक वाक्य या नकारात्मक वाक्य, प्रश्नवाचक वाक्य, इच्छावाचक वाक्य, संकेतवाचक वाक्य, संदेहवाचक वाक्य, आज्ञावाचक वाक्य, विस्मयवाचक वाक्य।
(2) **संरचना या बनावट के आधार पर**—सरल वाक्य, संयुक्त वाक्य, मिश्र वाक्य।
3. प्रयोग के आधार पर वाक्य के दो अंग हैं–
(क) उद्देश्य (ख) विधेय
4. **संयुक्त वाक्य**—वह वाक्य जिसमें दो या दो से अधिक सरल वाक्य योजकों (और, एवं, तथा, या, अथवा, इसलिए, किन्तु, परन्तु, तो, नहीं, लेकिन, पर इत्यादि) द्वारा जुड़े हों, संयुक्त वाक्य कहलाते हैं।
मिश्र वाक्य—वह वाक्य जिसमें एक वाक्य प्रधान और दूसरा वाक्य आश्रित या गौण हो, मिश्र वाक्य कहलाता है।
5. (क) उद्देश्य — आदिमानव विधेय — अपनी रक्षा के लिए गुफाओं में रहते थे।
(ख) उद्देश्य — राम विधेय — भला रावण से हार मानने वाले थे।
(ग) उद्देश्य — सरकार के विधेय — प्रश्न का क्या आपके पास कोई जवाब नहीं है?
(घ) उद्देश्य — हामिद ने विधेय — चिमटा लिया और कंधे पर रख लिया।
6. (क) तथा (ख) या (ग) अथवा (घ) परंतु

7. (क) वह प्रदर्शनी देखने जा रहा है।
(ख) प्लेटफॉर्म पर चहल-पहल हो रही है।
(ग) पुलिस ने चोर को रंगे हाथ पकड़ लिया।
(घ) बंदर बच्चे के हाथ से मिठाई ले गया।
(ङ) मैं और प्रिया पिताजी के साथ बाजार जाएँगे।

8. (क) रोहित मेरे लिए चॉकलेट लाया।
(ख) चिड़िया उड़ी और वृक्ष पर जा बैठी।
(ग) नासिका परिश्रमी छात्रा है इसलिए उसे पुरस्कार मिला।
(घ) यह वही लड़का है जो कल पार्क में खेल रहा था।

9.

उद्देश्य	विधेय
कबूतर	दाना चुग रहे थे।
प्रधानाचार्य ने	आज विद्यालय में छुट्टी कर दी।
सभी किसान	खेतों को जोत रहे हैं।
यह ट्रेन	इलाहाबाद जाएगी
माँ	कपड़े धो रही है
सूरज	निकल आया है।

अध्याय–15 वाक्य–शुद्धि

1. वाक्य रचना करते समय पदक्रम संबंधी तथा लिंग, वचन, कारक आदि की अशुद्धियाँ हो जाती हैं।
2. वाक्य में उचित क्रम इस प्रकार है– कर्ता, कर्म और क्रिया।
3. लिंग संबंधी अशुद्धि– शोभना जी कुशल अध्यापक हैं।
वचन संबंधी अशुद्धि– पाँच और पाँच दस होता है।
कारक संबंधी अशुद्धि– वह खाने को खाता है।
4. (क) उसे इस बात में क्या लेना-देना है।
(ख) वह पानी पी रहा है।
(ग) भूखे साधु ने भोजन करके मुझे आशीर्वाद दिया।
(घ) वह गलत काम नहीं करें।
(ङ) ये लोग कहाँ से आए हैं।

अध्याय–16 विराम चिह्न

1. राजा दिनभर अकाल पीड़ितों की सहायता करता और राज्य कर्मचारियों के आचरण का पता भी रखता था। एक दिन उसने एक अधिकारी को बुलाया और पूछा–"तुम कितने समय तक कार्य करते हो? मुझे तुम्हारे बारे में सूचना मिली है कि तुम लोगों से सहायता के बदले पैसा लेते हो। अवश्य ही तुम्हारा यह आचरण निंदा योग्य है। तुम्हें उचित दंड मिलेगा।"

2\. (ङ) ' ' इकहरा उद्धरण चिह्न (घ) — योजक चिह्न
(ख) ? प्रश्नवाचक चिह्न (क) " " दुहरा उद्धरण चिह्न
(च) ! विस्मयादिबोधक चिह्न (ग) । पूर्ण विराम
(छ) , अल्प विराम (ज) ० लाघव चिह्न

3\. प्रतीक — अरे उत्कर्ष ! कल जब गुरु जी व्यायाम के बारे में बता रहे थे तो तुम वहाँ पर थे ?
उत्कर्ष — हाँ मित्र ! मैं वहीं पर था।
प्रतीक — तुम्हें क्या समझ में आया ?
उत्कर्ष — यही कि स्वस्थ एवं निरोग रहने के लिए व्यायाम अति आवश्यक है।
प्रतीक — सही कहा तुमने ! मैंने तो गुरु जी के निर्देशानुसार व्यायाम करना शुरू भी कर दिया है।
उत्कर्ष — मैं भी जल्दी ही शुरू करने वाला हूँ।
प्रतीक — शुभ काम करने में देरी मत करो। कल से ही शुरू कर दो।
उत्कर्ष — ठीक कहते हो प्रतीक ! मैं कल से ही शुरू कर देता हूँ।
प्रतीक — शुरुआत में अधिक कसरत मत करना, नहीं तो शरीर में दर्द हो सकता है।
उत्कर्ष — नहीं, जैसा गुरु जी ने बताया है, वैसा ही करूँगा। शुरू में कम बाद में अधिक कसरत करूँगा।

4\. (क) आप सब इस ओर क्यों जा रहे हैं ?
(ख) शाबाश ! तुमने तो कमाल कर दिया।
(ग) तुलसीदास ने लिखा "पराधीन सपनेहु सुख नाहीं"।
(घ) मोहन ने कहा— सोहन को अपना मित्र बना लो।
(ङ) पं. जवाहरलाल नेहरू भारत के प्रथम प्रधानमंत्री थे।

अध्याय–17 मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ

1\. **मुहावरा**— वह वाक्यांश जो सामान्य अर्थ से भिन्न विशिष्ट अर्थ दे, मुहावरा कहलाता है।
2\. **लोकोक्ति**— वे वाक्य या वाक्यांश जो लोगों द्वारा विशेष अर्थ में प्रयुक्त किये जाते हैं, लोकोक्तियाँ कहलाते हैं।
3\. 1. मुहावरे भाषा के प्रभाव को बढ़ाते हैं। उन्हें अर्थवान बनाते हैं।
2. मुहावरे सामान्य से विशिष्ट अर्थ देते हैं, जिससे भाषा रोचक एवं सशक्त बनती है।
3. मुहावरों को परिवर्तित नहीं किया जा सकता है।
4. मुहावरे वाक्य नहीं अपितु वाक्यांश होते हैं।
5. मुहावरों का स्वतंत्र प्रयोग नहीं होता।

लोकोक्ति का अर्थ है— लोक + उक्ति = आम लोगों द्वारा बोली जाने वाली बातचीत।
लोकोक्तियाँ अपने आप में पूर्ण वाक्य होती हैं। इनमें भी मुहावरों की भाँति परिवर्तन नहीं होता है। इनका प्रयोग विशेष उद्देश्य से किया जाता है।

4\.

मुहावरा	**लोकोक्तियाँ**
आँखों का तारा।	थोथा चना बाजे घना।
अक्ल चकराना।	जैसी करनी वैसी भरो।
दाल न गलना।	आ बैल मुझे मार।
घी के दीपक जलाना।	अक्ल बड़ी या भैंस।
मक्खियाँ मारना।	नाच न जाने आँगन टेढ़ा।

5\. (क) **मुँह ताकना** (उम्मीद रखना) – भिखारी घर के सामने खड़ा होकर मकान मालिक का मुँह ताक रहा था।

(ख) **मुँह की खाना** (पराजित होना) – मोहन ने पहलवानों में रमेश से कई बार मुँह की खाई है।

(ग) **पानी-पानी होना** (लज्जित होना) – राम के असभ्य व्यवहार से उसका पिता पानी-पानी हो गया।

(घ) **पीठ दिखाना** (हारकर भाग जाना) – दुश्मन को पीठ दिखाकर भागने की अपेक्षा वहीं मर जाना कहीं अच्छा है।

(ङ) **न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी** (संकट को जड़ से समाप्त कर देना) – स्मार्ट फोन ने बच्चों को बीमार करना शुरू कर दिया है। इससे अच्छा है कि घर पर साधारण फोन ही रखें। न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी।

(च) **कंगाली में आटा गीला** (संकट पर संकट आना) – घर में पैसे का अभाव है और ऊपर से मेहमान और टपक पड़े। ऐसे में कंगाली में आटा गीला होना ही।

(छ) **मान न मान मैं तेरा मेहमान** (जबरदस्ती गले पड़ना) – घर आकर मुझसे विशेष आत्मीयता दिखाने लगा तो मुझे कहना ही पड़ा – यह तो मान न मान मैं तेरा मेहमान वाली बात हो गयी।

(ज) **जिसकी लाठी उसकी भैंस** (शक्तिमान ही विजयी होता है) – कैसा समय आ गया है, चारों ओर जिसकी लाठी उसकी भैंस वाली कहावत चरितार्थ हो रही है।

6\. (क) **थोथा चना बाजे घना** (गुण कम, दिखावा अधिक) – पाँच बार का हाईस्कूल फेल सुधीर इण्टर के छात्रों को पढ़ाने की बात करने लगा तो सबने कहा – थोथा चना बाजे घना।

(ख) **आँखें खुलना** (वास्तविकता का पता चलना) – मोहल्ले के लोगों ने राजू की असलियत बताई तो उसके पिता की आँखें खुल गईं।

(ग) **आपे से बाहर होना** (क्रोधित होना) – गिरीश की लापरवाही देखकर उसके पिता आपे से बाहर हो गये।

(घ) **चोर की दाढ़ी में तिनका** (दोषी व्यक्ति का व्यवहार संदिग्ध होता है) – कलम रवि ने चुराई इसीलिए वह कई दिनों तक विद्यालय नहीं आया। सबने कहा चोर की दाढ़ी में तिनका।

(ङ) **साँप मरे, न लाठी टूटे** (बिना कुछ गँवाए काम का होना) – मैं सोहन को सबक सिखाना चाहता हूँ, परन्तु मेरा नाम नहीं आना चाहिए, कुछ ऐसा हो कि साँप मरे न लाठी टूटे।

(च) **अंधे की लकड़ी होना** (एकमात्र सहारा) – विधवा माँ के लिए उसका इकलौता पुत्र अंधे की लकड़ी के जैसा है।

8\.

(क)	फूला न समाना	अत्यधिक प्रसन्न होना
(ख)	एक पंथ दो काज	दोहरा लाभ
(ग)	नाच न जाने आँगन टेढ़ा	स्वयं की कमी को दूसरे पर मढ़ना
(घ)	उल्लू बनाना	मूर्ख बनाना
(ङ)	खोदा पहाड़ निकली चुहिया	मेहनत ज्यादा फल कम
(च)	ऊँची दुकान फीका पकवान	नाम बड़ा काम छोटा
(छ)	नौ दो ग्यारह होना	भाग जाना

9\. 1. **आँखों से गिर जाना** (सम्मान खो देना) – जिस दिन से गिरीश चोरी में पकड़ा गया है, वह सभी की आँखों से गिर गया है।

2\. **अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना** (अपनी प्रशंसा आप करना) – मुन्ना अपनी प्रशंसा आप ही करता रहता है। एक दिन पीतू ने कहा कि अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना अच्छा नहीं है।

3\. **आँखें चार होना** (एक दूसरे को देखना) – ज्यों ही रमेश की अनामिका से आँखें चार हुईं, वह अपनी सुध बुध खो बैठा।

4\. **आसमान सिर पर उठाना** (बहुत शोर या उपद्रव करना) – अध्यापक के कक्षा से बाहर जाते ही छात्रों ने आसमान सिर पर उठा लिया।

5. **आँखों में धूल झोंकना** (धोखा देना) – मैं तुम्हारी असलियत जान गया हूँ, अब तुम मेरी आँखों में धूल नहीं झोंक सकते हो।

6. **आँखों का तारा होना** (बहुत प्रिय होना) – आजकल बृजेश अपनी आज्ञाकारिता और विनम्रता से माँ-बाप की आँखों का तारा बना हुआ है।

7. **अँगूठा दिखाना** (निर्धारित समय पर इंकार करना) – महिला ने दर्जी को ऐन वक्त पर रुपया देने के नाम पर अँगूठा दिखा दिया।

8. **आँखें बिछाना** (अति उत्साह से स्वागत करना) – विवेकानन्द के (शिकागो) अमेरिका से लौटने पर देशवासियों ने उनके स्वागत में आँखें बिछा दीं।

9. **आँखों में खून उतरना** (अत्यधिक क्रोध आना) – शत्रु को देखते ही उसकी आँखों में खून उतर आया।

10. **अँगुली पर नचाना** (इशारे पर कार्य करना) – शक्तिशाली लोग शक्तिहीनों को अँगुली पर नचा रहे हैं।

11. **अँगुली पकड़कर पहुँचा पकड़ना** (थोड़ा मिलने पर धीरे-धीरे सम्पूर्ण पर अधिकार कर लेना) – बच्चों को इतना मुँह न लगाना चाहिए नहीं तो वे अँगुली पकड़कर पहुँचा पकड़ लेंगे।

12. **एड़ी-चोटी का पसीना एक करना** (बहुत मेहनत करना) – निर्धन व्यक्ति परिवार की उन्नति के लिए एड़ी-चोटी का पसीना एक कर रहे हैं।

13. **कान में तेल डालना** (किसी की बात न सुनना) – मैंने तुमसे कितना कहा कि परिश्रम करो, किन्तु तुमने कान में तेल डाल रखा था।

14. **गाल बजाना** (बढ़-चढ़कर बातें करना) – भाई तुम काम कम करते हो, गाल अधिक बजाते हो।

● *खेल-खेल में*—

1. आँखों का तारा होना।
2. ईद का चाँद होना।
3. अँगूठा दिखाना।
4. अक्ल पर पत्थर पड़ना या अंधे की लाठी।

अध्याय–18 अपठित गद्यांश एवं पद्यांश

(क) **1.** (क) उचित शीर्षक – अनुशासन का महत्त्व।

(ख) दैनिक कार्य, व्यवहार में अनुशासन को अपनाने वाला व्यक्ति अपने जीवन को सफल बना सकता है।

(ग) सारांश – मानव जीवन में अनुशासन का विशेष महत्त्व है। अनुशासन अपनाने वाले व्यक्ति में अनेक सद्गुण स्वतः ही आ जाते हैं। इन सद्गुणों और उच्च आदर्शों के बल पर अनुशासित व्यक्ति अपना जीवन सुखी व सफल बना लेता है।

2. (क) उचित शीर्षक – वीरभूमि राजस्थान।

(ख) यहाँ समय-समय पर ऐसे वीर पैदा हुए हैं, जिन्होंने अपने रक्त से राजस्थान का गौरव बढ़ाया है। यहाँ पैदा हुए वीर पुरुषों की एक लंबी शृंखला है, जिन्होंने जन्मभूमि की रक्षा में अपने प्राण न्योछावर किए हैं, इसलिए राजस्थान को वीरों की भूमि कहा जाता है।

(ग) सारांश – राजस्थान की मरुभूमि को वीरों की भूमि कहा जाता है, यहाँ राणा प्रताप जैसे अनेक वीर पैदा हुए हैं जिन्होंने घास की रोटियाँ खाईं, जंगल-जंगल भटके, धरती पर सोए लेकिन जन्मभूमि की स्वाधीनता की रक्षा की। यहाँ पन्ना धाय तथा पद्मिनी जैसी महान नारियाँ हुईं, जिन्होंने राजस्थानी शौर्य में चार चाँद लगाए।

3. (क) उचित शीर्षक – सफलता का मूल मंत्र।

(ख) जो काम करना है, उसे एकाग्रता तथा आत्मीयता से करें, यही जीवन में सफल होने का मूल मंत्र है।

(ग) सारांश – रुचिपूर्वक और एकाग्रता के साथ किया गया कार्य सफलता दिलाता है। कार्य की योजना बनाकर, नियमित दिनचर्या अपनाकर सफलता प्राप्त होती है तथा असफलता के कष्ट से बचा जा सकता है।

4. (क) उचित शीर्षक – स्वस्थ मनोरंजन।

(ख) जो लोग मनोरंजन को बच्चों की चीज मानकर इससे दूर हो जाते हैं, वे मानसिक रोगों के शिकार हो जाते हैं।

(ग) स्वस्थ मनोरंजन से जीवन में प्रसन्नता और उमंग आती है। नई हुई शक्ति प्राप्त होती है और कार्य के लिए उत्साह जागता है। जो लोग मनोरंजन से दूर रहते हैं वे अनेक रोगों का शिकार होकर जीवन के आनंद से वंचित हो जाते हैं।

(ख) 1. (क) उचित शीर्षक – नदी और मनुष्य।

(ख) मनुष्य को भले बुरे की पहचान है, वह ज्ञान से संपन्न है, जबकि नदी ज्ञान शून्य है, उसे अच्छे बुरे की पहचान नहीं है।

(ग) गर्मी में नदी सूखकर एक पतली धारा जैसी दिखाई देती है। वही नदी बरसात में भरकर उछलती, उफनती किनारों को काटती हुए उमग कर बहती है।

2. (क) उचित शीर्षक – मानवता।

(ख) कवि को अपनी मानवता पर बहुत अभिमान है।

(ग) कवि हमको सिखाना चाहता है कि जितना हो सके संसार में तुम्हें प्यार बाँटना चाहिए। तुम स्वयं भी अच्छे से जियो और अन्य को भी जीने दो।

3. (क) उचित शीर्षक – ईश्वर के विभिन्न रूप।

(ख) कवि ने ईश्वर के बारे में अपने बुजुर्गों, अनेक लोगों तथा किताबों से जाना है। कवि ने यह जाना है कि हम सब ईश्वर के ही रूप हैं। हमें आपस में प्यार से रहना चाहिए।

(ग) कवि के अनुसार सभी मनुष्यों में भाई भाई का नाता है क्योंकि सभी ईश्वर के रूप या अंश हैं।

4. (क) उचित शीर्षक – परोपकारी वृक्ष।

(ख) वृक्ष हमें आश्रय, फल, फूल, लकड़ी, औषधि देते हैं, वृक्षों से ही वर्षा होती है, वृक्ष शुद्ध वायु देते हैं, जिससे सभी प्राणी जीवित रहते हैं। अतः वृक्ष हमारे मित्र हैं।

(ग) कवि हमसे कह रहा है कि हमें वृक्षारोपण करना चाहिए, वृक्षों की देखभाल करनी चाहिए तथा इन्हें कटने से बचाना चाहिए।

5. (क) उचित शीर्षक – मिट्टी की अजेयता अथवा मातृभूमि।

(ख) प्रलय से मिट्टी भी नहीं डरती है।

(ग) चक्रवर्ती सम्राटों और जगत को जीतने वालों को मिट्टी ही जन्म देती है।

अध्याय–19 पत्रलेखन

1. **अवकाश के लिए प्रधानाचार्य जी को पत्र**

सेवा में,

श्रीमान प्रधानाचार्य महोदय,

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय

जयपुर (राज.)

महोदय,

विनम्र निवेदन है कि मेरे मामाजी की बेटी का शुभ विवाह दिनांक 20.02.20 को होना निश्चित हुआ है। हम सपरिवार इस विवाह में सम्मिलित होने इंदौर जाएँगे। अतः मुझे दिनांक 18.02.20 से 21.02.20 तक चार दिनों का अवकाश देने की कृपा करें, आपकी अति कृपा होगी।

धन्यवाद!

आपका आज्ञाकारी शिष्य

राकेश गुप्ता

कक्षा 6

दिनांक : 17.02.20

2. **विद्यालय बस को स्टॉप तक भिजवाने के संबंध में प्रार्थना पत्र**

सेवा में

श्रीमान प्रधानाचार्य महोदय

विवेकानंद उच्च माध्यमिक विद्यालय

इंदौर

महोदय,

सविनय निवेदन है कि विद्यालय की बस संख्या 7 हमारी कॉलोनी के निर्धारित बस स्टॉप तक नहीं आती है और बाहर से मुड़कर चली जाती है। इस कारण अनेक छात्र विद्यालय जाने से रह जाते हैं या देर से पहुँचते हैं। अतः आपसे प्रार्थना है कि उक्त बस चालक को निर्धारित बस स्टॉप तक बस ले जाने के लिए आदेशित करें ताकि सभी छात्र सुचारु रूप से विद्यालय जा सकें। आपकी अति कृपा होगी।

सादर, धन्यवाद

आपकी आज्ञाकारी शिष्या

मोहिनी वर्मा

कक्षा 6

3. **विदेश में रह रहे मित्र को पत्र**

अलकापुरी

मथुरा (उ.प्र.)

भारत

दिनांक 20.12.20

प्रिय मित्र, जोसेफ

नमस्ते! कैसे हो? मैं तुम्हें भारत के एक बहुत ही मजेदार त्योहार होली के बारे में इस पत्र के माध्यम से बताने जा रहा हूँ। यह रंगों का त्योहार है, जो हर वर्ष फाल्गुन (फरवरी-मार्च) के महीने में मनाया जाता है।

होली का त्योहार भारत में बहुत उत्साह और उमंग के साथ मनाया जाता है। लोग अपने घरों से बाहर निकलते हैं, एक दूसरे को रंग-गुलाल लगाते हैं। नाचते-गाते हुए त्योहार का आनंद लेते हैं। होली के एक दिन पहले होलिका दहन होता है। यह त्योहार दोस्ती, भाईचारे और एकता का संदेश देता है। मुझे उम्मीद है कि तुम्हें होली के बारे में जानकर अच्छा लगा होगा। अगर तुम कभी अमेरिका से भारत आओ, तो मैं तुम्हें होली के उत्सव में जरूर शामिल करना चाहूँगा।

शेष कुशल। माँ-पिताजी को प्रणाम कहना।

तुम्हारा मित्र

विनय अग्रवाल

4. **जयपुर निवासी मित्र को पत्र**

प्रिय मित्र   दिनांक : 13.09.20

वंश भार्गव

आशा है, सकुशल होंगे।

तुम्हें यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता होगी कि मेरे विद्यालय ने नगरस्तरीय क्रीड़ा प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। वास्तव में ये सब विद्यालय के खिलाड़ियों की कड़ी मेहनत और लगन का ही परिणाम है।

विद्यालय की इस शानदार उपलब्धि पर प्रधानाचार्य महोदय ने भी सभी खिलाड़ियों को सम्मानित किया और उज्ज्वल भविष्य की कामना की। तुम्हें यह जानकर खुशी होगी कि अगली राज्यस्तरीय प्रतियोगिता आपके शहर जयपुर में ही संपन्न होगी। उस समय मेरी आपसे मुलाकात होगी। परिवार में सभी को यथायोग्य अभिवादन कहना।

तुम्हारा मित्र

निगेश शर्मा

5. सेवा में

स्वास्थ्य अधिकारी

नगरनिगम देवास

विषय—सफाई कार्य की समुचित व्यवस्था के संबंध में

मान्य महोदय,

मैं इस पत्र के माध्यम से कृष्णा विहार कॉलोनी की अव्यवस्थित सफाई व्यवस्था की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। कृष्णा विहार कॉलोनी में नगरपालिका के सफाई कर्मचारी समुचित सफाई नहीं करते हैं। लंबे समय तक वे कॉलोनी में नहीं आते। सफाई कर्मचारियों की उदासीनता के कारण कॉलोनी में गंदगी के ढेर लग गए हैं। नालियाँ अवरुद्ध होकर गंदा पानी सड़क पर फैलता रहता है। जो कभी भी महामारी का कारण बन सकता है।

अतः श्रीमानजी से प्रार्थना है कि समुचित कार्यवाही करके कृष्णा विहार की सफाई व्यवस्था को समुचित कराएँ। आपकी अति कृपा होगी।

दिनांक : 17.07.20

धन्यवाद!

प्रार्थी

अर्पित सिरोही

कृष्णा विहार

देवास

अध्याय–20   संवाद लेखन

1. **अपने घरों के आसपास स्वच्छता बनाए रखने पर दो छात्रों में संवाद**

विपिन– अरे मयंक! क्या तुम देख रहे हो कि हमारे मोहल्ले में कितनी गंदगी फैली हुई है।

मयंक– हाँ, विपिन मैं भी देख रहा हूँ। यह बहुत ही गलत है, हमें कुछ करना चाहिए।

विपिन– हाँ, हमें अपने घर के आसपास सफाई रखनी चाहिए, यह हमारी जिम्मेदारी है।

मयंक– बिल्कुल सही बात है। हमें कूड़ा कूड़ेदान में ही डालना चाहिए और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करना चाहिए।

विपिन– और हाँ, हमें अपने घर के आसपास की नालियों और गलियों को भी स्वच्छ रखना चाहिए, इससे बीमारियाँ नहीं फैलेंगी।

मयंक– हमें अपने पड़ोसियों को भी स्वच्छता के महत्व के बारे में बताना चाहिए।

विपिन– ठीक है, हम आज से ही शुरुआत करते हैं। हम अपने घर के आसपास की सफाई करेंगे।

मयंक– यह एक अच्छा विचार है। हम सब मिलकर अपने मोहल्ले को स्वच्छ और सुंदर बना सकते हैं।

2. **हिन्दी के गुरुजी के विषय में दो सहपाठियों के बीच संवाद**

विपुल– क्या बात है, चंद्रेश बहुत प्रसन्न दिखाई दे रहे हो?

चंद्रेश– हाँ भाई, विपुल, मैं अपने अध्यापक मोहित सर से मिलकर आ रहा हूँ।

विपुल– मोहित सर तो हमें हिन्दी पढ़ाते हैं। उनकी पढ़ाने की शैली बहुत अच्छी है।

चंद्रेश– हाँ मित्र, वह हमें बहुत अच्छे से और सरल तरीकों से समझाते हैं।

विपुल– तुम एकदम सही कह रहे हो। हिन्दी के अध्यापक जी हैं ही बहुत अच्छे। उन्होंने मुझे बहुत सारे कठिन शब्दों और व्याकरण को सीखने में बहुत मदद की है।

चंद्रेश– मुझे उनके पढ़ाने का तरीका तो पसंद है ही, लेकिन उनका व्यक्तित्व भी बहुत अच्छा है।

विपुल– सही बात है। मैं भी तुम्हारी इस बात से सहमत हूँ। उन्हीं के आशीर्वाद से मुझे हिन्दी में सबसे अधिक अंक मिले हैं।

चंद्रेश– बहुत बहुत बधाई मित्र।

विपुल– धन्यवाद दोस्त! अब चलते हैं। मैं अपनी माँ को अंक दिखाने जा रहा हूँ।

चंद्रेश– ठीक है।

3. अच्छे संवाद लिखते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना आवश्यक है–

(अ) संवाद दिए गए विषय के अनुरूप होने चाहिए।

(ब) संवाद के प्रारंभ में उचित संबोधन और अभिवादन आदि का प्रयोग होना चाहिए।

(स) संवाद की भाषा पात्रों के अनुरूप और सरल होनी चाहिए।

(द) संवादों में आपसी तारतम्यता बनी रहनी चाहिए।

4. **योग से होने वाले लाभों के बारे में दो छात्रों के बीच संवाद**

वैभव– नमस्ते ब्रजेश! कैसे हो?

ब्रजेश– नमस्ते वैभव! मैं ठीक हूँ तुम कैसे हो?

वैभव– मैं भी ठीक हूँ! सुना है तुम आजकल योग कर रहे हो?

ब्रजेश– हाँ, बिलकुल। मैंने योग करना शुरू करना शुरू कर दिया है, इसके बहुत फायदे हैं।

वैभव– अच्छा, क्या फायदे हैं? मुझे भी बताओ।

ब्रजेश– सबसे पहले तो योग से शरीर लचीला बनता है। मांसपेशियाँ मजबूत होती हैं। फुर्ती आती है।

वैभव– यह तो बहुत अच्छी बात है और क्या लाभ हैं?

ब्रजेश– योग से मानसिक तनाव भी कम होता है, शांति और एकाग्रता बढ़ती है।

वैभव– यह तो बहुत बढ़िया है, मुझे भी योग करना चाहिए।

ब्रजेश– जरूर वैभव! योग से शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य अच्छा होता है।

वैभव– ठीक है, कल सुबह मिलते हैं।

ब्रजेश– हाँ, अवश्य, मैं भी तुम्हारे साथ योग करने के लिए उत्सुक हूँ।

अध्याय–21 कहानी लेखन

1\. **लालची कुत्ता**

एक कुत्ता था। वह लालची था। वह रोज मांस की दुकान पर जाता और मांस का टुकड़ा चुराया करता था। एक दिन दुकानदार ने उसे मांस चुराते देख लिया। वह कुत्ते के पीछे दौड़ा लेकिन कुत्ता भाग गया। कुत्ता भागता हुआ एक नदी के किनारे पहुँचा। नदी में उसे अपनी परछाई दिखी। उसने समझा यह दूसरा कुत्ता है जो मांस का टुकड़ा लिए हुए है। लालची कुत्ते ने सोचा कि यह मांस का टुकड़ा भी मुझे मिल जाए तो बहुत अच्छा हो। यह सोचकर वह परछाई पर झपटा। जैसे ही भौंकने के लिए उसने मुँह खोला, उसके मुँह में लगा मांस का टुकड़ा भी नदी में गिर गया। लालची कुत्ते को भूखा ही रहना पड़ा।

शिक्षा—लालच बुरी बला है।

2\. **कपटी मित्र**

एक जंगल में कौआ और हिरण रहते थे। दोनों पक्के मित्र थे। एक दिन कपटी सियार ने हिरण को देखा। हष्ट-पुष्ट हिरण को देखकर सियार का मन उसका मांस खाने को हुआ। यह सोचकर उसने एक छल किया। वह हिरण के पास गया और मित्रता का प्रस्ताव किया। भोला हिरण कपटी सियार की चिकनी-चुपड़ी बातों में आ गया और उसे मित्र बना लिया। हिरण सियार को लेकर अपने मित्र कौवे के पास गया। कौवे ने सियार को देखकर हिरण से कहा कि तुम्हें बिना पूरा परिचय जाने मित्रता नहीं करनी थी, लेकिन ठीक है, सावधान रहना।

एक दिन सियार ने हिरण से कहा कि मित्र यहाँ से कुछ दूर एक गेहूँ का हरा-भरा लहलहाता खेत है। चलो वहाँ चलकर अपना पेट आराम से भर लेना। हिरण सियार के साथ चल दिया। जैसे ही हिरण खेत में घुसा, किसान द्वारा बिछाए जाल में फँस गया। बंधन में पड़े हिरण ने अपने मित्र सियार को आवाज लगाई। सियार ने पास आकर देखा, हिरण अब पूरी तरह जाल में फँस चुका है, अब वह इसमें से नहीं निकल सकता। यह देखकर वह मन ही मन बहुत खुश हो गया कि किसान सुबह आकर इसे मार देगा और मुझे इसका मांस खाने को मिलेगा। हिरण को सहायता माँगने पर वह बोला – मित्र यह जाल ताँत का बना है और आज मेरा रविवार का व्रत है। इसलिए मैं ताँत को मुँह नहीं लगाऊँगा। यह कहता हुआ वह झाड़ियों में जाकर छिप गया।

काफी देर होने के बाद भी हिरण वापस नहीं आया तो मित्र कौवे को चिंता हुई और वह उसे ढूँढने निकल पड़ा। खेत के पास आकर उसने हिरण को देखा और कहा – यह सब कैसे हो गया? हिरण बोला – मित्र यह तुम्हारी सलाह न मानने का नतीजा है। कौवा बोला – चलो जो हुआ सो हुआ, लेकिन मेरी बात ध्यान से सुनो, जब किसान आए तो तुम पेट फुलाकर, पैर फैलाकर, मरे के समान पड़ जाना, हिलना-डुलना नहीं। सुबह किसान आया। उसने जाल में हिरण को पड़ा देखा और हँसते हुए बोला – यह तो मारने से पहले ही मर गया। यह कहते हुए वह जाल समेटकर जाने लगा। तभी कौए ने हिरण को भागने के लिए कहा। कौए की आवाज सुनकर हिरण छलाँग लगाता हुआ दौड़ा। किसान ने गुस्से में आकर फेंक कर लाठी मारी, जो झाड़ी में छिपे सियार को लगी और वह वहीं मर गया।

शिक्षा—पूरा परिचय जाने बिना मित्रता नहीं करनी चाहिए।

3\. **चिड़िया और चींटी**

नदी किनारे एक वृक्ष पर एक चिड़िया रहती थी। उसी पेड़ के नीचे एक चींटी रहती थी। दोनों में मित्रता थी। एक दिन जब चींटी नदी में पानी पीने गई तो वह फिसलकर नदी में बहने लगी। चिड़िया ने देखा कि नदी के तेज बहाव में उसकी मित्र चींटी बही जा रही है तो उसने तुरंत पेड़ से एक पत्ता तोड़कर नदी में गिरा दिया। चींटी उस पत्ते पर बैठ गई। धीरे-धीरे तैरती हुई चींटी किनारे लग गई।

कुछ समय बाद एक दिन एक शिकारी बंदूक लिए वहाँ आया। चिड़िया को देखकर उसने उसे मारने के लिए बंदूक का निशाना साधा। चिड़िया की जान पर खतरा देख चींटी शिकारी के पास आई और उसके पैर में जोर से काट लिया। दर्द से बिलबिलाते शिकारी के हाथ से बंदूक छूट गई। आवाज सुनकर चिड़िया भी पेड़ से उड़ गई और उसकी जान बच गई।

शिक्षा—संकट मुसीबत के समय हमें दूसरों की मदद करनी चाहिए।

अध्याय–22 अनुच्छेद लेखन

1. **योग भगाए रोग**—योग शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के युज् शब्द से हुई है। इसका एक अर्थ जोड़ना है। योग का अभ्यास शरीर और मस्तिष्क के विकारों को दूर करता है। योग प्राचीन समय से मनुष्य को प्रकृति द्वारा दिया गया अनमोल उपहार है।

   दैनिक जीवन में योग का अभ्यास करना हमें बहुत ही गंभीर बीमारियों से बचाता है जैसे—कैंसर, मधुमेह, उच्च रक्तचाप, हृदय रोग, अवसाद और अन्य बहुत से मानसिक समस्याओं में भी योग लाभदायक है। एक स्वस्थ जीवन जीने के लिए नियमित योग की बहुत आवश्यकता है। आज के आधुनिक जीवन में तनाव काफी बढ़ गया है और आस-पास का पर्यावरण भी स्वच्छ नहीं है। इस स्थिति में हम 20-30 मिनट योगाभ्यास करके अपने जीवन को काफी बेहतर बना सकते हैं।

   दैनिक जीवन में योगाभ्यास शरीर को आंतरिक और बाहरी शक्तियाँ प्रदान करता है। यह शरीर की रक्षा प्रणाली को व्यवस्थित करता है। यदि योग नियमित रूप से किया जाए तो हम अनेक बीमारियों को दूर भगा सकते हैं और स्वस्थ जीवन का आनंद ले सकते हैं।

2. **समय का सदुपयोग**—किसी ने कहा है, समय धन से भी ज्यादा कीमती है। एक बार धन खर्च हो जाने पर दुबारा कमाया जा सकता है, लेकिन बीता हुआ समय कभी वापस नहीं आता। एक मशहूर कहावत है कि समय और अवसर किसी का इंतजार नहीं करते। एक बार गए तो दुबारा नहीं मिलते। समय कभी किसी का इंतजार नहीं करता। अतः समय के महत्व को समझना और उसका बुद्धिमानी से उपयोग करना जरूरी है। यदि हम समय को बर्बाद करेंगे तो समय हमारी जिंदगी को बर्बाद कर देगा। इसलिए समय की कद्र करें और इसका जीवन में सार्थक सदुपयोग करें। समय के सदुपयोग के लिए समय-सारणी बनाएँ और नियमित दिनचर्या का पालन करें। व्यवस्थित जीवन शैली अपनाकर ही हम समय का सदुपयोग कर सकते हैं।

   समय में ही जीवन बसा है। अतः समय के सदुपयोग का अर्थ है—जीवन को उन्नत और सफल बनाना। समय का सदुपयोग हमें अपने समय के प्रति सचेत रहने के लिए जागरूक करता है तथा यह सुनिश्चित करता है कि हमारे प्रयास भलाई और विकास के लिए ही हों।

3. **प्रातः भ्रमण**—प्रातः भ्रमण व्यायाम का ही एक रूप है। यह सबसे उपयोगी व्यायामों में से एक है। प्रातः कालीन भ्रमण न केवल हमारे शरीर के लिए अच्छा है बल्कि हमारे मस्तिष्क को भी शांति देता है। प्रातः भ्रमण से शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। मनुष्य के लिए प्रातःकाल की सैर जितनी सुखदायक व रोमांचकारी होती है, उतनी ही स्वास्थ्यवर्धक भी होती है।

   सुबह के शांत वातावरण में चिड़ियों, पक्षियों की चहचहाहट और मधुर कूक तन-मन को प्रसन्नता से भर देती है। शरीर विज्ञानियों के अनुसार जो व्यक्ति व्यायाम के अन्य रूपों को नहीं कर पाते, उनके लिए प्रातः भ्रमण एक अच्छा विकल्प है। प्रातःकाल का दृश्य दिन के सभी दृश्यों के मुकाबले में अधिक मनोहर होता है। भ्रमण के कारण तन में नया उल्लास और उमंग आ जाती है। ऐसे समय में भ्रमण करना बहुत ही लाभकारी होता है। प्रकृति प्रातःकाल सभी जीवों

को स्वास्थ्य का वरदान देती है। जो लोग प्रातःकाल का भ्रमण करते हैं वे स्वस्थ जीवन बिताते हैं। इसलिए सभी को प्रतिदिन प्रातःकाल के भ्रमण पर अवश्य जाना चाहिए।

4. **मेरा प्रिय खेल**—खेल कई प्रकार के होते हैं। मोटे तौर पर इनको दो वर्गों में बाँटा जा सकता है—इनडोर गेम्स और आउटडोर गेम्स। अपनी क्षमता और रुचि के अनुसार ही हमें खेलों का चयन करना चाहिए।

मेरा प्रिय खेल क्रिकेट है। आधुनिक युग में इस खेल को अंतर्राष्ट्रीय महत्व प्राप्त है। हमारे देश भारत में यह खेल सर्वाधिक आकर्षण का केंद्र है। क्रिकेट का जन्म इंग्लैंड में हुआ था। वहीं से यह अन्य देशों में पहुँचा। भारत ने अपना टेस्ट मैच इंग्लैंड के विरुद्ध सन् 1932 में खेला था। टेस्ट मैच के अलावा यह खेल चार दिवसीय, तीन दिवसीय, एक दिवसीय भी होता है। इस समय ट्वेन्टी-ट्वेन्टी तथा आई. पी. एल. का क्रिकेट बहुत प्रसिद्ध है।

क्रिकेट में दो टीम होती हैं। जिसमें प्रत्येक में 11-11 खिलाड़ी होते हैं। खेल आरंभ होने पर एक टीम बल्लेबाजी करती है तो दूसरी टीम क्षेत्र रक्षण। जीत-हार का फैसला रनों के आधार पर होता है। खेल के निर्णायक को अंपायर कहा जाता है।

क्रिकेट आज शहरों से लेकर गाँवों तक प्रसिद्धि पा चुका है। इसकी लोकप्रियता इस बात से सिद्ध होती है कि जब भी यह खेल आरंभ होता है तब जन समूह मैदान की ओर उमड़ पड़ता है। इस खेल में धन, शोहरत और आनंद का संगम है। यह केवल मेरा ही नहीं करोड़ों भारतीयों का पसंदीदा खेल है।

5. **मैं मेले में बिछुड़ गया**—हमारे शहर में प्रतिवर्ष दशहरे के मेले का आयोजन होता है। यह मेला दशहरा मैदान में लगता है। जिसे देखने शहर के लोगों के अलावा आस-पास के गाँवों से अनेकों लोग आते हैं। मैं भी अपने माता-पिता के साथ दशहरा मेला देखने गया था। शाम का समय था, मेले में बहुत अधिक भीड़ थी। मुख्य सड़क पर तो तिल रखने की भी जगह नहीं थी। लोग धक्का-मुक्की करते हुए आगे बढ़ रहे थे। हम लोग भी उसी भीड़ में घुसकर चल रहे थे। सड़क के आसपास मिठाई, चाट तथा अन्य खाने-पीने की दुकानें लगी थीं। तरह-तरह के खिलौनों की दुकानें थीं। गुब्बारे वाला, पुंगी वाला, आइसक्रीम वाला भी मेले में घूम रहे थे। घर-गृहस्थी के सामान की दुकानें भी थीं। मेले का आनंद लेते हुए हमने झूला भी झूला, इसके बाद जादूगर का खेल भी देखा। जादू का खेल समाप्त कर हम राम-रावण का युद्ध देखने पहुँचे। तभी अचानक एक घटना घटी। जैसे ही राम ने अग्निबाण रावण पर चलाया, तीनों पुतले धू-धू कर जलने लगे। इसके बाद भगदड़ मच गई। मैं अपने माता-पिता से बिछुड़ गया। घबराकर मैं रोने लगा। मेले में अब मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था। मैंने अपनी परेशानी एक पुलिस अंकल को बताई, वो मुझे खोया-पाया केन्द्र पर ले गए, वहाँ पहुँचकर वे माइक से अनाउंसमेंट करवाने वाले ही थे, उसी समय मेरे माता-पिता मुझे ढूँढ़ते हुए वहाँ पहुँच गए। उन्हें देखकर मेरी जान में जान आई।

6. **मेरा मित्र 'टिंकू सजीला'**—मेरे मित्र का नाम टिंकू है। लेकिन सभी सहपाठी और गली-मुहल्ले के लोग उसे टिंकू सजीला कहते हैं। मेरे मित्र टिंकू का नाम टिंकू सजीला क्यों पड़ा, इसकी भी एक रोचक वजह है। मेरे मित्र को बचपन से ही सज-सँवरकर रहने का शौक है। नहा-धोकर वह साफ-धुले कपड़े पहनता है। बालों में तेल डालकर कंघी करता है। पैरों में जूते-मोजे, जेब में रूमाल, आँखों में चश्मा लगाए, वह किसी हीरो से कम नहीं लगता। यह उसकी अच्छी सफाई व स्वच्छ रहने का गुण, वह हर समय सजा-सँवरा रहता है। इसलिए लोग उसे टिंकू सजीला कहते हैं। मेरे मित्र की स्वच्छ रहने की आदत के कारण ही मुझे वह पसंद है। टिंकू सजीला मेरी ही उम्र का है। वह मेरी ही कक्षा में पढ़ता है। उसका घर मेरे घर के सामने है। हम दोनों साथ-साथ विद्यालय जाते हैं। विद्यालय से लौटते समय भी हम साथ-साथ आते हैं। शाम को और छुट्टी के दिन हम साथ-साथ खेलते हैं। टिंकू मेरा बहुत अच्छा मित्र है। वह पढ़ाई और खेल-कूद दोनों में कुशल है। परीक्षा नजदीक आने पर हम दोनों साथ-साथ पढ़ाई करते हैं। कभी मैं कक्षा में प्रथम स्थान लाता हूँ तो कभी टिंकू प्रथम स्थान प्राप्त करता है। मैं चाहता हूँ कि मेरी और टिंकू सजीला की मित्रता हमेशा बनी रहे।

7. **हमारी पिकनिक**—पिकनिक एक तरह का भ्रमण है जो दोस्तों या परिवार के साथ खुले वातावरण में आयोजित किया जाता है। पिछले महीने हमारे पूरे परिवार ने शहर के एक पार्क में पिकनिक के लिए जाने का फैसला किया। पिकनिक से एक दिन पहले ही खुशी खुशी हमने मिलकर योजना बनाई।

अगले दिन सामान पैक करके हम सुबह घर से निकल पड़े। पिकनिक स्पॉट हमारे घर से दो घंटे की दूरी पर था। रास्ते में बातें करते समय कार में हमने अंताक्षरी खेली। आखिरकार हम लगभग साढ़े दस बजे पिकनिक स्पॉट पर पहुँचे। वह नदी के किनारे एक खूबसूरत बाग था। जहाँ जगह जगह छोटे पौधे, झाड़ियाँ और लंबे घने पेड़ थे। नदी के किनारे से ठंडी हवा माहौल को और आनंददायक बना रही थी। मैं और परिवार के अन्य सदस्य खेलने लगे। खेलते खेलते हम थक गए। फिर सभी ने बैठकर खाना खाया। हम अपने घर से माँ के हाथ का बना खाना लेकर आए थे। वहाँ हम पिकनिक स्पॉट पर सभी के साथ मिल बैठकर खाना खाया, जो बहुत ही स्वादिष्ट लगा। दोपहर का भोजन करने के बाद हमने नाव की सवारी की। फिर शाम को लगभग पाँच बजे हम घर के लिए निकल पड़े।

पारिवारिक पिकनिक पर मैंने जो यादें संजोईं वे कुछ ऐसे अविस्मरणीय पल थे, जिन्हें भुलाया नहीं जा सकता। पिकनिक ने न सिर्फ रोज की भागदौड़ भरी जिंदगी में एक सुकून दिया, बल्कि मुझे खुशी भी दी और अपने परिवार के साथ कुछ अच्छा समय बिताने का अवसर भी दिया। मुझे उम्मीद है कि हम भविष्य में और भी पिकनिक की योजना बनाएँगे।

अध्याय–23 निबंध लेखन

1. वसंत ऋतु

संकेत बिन्दु—● हमारे देश की ऋतुएँ ● वसंत ऋतु का समय ● वसंत की शोभा ● मेरी सबसे प्रिय ऋतु वसंत।

हमारे देश की ऋतुएँ—हमारे देश में मुख्य रूप से चार ऋतुएँ होती हैं– शीत ऋतु (सर्दी), ग्रीष्म ऋतु (गर्मी), वर्षा ऋतु (मानसून) और शरद ऋतु (पतझड़)। शीत ऋतु दिसंबर से फरवरी तक होती है, जिसमें तापमान कम होता है और ठंड का मौसम रहता है। ग्रीष्म ऋतु जून से सितंबर तक रहती है जिसमें बारिश होती है। शरद ऋतु अक्टूबर से नवंबर में आती है।

वसंत ऋतु का समय—वसंत ऋतु, जिसे ऋतुओं का राजा भी कहा जाता है, फरवरी के अंत से अप्रैल तक रहती है। यह सर्दी और गर्मी के बीच का समय होता है जब मौसम सुहावना हो जाता है, दिन लंबे होने लगते हैं और प्रकृति में चारों तरफ हरियाली छा जाती है। वसंत ऋतु की शुरुआत वसंत पंचमी के साथ होती है।

वसंत की शोभा—इस ऋतु में मौसम सुहावना हो जाता है, सर्दी कम हो जाती है। पेड़ों में नए पत्ते आने लग जाते हैं। सरसों के फूल खिलते हैं, आम के पेड़ बौरों से लद जाते हैं। हवा में मादक सुगंध भर जाती है। हरियाली का साम्राज्य हो जाता है। वसंत ऋतु को राग रंग और उत्सव मनाने के लिए अच्छा समय माना जाता है।

मेरी सबसे प्रिय ऋतु—मेरी सबसे प्रिय ऋतु वसंत है। यह वह समय है जब प्रकृति नए नए रंगों में सजती है। प्रकृति के हर कोने में हरियाली फैलती है। वसंत के मौसम में हवा में मिठास होती है। फूलों का खूबसूरत नज़ारा दिखाई देता है। चारों ओर सौन्दर्य की छटा बिखर जाती है। बागों में कोयल मधुर स्वर में कूकने लगती है। मुझे वसंत ऋतु इसलिए भी अच्छी लगती है कि शीत ऋतु के लंबे अवकाश के बाद हमारे स्कूल फिर से खुल जाते हैं। वसंत ऋतु का यह रूप मुझे बहुत प्रसन्न कर देता है। वसंत ऋतु के आगमन से मानव मात्र तो क्या प्रकृति भी आह्लादित हो जाती है।

2. समाचार पत्रों के लाभ

रूपरेखा— ● समाचार पत्रों की आवश्यकता, ● प्रचलित समाचार पत्रों के नाम, ● समाचार पत्रों से हमें क्या लाभ होता है।

समाचार-पत्रों की आवश्यकता— प्रातःकाल उठते ही मनुष्य चाहता है कि चाय के प्याले के साथ अखबार पढ़े। समाचार पत्र आज हमारी दिनचर्या का अंग बन चुका है। कुछ लोगों के लिए तो अखबार एक नशे की तरह है। जब तक अखबार नहीं पढ़ लिया जाता, तब तक उन्हें चैन नहीं आता।

आज समाज और जीवन का हर अंग समाचार पत्र से प्रभावित है। समाचार पत्रों के माध्यम से हम घर बैठे देश विदेश के समाचार प्राप्त करते हैं। समाचार पत्र जन चेतना का भी कार्य करते हैं।

समाचार-पत्रों के नाम— आज दैनिक समाचार पत्रों के अतिरिक्त साप्ताहिक तथा मासिक पत्र भी प्रकाशित हो रहे हैं। हिंदी के समाचार पत्रों में राजस्थान पत्रिका, दैनिक भास्कर, जनसत्ता, नई दुनिया, अमर उजाला, दैनिक जागरण तथा हिंदुस्तान आदि प्रमुख हैं।

समाचार-पत्रों से लाभ— समाचार पत्रों से हमें अनेक लाभ हैं। इनके माध्यम से हमें दुनियाभर की घटनाओं, सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों और व्यापारिक जानकारियों से अवगत होने में मदद मिलती है। समाचार पत्र हमें जागरूक नागरिक बनने में मदद करते हैं, भाषा सुधारते हैं, साथ ही शिक्षा का एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं।

संक्षेप में समाचार पत्रों से हमें निम्नलिखित लाभ हैं— (i) ज्ञान और सूचना की प्राप्ति (ii) सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर जागरूकता (iii) भाषा सुधार (iv) शिक्षा का साधन (v) मनोरंजन (vi) विज्ञापन (vii) रोजगार (viii) व्यक्तित्व का विकास आदि।

3. हम पिकनिक पर गए

संकेत बिन्दु— ● पिकनिक क्या है ● स्थान का चुनाव ● साथी ● पिकनिक का आनंद ● पिकनिक का महत्व।

पिकनिक क्या है?— पिकनिक एक प्रकार की मनोरंजक गतिविधि है, जिसमें लोग किसी बाहरी स्थान पर, जैसे पार्क, झील या नदी के किनारे भोजन करते हैं, यह अक्सर दोस्तों या परिवार के साथ किया जाता है और इसमें भोजन के साथ-साथ खेलकूद और अन्य मनोरंजक गतिविधियाँ भी शामिल हो सकती हैं।

पिकनिक के कुछ सामान्य प्रकार हैं—पारिवारिक पिकनिक, दोस्तों के साथ पिकनिक, स्कूल पिकनिक तथा दंपति पिकनिक। पिकनिक कैसी भी हो, इससे निश्चित रूप से सामाजिक मेलजोल बढ़ता है।

स्थान का चुनाव— विद्यालय के प्रधानाचार्य महोदय ने प्रार्थना सभा में घोषणा की कि कल विद्यालय के छात्र और अध्यापक पिकनिक पर जाएँगे। यह सुनते ही सभी में हर्ष की लहर दौड़ गई। तत्पश्चात् प्रधानाचार्य और शिक्षकों ने मिलकर स्थान के बारे में विचार किया। रीता मैम ने शहर के प्रसिद्ध भगतसिंह पार्क का नाम सुझाया, तो सभी ने इस पर सहमति दे दी।

पिकनिक का आनंद— दूसरे दिन सभी समय पर पिकनिक के लिए तैयार होकर आ गए। हमारी पिकनिक की यात्रा सुबह शुरू हुई। बस की सवारी हँसी, गाने और बहुत उत्साह से भरी हुई थी। जैसे ही हम पार्क में पहुँचे, ताजी हवा और हरियाली ने हमारा मन मोह लिया। शिक्षकों ने हमारे लिए कई मजेदार गतिविधियाँ आयोजित कीं। हमने रस्साकशी, बैडमिंटन और म्यूजिकल चेयर जैसे खेल खेले। रस्साकशी में मेरी टीम विजेता रही।

दिन का मुख्य आकर्षण दोपहर का स्वादिष्ट भोजन था। हम सभी ने एक दूसरे के साथ अपना भोजन साझा किया, जिसने पिकनिक के अनुभव को और सुखद बना दिया। दोपहर के भोजन के बाद हम में से कुछ लोग झील के किनारे बैठकर बातें करते और आराम करते रहे, जबकि अन्य हमारे शिक्षकों के मार्गदर्शन में प्रकृति की सैर पर गए।

जैसे-जैसे दिन खत्म होने लगा, हमने इन खूबसूरत पलों को कैद करने के लिए कई तस्वीरें क्लिक कीं। वापसी की बस यात्रा भी उतनी ही मजेदार थी, हालाँकि हम सभी थोड़े थके हुए थे, फिर भी हमने अंताक्षरी खेली और नई फिल्मों के गाने गाए।

पिकनिक का महत्व— पिकनिक का सबसे मुख्य महत्व यह है कि हम अपने दोस्तों और परिचितों के साथ घुलते मिलते हैं, एक दूसरे से घनिष्ठता बढ़ती है। खुले वातावरण में प्रकृति के साथ समय बिताने का अनोखा अनुभव होता

है। सामूहिक भोज का अद्वितीय आनंद भी मिलता है। सामूहिक खेलों में खेल भावना का विकास भी होता है। मैं चाहता हूँ कि समय अंतराल पर इस प्रकार की पिकनिक का आयोजन होता रहे।

4. विद्यालय में छात्र सभा

संकेत बिन्दु—● विद्यालय का परिचय ● छात्र सभा का परिचय ● छात्र सभा के आयोजन का उद्देश्य ● छात्र सभा से छात्रों को लाभ।

विद्यालय का परिचय—विद्यालय एक ऐसा संस्थान है जो छात्रों को ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण प्रदान करता है जो उन्हें एक सफल और जिम्मेदार नागरिक बनाने में मदद करता है। मेरा विद्यालय शहर के सर्वश्रेष्ठ विद्यालयों में माना जाता है। मेरे विद्यालय का नाम राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय है। मेरे विद्यालय के सभी शिक्षक शिक्षिकाएँ एवं प्रधानाचार्य जी बड़े ही मनोयोग से छात्रों को शिक्षा देते हैं, साथ ही अन्य शिक्षणेत्तर गतिविधियों को भी सुचारु संपन्न करवाते हैं, जिससे छात्रों का बहुमुखी विकास हो सके। ऐसी ही एक शिक्षणेत्तर गतिविधि है विद्यालय की छात्र सभा।

छात्र सभा का परिचय—मेरे विद्यालय की छात्र सभा छात्रों द्वारा निर्वाचित संघ है, जो स्कूल के मामलों में छात्रों का प्रतिनिधित्व करती है। छात्र संघ में पद हैं—**अध्यक्ष**—श्री मोहन लाल मीणा, **उपाध्यक्ष**—श्री राजेश गहलोत, **सचिव**—अजय कुलश्रेष्ठ, **कोषाध्यक्ष**—श्री पुनीत अग्रवाल है। इसके अलावा हमारी छात्र सभा में ग्यारह सामान्य सदस्य हैं, छात्र संघ के समस्त सभी पदाधिकारी, सदस्य एवं छात्र छात्राएँ शामिल होते हैं।

छात्र सभा के आयोजन का उद्देश्य—विद्यालय की छात्र सभा के आयोजन का मुख्य उद्देश्य छात्रों को एक मंच प्रदान करना है, जहाँ वे अपनी बात रख सकें और विद्यालय समुदाय में सक्रिय रूप से भाग ले सकें। इसके अतिरिक्त, छात्र सभा जिम्मेदारी, सहयोग और लोकतांत्रिक मूल्यों को बढ़ावा देने में भी मदद करती है।

छात्र सभा से छात्रों को लाभ—विद्यालय की छात्र सभा से छात्रों को कई लाभ होते हैं। यह छात्रों को अनुशासन, नेतृत्व और सार्वजनिक भाषण जैसे कौशल विकसित करने में मदद करती है। इसके अलावा, यह छात्रों में एकता और सद्भाव की भावना को भी बढ़ावा देती है। इसके अतिरिक्त छात्र सभा छात्रों को सांस्कृतिक जागरूकता, नैतिक मूल्यों का विकास, सकारात्मक दृष्टिकोण तथा रचनात्मकता का विकास आदि लाभ प्रदान करती है संक्षेप में, छात्र सभा छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए एक महत्वपूर्ण मंच है। यह छात्रों को न केवल शैक्षणिक रूप से बल्कि सामाजिक, भावनात्मक और सांस्कृतिक रूप से भी विकसित होने में मदद करती है।

5. मेरे माता-पिता

संकेत बिन्दु—● माता पिता का जीवन में महत्व ● पिताजी और माताजी का संक्षिप्त परिचय ● परिवार में दोनों का स्थान और महत्व ● मुझ पर माता पिता का अपार स्नेह ● माता पिता के प्रति मेरा कर्तव्य।

माता-पिता का जीवन में महत्व—माता पिता का हमारे जीवन में बहुत महत्व है। वे हमारे पहले शिक्षक, मार्गदर्शक और सबसे बड़े शुभचिंतक होते हैं। माता पिता हमें जन्म देने से लेकर, हमारा पालन पोषण करने और हमें जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करने तक, हर कदम पर हमारा साथ देते हैं। उनका निस्वार्थ प्रेम, समर्थन और मार्गदर्शन हमारे जीवन में स्थिरता और सुरक्षा की भावना प्रदान करता है।

पिताजी और माताजी का संक्षिप्त परिचय—मेरे पिताजी का नाम श्री देवेश है मेरे पिताजी एक बैंक में कैशियर के पद पर कार्य करते हैं। मेरी माताजी का नाम श्रीमती मोहिनी है। मेरी माताजी एक सुगृहिणी हैं।

परिवार में दोनों का स्थान और महत्व—परिवार में माता पिता का स्थान सर्वश्रेष्ठ है और महत्व बहुत अधिक है। परिवार में रहकर माता पिता बच्चों के लिए एक मजबूत नींव प्रदान करते हैं, जिस पर वे अपना जीवन बनाते हैं। उनके मार्गदर्शन और समर्थन के बिना, बच्चों का समुचित विकास नहीं हो सकता। इसलिए, माता पिता का स्थान और महत्व परिवार में सबसे ऊपर है।

मुझ पर माता-पिता का अपार स्नेह—मेरे माताजी, पिताजी मुझसे बहुत प्यार करते हैं। मैं अपनी सारी परेशानियाँ अपने माता-पिता के साथ साझा करता हूँ और वे धैर्यपूर्वक मेरी बात सुनते हैं। माता-पिता मेरे लिए हमेशा मौजूद रहते हैं। चाहे स्कूल के कार्यक्रमों में शामिल होना हो या बीमारी में देखभाल करते हुए साथ रहना हो या रविवार या छुट्टी के दिन मेरे साथ समय बिताना हो। मेरी हर जरूरत, आवश्यकताओं को वह तुरंत पूरा कर देते हैं। अच्छे काम के लिए वे मेरी तारीफ भी करते हैं। मैं भी अपने माता-पिता को बहुत प्यार करता हूँ।

माता-पिता के प्रति मेरा कर्तव्य—माता-पिता के प्रति मेरा कर्तव्य है कि मैं उनकी देखभाल करूँ। मैं ऐसे कार्य करूँ जिससे माता-पिता को प्रसन्नता प्राप्त हो, कभी भी ऐसे कार्य न करूँ जिससे माता-पिता को कष्ट हो। इसके अतिरिक्त माता-पिता को निराश न करना और उनकी जरूरतों का ध्यान रखना भी प्रमुख कर्तव्य है।

अध्याय–24 मौखिक अभिव्यक्ति

1. सियार और कौआ

एक जंगल में एक कौआ रहता था। एक दिन कौआ किसी छोटे बालक के हाथ से रोटी छीनकर उड़ गया और एक पेड़ पर बैठ गया। उस पेड़ के नीचे से एक सियार जा रहा था। सियार पशुओं में और कौआ पक्षियों में चालाक माना जाता है। सियार भूखा था, सियार कौए से रोटी प्राप्त करने की तरकीब सोचने लगा। सियार ने कौए को नमस्ते कहा और उसके रूप, रंग और बोली की झूठी बड़ाई करने लगा। कौआ अपनी प्रशंसा सुनकर बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने सियार को धन्यवाद कहा। धन्यवाद कहने के लिए जैसे ही कौए ने अपना मुँह खोला, रोटी उसकी चोंच से नीचे गिर गई। सियार रोटी मुँह में दबाकर भाग गया। भूखा कौआ उसे देखता रह गया।

2. बहन – भाई, इतने खिलौने कहाँ से ला रहे हो?

भाई – बहन मैं मेला देखने गया था, वहीं से लाया हूँ।

बहन – कौन से मेले में गये थे?

भाई – गाँधी मैदान में दशहरा के मेले में गया था।

बहन – आपने वहाँ क्या-क्या देखा?

भाई – मैंने वहाँ सर्कस देखा, जादू का खेल देखा और भालू का नाच भी देखा था।

बहन – क्या आपने झूला भी झूला था?

भाई – हाँ, मैंने झूला भी झूला था।

बहन – भाई, मेले के बारे में और बताओ?

भाई – मेले में बहुत भीड़ थी। अनेक दुकानें लगी थीं। कई प्रकार के झूले थे। रंग-बिरंगे गुब्बारे, खिलौने और मिठाइयाँ बिक रही थीं।

बहन – मुझे भी मेला देखने जाना है।

भाई – अवश्य। कल मम्मी-पापा के साथ चलेंगे।

3. छात्र स्वयं करें।

अध्याय–25 सड़क सुरक्षा एवं परिवेशीय सजगता

1. 'सड़क सुरक्षा' सुरक्षित यातायात से सम्बन्धित एक उपाय है जिसमें सड़क दुर्घटना में लोगों को चोट लगने और उनसे मौत होने आदि घटनाओं को कम करने का प्रयास किया जाता है। इस हेतु यातायात के विभिन्न नियमों का पालन करने की अपेक्षा की जाती है ताकि यातायात सर्वाधिक सुरक्षित हो। परिवहन हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। ऐसी दशा में 'सड़क सुरक्षा' से सम्बन्धित नियमों का पालन करना प्रत्येक व्यक्ति के लिए अनिवार्य है।
2. (क) पैदल चलते समय हमें सड़क के फुटपाथ पर चलना चाहिए।
   (ख) सड़क पार करते समय हमें ट्रैफिक लाइट में लाल बत्ती होने पर जेब्रा क्रॉसिंग से सड़क पार करनी चाहिए।
3. ट्रैफिक लाइट में पीली, लाल तथा हरे रंग की तीन बत्तियाँ होती हैं। पीली बत्ती लाल बत्ती के होने का संकेत देती है। लाल बत्ती होने पर वाहन रोकना पड़ता है। हरी बत्ती चालक को आगे बढ़ने का संकेत देती है।
4. सड़क पर बनी सफ़ेद और काली धारी वाली पट्टियों को 'जेब्रा क्रॉसिंग' कहते हैं। इसके ऊपर से पैदल यात्री सड़क पार करते हैं।
5. 'सड़क की भाषा' से आशय यातायात के नियमों का ज्ञान होने से है। सड़क पर अनेक संकेतक चिह्न बने होते हैं। हमें उनके बारे में जानकारी होनी चाहिए, तभी हम सुरक्षित यात्रा कर सकते हैं।
6. सीट बेल्ट दुर्घटना की स्थिति में वाहन चालक एवं सवारी को आगे की टक्कर होने से रोकती है। यह वाहन चालक व सवार सभी व्यक्तियों के लिए महत्वपूर्ण है।
7. (क) 101 नं० (ख) 108 नं०। (ग) 100 नं०। (घ) हमें पुलिस और एंबुलेंस को सूचना देनी चाहिए तथा घायलों की प्राथमिक चिकित्सा करनी चाहिए।
8. (क) ट्रैफिक लाइट पर खड़े रहकर इंजन न बंद करने से ईंधन की खपत बढ़ती है तथा वायु प्रदूषण भी होता है।
   (ख) आगे की गाड़ी व अपनी गाड़ी के बीच एक गाड़ी की दूरी रखनी चाहिए।
9. गाड़ी चलाते समय मोबाइल फोन पर बातें करने से चालक का ध्यान बातों की ओर चला जाता है। फलतः वाहन से नियंत्रण हटते ही प्रायः दुर्घटना हो जाती है। अतः वाहन चलाते समय मोबाइल पर बातें नहीं करनी चाहिए।
10. मुझे अपने दादाजी और विषय अध्यापक महोदय से यह जानकारी मिली कि सड़क चिह्न पूरी दुनिया में एक जैसे होते हैं। इनके द्वारा मुझे यह भी ज्ञात हुआ कि विभिन्न देशों में अलग-अलग भाषाएँ बोली जाती हैं। ये भाषाएँ प्रायः वाहन चालकों की समझ में नहीं आतीं। दूसरे शब्दों में सड़क के नियमों को समझने में भाषाई विभिन्नता रुकावट बन जाती है। इसी कारण सड़क के नियमों को संकेत रूप में समझाने के लिए पूरे विश्व में सड़क चिह्न एक जैसे होते हैं।
11. पैदल यात्रा पारपथ को जेब्रा क्रासिंग इसलिए कहते हैं क्योंकि सड़क पर जिस जगह यह क्रासिंग होती है वहाँ वैसी ही श्वेत-श्याम धारीदार पट्टियाँ बनी होती हैं जैसी जेब्रा पशु के शरीर पर बनी होती हैं। इस प्रकार जेब्रा क्रासिंग का आशय धारीदार पट्टियों से होता है।
12. विद्यालय जाते समय और घर वापस आते समय हम सड़क के जिन चिह्नों को देखते हैं उनमें से कुछ के अर्थ निम्न हैं—
   (i) आगे मोड़ है। (ii) प्रवेश निषेध। (iii) हॉर्न प्रतिबंधित। (iv) आगे विद्यालय है। (v) पैदल यात्रा प्रतिबंधित है। (vi) गति अवरोधक। (vii) गति सीमा। (viii) यू टर्न निषेध (ix) ओवरटेक निषेध।
13. हमें यातायात के निम्नलिखित नियमों का पालन करना चाहिए—
   1. हमें सदैव सड़क पर बायीं ओर ही चलना चाहिए।
   2. पैदल चलने की दशा में सड़क हमेशा जेब्रा क्रासिंग से ही पार करनी चाहिए।

3. सड़क संकेतों एवं चिह्नों को देखकर उनके द्वारा दिए गए सांकेतिक निर्देशों का सावधानीपूर्वक पालन करना चाहिए।

4. दो पहिया वाहन चलाते समय हेलमेट अवश्य लगाना चाहिए।

5. चार पहिया वाहन चलाते समय सीट बेल्ट अवश्य बाँधनी चाहिए। वाहनों को निश्चित किए गए स्थान पर ही पार्क (खड़ा) करना चाहिए।

14. सड़क पार करते समय हमें सर्वप्रथम दाएँ, बाएँ यह देखना चाहिए कि कहीं कोई वाहन तो नहीं आ रहा है। इसके बाद सड़क के विभिन्न संकेत चिह्नों को देखकर सावधानीपूर्वक सड़क पार करनी चाहिए। पैदल होने पर ज़ेब्रा क्रासिंग से ही सड़क पार करनी चाहिए।

15. 1. जब हम पैदल हों तो ध्यानपूर्वक चलना चाहिए। सामने से आ रहे यातायात पर नज़र रखनी चाहिए, जहाँ ड्राइवर नहीं देख पाए वहाँ सड़क पार करने से बचना चाहिए।

2. डिवाइडर अथवा रेलिंग के ऊपर से कभी नहीं कूदना चाहिए।

3. यदि हम साइकिल से यात्रा कर रहे हैं तो साइकिल पर क्षमता से अधिक भार नहीं लादना चाहिए, यदि सड़क पर साइकिल मार्ग हो तो केवल उसका ही उपयोग करना चाहिए अथवा हमेशा बायीं ओर चलना चाहिए।

4. सड़क पर मुड़ते समय यातायात पर दृष्टि डालनी चाहिए एवं हाथ से मुड़ने वाली दिशा में संकेत करना चाहिए।

5. यदि हम बस से विद्यालय जा रहे हों तो शरीर का कोई भी अंग खिड़की से बाहर नहीं निकालना चाहिए, शोरगुल कदापि नहीं करना चाहिए। इससे चालक का ध्यान बँटता है और दुर्घटना की सम्भावना बढ़ जाती है।

16. त्रिभुजाकार चिह्न	वर्णन
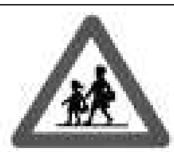	यह चिह्न वाहन को सावधानी से चलाने की चेतावनी देता है और यह दर्शाता है कि आगे थोड़ी दूरी पर स्कूल है। अतः गति धीमी रखें।
	यह चिह्न दर्शाता है कि आगे ज़ेब्रा क्रासिंग है, पदयात्री सड़क पार करते हैं। अतः वाहन की गति नियंत्रित करें।

17. 1. प्रवेश निषेध, 2. हॉर्न प्रतिबंधित, 3. आगे विद्यालय है, 4. पैदल यात्री प्रतिबंधित, 5. गति अवरोधक, 6. गति सीमा।

18. विद्यालय में जल का दुरुपयोग करने वाले छात्रों को हम समझाएँगे कि उन्हें जल का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए क्योंकि जल ही जीवन है, जल का सदुपयोग करना चाहिए। टंकी के नलों को खुला छोड़कर जल व्यर्थ में फैलाना नहीं चाहिए। क्योंकि जल यदि नहीं रहेगा तो हमारा जीवन संकट में पड़ जाएगा। हमारे दैनिक कार्य नहीं हो सकेंगे।

19. घर के पास गंदा पानी एकत्रित होने से मच्छरों का आतंक बढ़ जाएगा। क्योंकि मच्छर पानी में ही अण्डे देते हैं, ऐसी दशा में मलेरिया एवं डेंगू बुखार होने की सम्भावना अत्यधिक बढ़ जाएगी क्योंकि ये दोनों रोग मच्छरों के काटने से ही होते हैं। इसके निदान हेतु हम दो तरह का उपाय करेंगे—

1. एकत्रित गंदे जल में मिट्टी का तेल डाल देंगे ताकि उसमें पनप रहे मच्छर नष्ट हो जाएँ।

2. गंदे पानी की उचित निकासी के लिए अभिभावकों की मदद से सम्बन्धित व्यक्ति / विभाग से बात करेंगे।

20. हमें खाना खाने से पहले हाथ को साबुन से अच्छी तरह धोने के लिए इसलिए कहा जाता है क्योंकि जब हम काम कर रहे होते हैं तो हमारा हाथ अलग-अलग वस्तुओं, स्थानों आदि पर पहुँचता है। इन वस्तुओं, स्थानों पर विद्यमान विभिन्न प्रकार के हानिकारक जीव हमारे हाथों में चिपक जाते हैं। ये शरीर के अन्दर पहुँचकर घातक नुकसान पहुँचा सकते हैं। इसीलिए साबुन से हाथ को अच्छी तरह धोने के लिए कहा जाता है।
21. बाजार से विभिन्न वस्तुएँ/सब्जियाँ/फलों आदि को पॉलिथीन बैग में लाना उचित नहीं है। इसके लिए हमें घर से कपड़े का थैला ले जाना चाहिए। पॉलिथीन का अपघटन नहीं हो पाता इस कारण मृदा के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। इसका प्रभाव अन्नोत्पादन पर पड़ता है। इसके अलावा जानवर आदि भी इसे खा जाते हैं जिसके कारण उनकी मृत्यु तक हो जाती है।
22. बिजली बचाने के लिए हम अपने स्तर से निम्नलिखित प्रयास कर सकते हैं—
(क) जब आवश्यक हो तभी बल्ब, पंखे आदि जलाएँ/चलाएँ उन्हें अनावश्यक जलता हुआ/चलता हुआ न छोड़ें।
(ख) यदि सीमित रोशनी की आवश्यकता है तो अधिक वोल्टेज वाले बल्ब का प्रयोग न करें।
(ग) बिजली का अपव्यय न हो इस हेतु ISI मार्क उपकरणों का इस्तेमाल करने के लिए अभिभावक से कहेंगे।
23. हमें भलीभाँति मालूम है कि स्वस्थ जीवन के लिए स्वच्छ पर्यावरण अनिवार्य है। इसे स्वच्छ रखना हमारी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। इसकी स्वच्छता हेतु हम निम्नलिखित प्रयास कर सकते हैं—
(1) एक पेड़ लगाकर उसे तैयार करने का संकल्प लें।
(2) न तो जल को दूषित करें न करने दें।
(3) विवाह व अन्य समारोहों में ध्वनि विस्तारक यन्त्रों से ध्वनि प्रदूषण होता है। इस हेतु लोगों को जागरूक करेंगे।
(4) कूड़ा-कचरे को निर्धारित स्थान पर ही इकट्ठा करने के लिए लोगों को प्रेरित करेंगे।
24. स्वच्छ भारत अभियान में हम अपने स्तर से यह योगदान दे सकते हैं कि विद्यालय/गाँव के साथियों के साथ अलग-अलग टोली बनाएँ और आस-पास के क्षेत्रों की साफ-सफाई करें। कूड़े-कचरे को निर्धारित स्थान पर एकत्रित कर उसका उचित निस्तारण करवाएँ। इस तरह किया गया छोटा-छोटा प्रयास अन्ततोगत्वा बहुत बड़ी सफलता अर्जित करेगा।
25. 'नमामि गंगे' योजना केन्द्र सरकार द्वारा गंगा नदी के प्रदूषण को समाप्त करने के लिए शुरू की गई है। इसके तहत नदी के ऊपरी सतह की सफाई से लेकर बहते हुए ठोस कचरे की समस्या को हल करने, घाटों के निर्माण, मरम्मत और आधुनिकीकरण का लक्ष्य शामिल है। यद्यपि गंगा नदी की सफाई इसके सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक महत्व और विभिन्न उपयोगों के कारण बहुत कठिन है किन्तु बेहतर भविष्य के लिए ठोस कदम उठाने ही पड़ेंगे।
26. ई-प्रदूषण—इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों (मोबाइल फोन, टी.वी., रेफ्रिजरेटर आदि) के कचरे से उत्पन्न होने वाला प्रदूषण, ई-प्रदूषण कहलाता है। इस कचरे के कारण पर्यावरण में विभिन्न प्रकार की जहरीली गैसें बनती हैं जो स्वास्थ्य पर बहुत बुरा प्रभाव डालती हैं। इससे बचने के लिए ई-कचरे का वैज्ञानिक प्रबन्धन आवश्यक है अन्यथा धीरे-धीरे यह विकराल रूप धारण कर लेगा।

हिन्दी

व्याकरण एवं रचना

Teachers' Manual

कक्षा 7

हिन्दी व्याकरण एवं रचना कक्षा – 7

अध्याय–1 संज्ञा

1. (i) ग (ii) ग (iii) घ (iv) क (v) घ (vi) ग (vii) ग (viii) क (ix) घ (x) ख (xi) ग (xii) ख (xiii) घ (xiv) घ (xv) ख।
2. संज्ञा—किसी भी व्यक्ति, जाति, भाव या स्थान के नाम का बोध कराने वाले शब्दों को संज्ञा कहते हैं। जैसे—राम, बस, दिल्ली, गाय, टेबल आदि।
3. संज्ञा के तीन भेद होते हैं—
   1. व्यक्तिवाचक संज्ञा, 2. जातिवाचक संज्ञा, 3. भाववाचक संज्ञा।
   1. **व्यक्तिवाचक संज्ञा**— जिन शब्दों से किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान का ज्ञान होता है; उन संज्ञा शब्दों को व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्द कहते हैं। जैसे—कुतुबमीनार, महात्मा गाँधी, अशोक आदि।
   2. **जातिवाचक संज्ञा**—जिन शब्दों से व्यक्ति, प्राणी, स्थान तथा वस्तु के नाम की अपेक्षा उनकी सम्पूर्ण जाति का बोध हो, तो उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे— बालक पढ़ रहे हैं। नदियाँ सर्द हुई हैं। मिठाई भाती है।
   3. **भाववाचक संज्ञा**—जिन शब्दों से अवस्था, भावों तथा गुणों के नाम की पहचान की जाती है, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे—एकता से समाज बनता है। वीरता वीरों का गुण है। क्रोध एक मानवीय दुर्गुण है।
4. **जातिवाचक संज्ञा**—जिन शब्दों से व्यक्ति, प्राणी, स्थान तथा वस्तु के नाम की अपेक्षा उनकी सम्पूर्ण जाति का बोध हो, तो उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे— बालक पढ़ रहे हैं। नदियाँ सर्द हुई हैं। मिठाई भाती है।
5. **व्यक्तिवाचक संज्ञा**— जिन शब्दों से किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान का ज्ञान होता है; उन संज्ञा शब्दों को व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्द कहते हैं। जैसे—कुतुबमीनार, महात्मा गाँधी, अशोक आदि।
6. **भाववाचक संज्ञा**—जिन शब्दों से अवस्था, भावों तथा गुणों के नाम की पहचान की जाती है, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे—एकता से समाज बनता है। वीरता वीरों का गुण है। क्रोध एक मानवीय दुर्गुण है।
7. **द्रव्यवाचक संज्ञा**—वे शब्द जिनसे द्रव्य या पदार्थ के नाम की सूचना मिलती है, उन्हें द्रव्यवाचक संज्ञा शब्द कहते हैं। जैसे—जल ही जीवन है, इसे बचाइए। पेट्रोल के दाम आसमान पर हैं।
8. **समूहवाचक संज्ञा**— जो शब्द व्यक्तियों तथा वस्तुओं के समूहों की सूचना देते हैं, ऐसे शब्द समुदायवाचक या समूहवाचक संज्ञा शब्द कहलाते हैं। जैसे—पुष्कर मेले में बहुत भीड़ है। मधुमक्खी का झुंड अचानक टूट पड़ा।
9. हिमालय—व्यक्तिवाचक, महिला—जातिवाचक, समुद्र—जातिवाचक, सतलुज—व्यक्तिवाचक, दया—भाववाचक, भावना—भाववाचक।
10.

(क)		(ख)
सेवक	–	जातिवाचक संज्ञा
बड़प्पन	–	भाववाचक संज्ञा
श्रेष्ठ	–	विशेषण
खाना	–	क्रिया
निज	–	सर्वनाम
सुन्दर लाल	–	व्यक्तिवाचक संज्ञा
विधानसभा	–	समूहवाचक संज्ञा
धीरे-धीरे	–	अव्यय
सोने का हार	–	द्रव्यवाचक संज्ञा

11. (क) योग्यता (ख) लड़ाई (ग) बुढ़ापे (घ) चतुराई (ङ) बुराई (च) बड़प्पन (छ) मिलन (ज) ईमानदारी (झ) भलाई (ञ) ध्यान।

- *खेल-खेल में*

व्यक्तिवाचक संज्ञा — मोहन लड़का है।
जातिवाचक संज्ञा — डॉक्टर भगवान का दूसरा रूप होते हैं।
भाववाचक संज्ञा — स्थान गान में व्यवस्था अच्छा रहता है।
समूहवाचक संज्ञा — मुझे फूलों का गुच्छा बहुत पसन्द है।
द्रव्यवाचक संज्ञा — आग है, तो जलता है। इसे बचाइए।

अध्याय–2 सर्वनाम

1. (i) ख (ii) ग (iii) क (iv) ख (v) ग (vi) घ (vii) ग (viii) ग (ix) क (x) ग (xi) ख (xii) ख (xiii) घ (xiv) ख (xv) ग।

2. **सर्वनाम**—संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्द, सर्वनाम शब्द कहलाते हैं। जैसे—उसको, मुझे, यह, तुम, कोई आदि।

3. सर्वनाम के छह प्रमुख भेद हैं—

1. पुरुषवाचक सर्वनाम
2. निश्चयवाचक सर्वनाम
3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम
4. संबंधवाचक सर्वनाम
5. प्रश्नवाचक सर्वनाम
6. निजवाचक सर्वनाम

4. सर्वनाम के छह प्रमुख भेद हैं—

1. पुरुषवाचक सर्वनाम — मुझे
2. निश्चयवाचक सर्वनाम — यह
3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम — कुछ
4. संबंधवाचक सर्वनाम — जिसको
5. प्रश्नवाचक सर्वनाम — किसे
6. निजवाचक सर्वनाम — स्वयं

5. पुरुषवाचक सर्वनाम के भेद—(क) उत्तम पुरुष (ख) मध्यम पुरुष (ग) अन्य पुरुष

(क) उत्तम पुरुष — जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग वक्ता स्वयं के लिए करता है, वह उत्तम **पुरुषवाचक सर्वनाम** कहलाते हैं। इसके अंतर्गत मैं, मेरा, मेरे, मेरी, मुझे, मुझको, हम, हमें, हमको, हमारा, हमारे और हमारी शब्द आते हैं। जैसे— **मैं** फुटबॉल खेलता हूँ। **हम** तो हमारे हैं।

(ख) मध्यम **पुरुष** — जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग वक्ता की बातों को सुनने के लिए किया जाता है, वे **मध्यम पुरुष** कहलाते हैं। इसके अंतर्गत तू, तुझे, तुझको, तेरा, तेरे, तेरी, तुम, तुम्हें, तुमको, तुम्हारा, तुम्हारी, तुम्हारे, आप, आपको और आपके, आपको, अपना शब्द आते हैं। जैसे— **तुम** बहुत अच्छे हो। **तुम्हें** सभी पसंद करते हैं। पर **तुम्हारी** बहन ऐसी नहीं है।

(ग) अन्य पुरुष — जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग किसी तीसरे व्यक्ति के बारे में बात करने के लिए किया जाता है, वे अन्य **पुरुष** कहलाते हैं। इसके अंतर्गत यह, उसे, उसका, उसको, उसके, वह, इसे, इसको, इसका, इसके, उसके, वे, उन्हें, उनका, उनकी, उनके आदि शब्द आते हैं। जैसे— **वह** श्रेष्ठ विद्यार्थी है। उसके पिता मजदूर हैं। **वे** सदा सत्य बोलते हैं।

6. निजवाचक सर्वनाम तथा उत्तम पुरुष वाचक सर्वनाम में निम्न अन्तर है—

निजवाचक सर्वनाम—वे सर्वनाम शब्द जिनमें कर्ता या संज्ञा शब्द के साथ उसके अपनेपन का बोध हो, उन्हें निजवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे— मैं अपना काम स्वयं करूँगा।

यहाँ स्वयं सर्वनाम शब्द मैं के साथ अपनेपन की जानकारी देता है।

उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम—वे सर्वनाम शब्द जो वक्ता या बोलने वाले के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं, उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे—मुझे नींद आ रही है।

7. (क) जिनको, (ख) मुझसे (ग) किसको, (घ) आप ने (ङ) तुम्हें, (च) इनमें।

8. (क) मुझे सफलता प्राप्त करनी है।
(ख) उससे नमस्ते करना चाहिए।
(ग) तुम्हारे कागज रखे हैं।
(घ) मेरे लिए उपहार लिया गया।
(ङ) हमारे लिए कार आई।
(च) यह कार्य मुझसे नहीं हो पाएगा।

9. (क) अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम – अपादान कारक
(ख) मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम – कर्मकारक
(ग) प्रश्नवाचक सर्वनाम – अपादान कारक
(घ) अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम – कर्मकारक
(ङ) उत्तम पुरुष वाचक सर्वनाम – संबंध कारक
(च) अनिश्चयवाचक – कर्मकारक

10.

(क)		(ख)
तुमको	–	पुरुषवाचक
अपने आप	–	निजवाचक
किसका	–	प्रश्नवाचक
कुछ	–	अनिश्चयवाचक
मेरा	–	संबंधवाचक
यह	–	निश्चयवाचक

● ***खेल-खेल में***

- उनका – अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम
- उनके – अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम
- यह – निश्चयवाचक सर्वनाम
- इस – निश्चयवाचक सर्वनाम
- वे – अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम
- उन्होंने – अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम
- मैंने – उत्तम पुरुष सर्वनाम
- मेरा – उत्तम पुरुष सर्वनाम

अध्याय–3 विशेषण

1. (i) घ (ii) ख (iii) घ (iv) क (v) ग (vi) घ (vii) क (viii) ख (ix) ख (x) ग (xi) क (xii) ख (xiii) ग (xiv) ग (xv) क।

2. **विशेषण**—वे शब्द जो संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं।

3. विशेषण की तीन अवस्थाएँ हैं—(i) मूलावस्था (ii) उत्तरावस्था (iii) उत्तमावस्था।

4. **परिमाणवाचक विशेषण**—वे शब्द जिनसे वस्तुओं का परिमाण या मात्रा अथवा वजन की सूचना दी जा सकती है, उन्हें परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं।

5. **संख्यावाचक विशेषण**—वे शब्द जिनसे वस्तुओं अथवा व्यक्तियों की संख्या की जानकारी दी जाती है; उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।

6. **प्रविशेषण** — वे शब्द जो विशेषण शब्दों की विशेषता बताते हैं, प्रविशेषण कहलाते हैं।

7. सा, सी, से का प्रयोग समानता का बोध कराने के लिए किया जाता है। उदाहरण— आसमान नीला सा हो गया है। वहाँ छोटी सी लड़की खेल रही है। ये लंबे से पेड़ देवदार के हैं।

8. **विशेषण**— वे शब्द जो संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं।
प्रविशेषण — वे शब्द जो विशेषण शब्दों की विशेषता बताते हैं, प्रविशेषण कहलाते हैं।

9. **सर्वनाम**—ये शब्द जो संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाते हैं, उन्हें सर्वनाम कहते हैं।

सार्वनामिक विशेषण—जो सर्वनाम शब्द संज्ञा/सर्वनाम के पूर्व आकर उसकी विशेषता बताते हैं, वे सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं।

10. **उत्तरावस्था**—विशेषण की इस अवस्था में दो व्यक्तियों, स्थानों अथवा वस्तुओं के गुण, दोष के बीच तुलना की जाती है।

उत्तमावस्था—इसमें तुलना के दौरान एक को सबसे अधिक या कम बताया जाता है।

11. (क) कनाक – खिलाड़ियों, (ख) दुर्बल – व्यक्ति, (ग) निचला – हिस्सा, (घ) क्रोधी – व्यक्ति, (ङ) अनुभवी – व्यक्ति, (च) पालनहार – भगवान।

12. थोड़ा – (i) थोड़े केले और दे दो। (संख्यावाचक)

(ii) मुझे थोड़ा दूध चाहिए। (परिमाणवाचक)

बहुत – (i) मैदान में खिलाड़ियों की संख्या बहुत कम थी। (संख्यावाचक)

(ii) घर में बहुत अनाज भरा है। (परिमाणवाचक)

कुछ – (i) कुछ सेब अच्छे और मीठे हैं। (संख्यावाचक)

(ii) बर्तन में कुछ घी और डाल दो। (परिमाणवाचक)

जरा – (i) प्रवचन हॉल में जरा से आदमी थे। (संख्यावाचक)

(ii) शरबत में जरा सी चीनी और डाल दो। (परिमाणवाचक)

13. (क) स्नेहमय, (ख) कुलीन, (ग) ऊनी, (घ) यौगिक, (ङ) चालू, (च) रंगीन, (छ) क्रोधी, (ज) पहाड़ी, (झ) आनंदित, (ञ) नैतिक, (ट) नुकीला, (ठ) व्यावहारिक।

14.

(क) गुरु	गुरुतर	गुरुतम
(ख) तीव्र	तीव्रतर	तीव्रतम
(ग) कोमल	कोमलतर	कोमलतम
(घ) न्यून	न्यूनतर	न्यूनतम
(ङ) दीर्घ	दीर्घतर	दीर्घतम
(च) मंद	मंदतर	मंदतम

15. (क) यह गाय उसकी है। यह गाय है। (ख) ये नींबू खट्टे हैं। ये नींबू हैं।

(ग) ये फल अच्छे हैं। ये फल हैं। (घ) यह गाड़ी उनकी है। यह गाड़ी है।

16. वार्षिक, (ख) मासिक, (ग) स्वर्णिम, (घ) सहायक, (ङ) मांसल, (च) जोशीला।

17.

(क)		(ख)
नटखट	–	बालक
ऐतिहासिक	–	किला
अधखिला	–	फूल
विशाल	–	कमरा
दयालु	–	राजा
मैला	–	रास्ता
ताजा	–	भोजन

● *खेल-खेल में*

स्वयं करें।

अध्याय–4 लिंग

1. (i) ख (ii) ग (iii) क (iv) ग (v) ग (vi) क (vii) क (viii) ग (ix) क (x) ग (xi) घ (xii) ख (xiii) ख (xiv) ख (xv) ग।
2. **लिंग**—जिन शब्दों से उनके स्त्री या पुरुष जाति के होने की जानकारी मिले, उन्हें लिंग कहते हैं।
3. लिंग के दो भेद होते हैं—
   (i) **पुल्लिंग**—जिन शब्द रूपों से पुरुष जाति के होने की सूचना मिले, उन्हें पुल्लिंग कहते हैं।
   जैसे— छात्र, अध्यापक, घो।
   (ii) **स्त्रीलिंग**—जिन शब्द रूपों से स्त्री जाति के होने की सूचना मिले, उन्हें स्त्रीलिंग कहते हैं।
   जैसे—छात्रा, शालु, शिक्षिका, शेरनी आदि।
4. उल्लू, चीता
5. मछली, चील
6. मादा चीता, मादा मगर
7. नर मछली, नर तितली
8. (क) पुल्लिंग (ख) पुल्लिंग (ग) पुल्लिंग (घ) स्त्रीलिंग (ङ) पुल्लिंग
9. (क) हलवाइन, (ख) बाघिन, (ग) नायक, (घ) घोड़ा, (ङ) बेगम, (च) नर।
10. (क) पुल्लिंग — उबले हुए चावल खाने चाहिए।
    (ख) स्त्रीलिंग — हरियाणा के व्यक्ति खड़ी बोली बोलते हैं।
    (ग) स्त्रीलिंग — धवल मण्डली बहुत अच्छा प्रदर्शन कर रही है।
    (घ) पुल्लिंग — मन की शांति के लिए हवन हो रहा है।
    (ङ) स्त्रीलिंग — यह कुर्सी मेरी है।
    (च) पुल्लिंग — तलाश के कुछ साहित्यकारों के प्रिय वर्ण्य विषय हैं।
11. (क) मालिन, (ख) चिड़िया, (ग) तपस्विनी, (घ) पंडिताइन, (ङ) श्रीमती, (च) सेविका, (छ) स्वामिनी, (ज) कवयित्री, (झ) वीरांगना, (ञ) महारानी।
12. **स्त्रीलिंग**—बिन्दी, गेंद, कलम, डिबिया, कुल्हाड़ी, सिलाई।
    पुल्लिंग—सागर, थैला, कमरा, चना, आम, भालू, पुष्प, पैसा, दिया, गमला, चबेना।
13. (क) स्त्रीलिंग, (ख) पुल्लिंग, (ग) पुल्लिंग, (घ) स्त्रीलिंग, (ङ) पुल्लिंग, (च) पुल्लिंग।

● ***खेल-खेल में***

स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	उभयलिंग
टोपी	लेखक	राष्ट्रपति
नानी	भगवान	डॉक्टर
रागिनी	संत	पत्रकार
प्रजा	पिता	प्रोफेसर
धोबिन	घोड़ा	इन्जीनियर

अध्याय–5 वचन

1. (i) क (ii) क (iii) क (iv) ग (v) क (vi) घ (vii) क (viii) ग (ix) घ (x) क (xi) घ (xii) घ (xiii) क (xiv) क (xv) ख।
2. **वचन**—जिन शब्द रूपों से उनकी संख्या का बोध होता है, उसे वचन कहते हैं।

   जैसे– **एकवचन** — **बहुवचन**

   किताब — किताबें

   घोड़ा — घोड़े

   बहन — बहनें
3. वचन के दो भेद हैं– (1) एकवचन (2) बहुवचन

   (1) एकवचन – पंखा, बहुवचन – पंखे (2) एकवचन – गिलहरी, बहुवचन – गिलहरियाँ
4. **सदैव एकवचन** — **सदैव बहुवचन**

   जनता — प्राण

   सत्य — आँसू

   वर्षा — दाम

   पानी
5. (क) युवा (ख) गाएँ (ग) वस्तुएँ (घ) मेज (ङ) विधि (च) राहें (छ) बुढ़ियाँ (ज) पक्षी (झ) कुर्तों (ञ) बच्चा।
6. (क) रचना (ख) रानियाँ (ग) गाय (घ) जूते (ङ) दीवारें (च) लेखकगण
7. (क) चिड़ियाँ अपने घोंसलों में वापस आ गई हैं। (ख) सड़कें खाली पड़ी हैं।

   (ग) बेटियाँ अनमोल उपहार होती हैं। (घ) चाबियाँ घर पर ही रह गईं।

   (ङ) बच्चे सड़क पार नहीं कर पा रहे हैं। (च) हाथी अपनी चाल चल रहे हैं। कुत्ते भौंक रहे हैं।
8. (क) रोते समय आँसू निकलते हैं। (बहुवचन)

   (ख) रोजाना 6 से 7 गिलास पानी पीना चाहिए। (बहुवचन)

   (ग) टीम का एक दल रवाना हो चुका है। (एकवचन)

   (घ) कृपया हस्ताक्षर कर दीजिए। (बहुवचन)

   (ङ) मित्रगण आज पिकनिक पर जाएँगे। (बहुवचन)

   (च) बुद्धिजन समाज को दिशा देते हैं। (बहुवचन)
9. (क) मेरा कुर्ता पहन रहे हैं। (ख) भेड़ें दौड़ती जा रही हैं।

   (ग) गुरुजन हमें बहुत अच्छे संदेश देते हैं। (घ) आकाश कितना लाल हो रहा है।

   (ङ) चाय बड़ी अच्छी बनाई है। (च) आकाश में पतंगें उड़ रही हैं।

● *खेल-खेल में*

1. चाकू (एकवचन) 2. रातें (बहुवचन)
3. लड्डू (एकवचन) 4. जहाज (एकवचन)
5. जगत (एकवचन)

अध्याय–6 कारक

1. (i) घ (ii) क (iii) घ (iv) ग (v) क (vi) घ (vii) ग (viii) क (ix) ख (x) ख (xi) क (xii) ग (xiii) ग (xiv) ख (xv) ग।

2. कारक– जो शब्द या शब्दांश जो संज्ञा या सर्वनाम का संबंध वाक्य के शेष भाग से जोड़ते हैं, कारक कहलाते हैं।
   जैसे– सिपाही दिल्ली को जाएँगे।
   राम श्याम का दोस्त है।
   को, का शब्द जोड़ने से वाक्य पूर्ण हो जाता है, ये शब्द ही कारक कहलाते हैं।

3. कारक के आठ भेद होते हैं–
   (i) कर्ता कारक – बस ड्राइवर ने ब्रेक लगाए।
   (ii) कर्म कारक – गन्दगी को साफ करना चाहिए।
   (iii) करण कारक – मैं बस से आगरा गया।
   (iv) संप्रदान कारक – आज सिपाही के लिए गाड़ी खरीदूँगा।
   (v) अपादान कारक – बुरी संगति से दूर रहना चाहिए।
   (vi) सम्बन्ध कारक – यह राहुल की किताब है।
   (vii) अधिकरण कारक – लोग पार्क में खेल रहे हैं।
   (viii) संबोधन कारक – अरे ! तुम यहीं रह गये।

4. (क) **कर्म कारक** – वाक्य में क्रिया का प्रभाव जिस पर होता है वह 'कर्म' कहलाता है।
   संप्रदान कारक – जिस कारक से किसी को कुछ देने का भाव प्रकट हो, उसे संप्रदान कारक कहते हैं।
   (ख) **करण कारक** – कारक के जिस रूप से क्रिया के कारण या साधन का बोध हो उसे करण कारक कहते हैं।
   अपादान कारक – जिस कारक चिह्न से किसी व्यक्ति या वस्तु से अलग होने का भाव प्रकट हो रहा हो, उसे अपादान कारक कहते हैं।

5. (क) से (द्वारा) – करण कारक (ख) में – अधिकरण कारक
   (ग) से (अलग होना) – अपादान (घ) के लिए – संप्रदान कारक
   (ङ) की – संबंध कारक (च) अरे ! – संबोधन कारक

6. से– 1. मैं मोहन से अलग रहता हूँ।
   2. दूध पीने से ताकत आती है।
   को– 1. राहगीर को राह दिखाना मानवता का काम है।
   2. यह किताब मैं पीयूष को दूँगा।

7. अरे ! कहाँ चला आ रहा है? – संबोधन कारक
   आप यहाँ किससे पहुँचे? – करण कारक
   मैं तो छत पर सोता हूँ। – अधिकरण कारक
   राम के भाई ने ही धोखा दिया है। – संबंध कारक
   बकुल को बुलाया जा रहा है। – कर्म कारक
   आप कहाँ से आए हैं? – अपादान कारक
   मनुज ने क्या खाया? – कर्ता कारक
   गीतिका के लिए क्या लाए? – संप्रदान कारक

8. (क) <u>ने</u> – कर्ता कारक, <u>पर</u> – अधिकरण कारक
(ख) में – करण कारक
(ग) <u>को</u> – कर्म कारक, <u>ने</u> – कर्ता कारक <u>में</u> – करण कारक
(घ) <u>ने</u> – कर्ता कारक <u>को</u> – कर्म कारक <u>में</u> – अधिकरण कारक
(ङ) <u>में</u> – करण कारक
(च) <u>पर</u> – अधिकरण कारक

● *खेल-खेल में*

1. मैं गया।	मुझको जाना चाहिए।
2. तुम जाओ।	तुमको जाना चाहिए।
3. वह खाए।	उसको खाना चाहिए।
4. साँप मार डाला।	साँप को मार डाला।
5. छात्र पीटा है।	छात्र को पीटा है।
6. तुम यहाँ रह गए।	अरे! तुम यहाँ रह गए।
7. बालक गेंद खेल रहे हैं।	बालक गेंद से खेल रहे हैं।
8. मेरा भाई गाँव आया है।	मेरा भाई गाँव से आया है।
9. घर एक मंदिर है।	घर में एक मंदिर है।
10. तुम काम कर लेना।	तुम अपना काम कर लेना।

अध्याय–7 क्रिया

1. (i) क (ii) ग (iii) घ (iv) घ (v) ख (vi) ग (vii) क (viii) घ (ix) क (x) ग (xi) ख (xii) ख (xiii) ग (xiv) क (xv) ग।

2. **क्रिया**–वे शब्द जिनसे किसी कार्य के किए जाने या होने का बोध हो, उन्हें क्रिया कहते हैं।

3. कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद होते हैं– (1) सकर्मक क्रिया (2) अकर्मक क्रिया।
जैसे–(1) हर्षिता सब्जी बनाती है। (2) गधा दौड़ता है।

4. पूर्वकालिक क्रिया तथा कृदंत क्रिया में निम्न अंतर हैं–
पूर्वकालिक क्रिया–वे क्रिया रूप जो मुख्य क्रिया से पूर्व आकर मुख्य क्रिया को विस्तार देते हैं, उन्हें पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं। जैसे– रवीना आकर सो गई।
कृदंत क्रिया–वे क्रिया जो कृत् प्रत्यय के योग से बनती हैं। ये कृदंत क्रिया कहलाती हैं। जैसे– चल + अ = चलना।

5. (क) **अकर्मक क्रिया**–जिस वाक्य में क्रिया के साथ कर्म उपस्थित न हो, अकर्मक क्रिया कहते हैं।
सकर्मक क्रिया–वह क्रिया जिसमें कर्म उपस्थित हो, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं।
(ख) **एककर्मक क्रिया**–जिस वाक्य में क्रिया के साथ एक ही कर्म उपस्थित हो, उसे एककर्मक क्रिया कहते हैं।
द्विकर्मक क्रिया–जिस वाक्य में क्रिया के साथ दो कर्म एक साथ उपस्थित हों, उसे द्विकर्मक क्रिया कहते हैं।
(ग) **प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया**–जिस क्रिया में कर्ता स्वयं उपस्थित होकर कार्य की प्रेरणा दे, उसे प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं।
द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया–जब कर्ता कार्य में स्वयं न सम्मिलित होकर किसी और को कार्य करने की प्रेरणा देता है, उसे द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं।

6. प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया — वाक्य

प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया	वाक्य
(क) रुलाना	बच्चों को रुलाना नहीं चाहिए।
(ख) पढ़ाना	राम को पढ़ाना आवश्यक है।
(ग) जिताना	श्याम को यह मैच जिताना होगा।
(घ) सुलाना	माँ बच्चे को सुलाना चाहती है।
(ङ) लिखवाना	रमेश अपनी माँ से पत्र लिखवाना चाहता है।
(च) सिलवाना	दर्जी से मयंक शर्ट सिलवाना चाहता है।
(छ) दौड़ाना	घोड़े को दौड़ाना होगा।

7. (क) चलाती (ख) सिखाता (ग) पढ़ना (घ) डर (ङ) रुकता (च) गिरने (छ) खाकर

8. (क) खटखटाना (ख) ललचाना (ग) घसीटना (घ) हिनहिनाना (ङ) नरमाना (च) शर्माना (छ) मुटियाना (ज) टिमटिमाना (झ) अधियाना (ञ) गाँठना (ट) दुहराना (ठ) लतियाना

9. (क) भागकर (ख) आकर (ग) खेलते-खेलते (घ) जाते ही (ङ) गिरते-गिरते (च) आए (छ) रुक-रुककर

10. (क) पढ़ (ख) चढ़ (ग) रुक (घ) समझ (ङ) लिख (च) चल (छ) तैर (ज) नाच (झ) देख (ञ) रो (ट) धो (ठ) बो

11. (क) वह जाकर सोया। (ख) तुम उठकर भागो। (ग) मैं अभी जाकर आया। (घ) कहाँ चले गये। (ङ) इधर चलकर आओ। (च) यहाँ उठकर बैठो।

● *खेल-खेल में*

1. माधव लिखता रहा है।
2. अनुज पिला रहा है।
3. वह खाकर टहलने चला गया।
4. बच्चा रोकर सो गया।
5. अभिनव खा चुका था।

अध्याय–8 काल

1. (i) ख (ii) घ (iii) क (iv) ग (v) ग (vi) घ (vii) घ (viii) ख (ix) क (x) ग (xi) क (xii) घ (xiii) ग (xiv) ग (xv) क।
2. **काल**– क्रिया के जिस रूप से उसके घटित होने के समय का बोध हो, उसे काल कहते हैं।
3. किसी कार्य के करने या होने का बोध कराने वाले शब्दों को क्रिया कहते हैं। यह क्रिया जिस समय में होती है वह उसका काल कहलाता है।
4. **हेतु हेतुमद भूतकाल**– क्रिया के जिस रूप से भूतकाल में होने वाला कार्य किसी और क्रिया पर निर्भर हो, उसे हेतु हेतुमद भूतकाल कहते हैं। जैसे– सूरज निकल आता तो ठण्ड कम हो जाती।
   हेतु हेतुमद भविष्यकाल– क्रिया के जिस रूप से भविष्य में होने वाला कार्य किसी अन्य कार्य के होने पर निर्भर हो, उसे हेतु हेतुमद भविष्यकाल कहते हैं। जैसे– समय पर बारिश न हुई तो फसल सूख जाएगी।
5. (क) अर्जुन ने बाण बरसाए थे। (ख) तुम तुरंत निकल गए थे।
   (ग) सुहानी स्कूल नहीं जाती है। (घ) मयंक खाना खा रहा है।
   (ङ) मोहन पढ़ेगा तो उत्तीर्ण हो जाएगा।

6. (क) अकर्मक क्रिया (ख) सकर्मक क्रिया (ग) अकर्मक क्रिया (घ) सकर्मक क्रिया (ङ) अकर्मक क्रिया
(च) सकर्मक/अकर्मक क्रिया (छ) सकर्मक क्रिया (ज) अकर्मक क्रिया

7. (क) राम, श्याम घूमते हैं। (ख) तुम खेलते हो और गाते।
(ग) शायद आज बुआ जी आएँगी। (घ) मोहन पत्र लिख रहा है।
(ङ) स्कूल समाप्त हो गया।

8. (क) होना— (i) बारिश हो रही है। (ii) कल (ख) परीक्षा परिणाम घोषित हुआ।
(ख) जाना— (i) राम आगरा जाएगा। (ii) संजय अजमेर जाता है।
(ग) मिलना— (i) मेले में बालक मिल गया था। (ii) दोनों भाई गले मिलते हैं।
(iii) मैं कल भाई से मिलूँगा।
(घ) देखना— (i) मैंने प्रकृति का मनोरम दृश्य देखा था। (ii) मोहन चित्तौड़ का किला देखेगा।
(iii) सीता चित्र देखती है।

● *खेल-खेल में*

संदिग्ध वर्तमान काल	भविष्यत् काल
1. राज जाता होगा।	राज जाएगा।
2. बच्चे फुटबॉल खेलते होंगे।	बच्चे फुटबॉल खेलेंगे।
3. राजू पढ़ता होगा।	राजू पढ़ेगा।
4. सीता खाना खाती होगी।	सीता खाना खाएगी।
5. सुहानी स्कूल जाती होगी।	सुहानी स्कूल जाएगी।

अध्याय–9 उपसर्ग

1. (i) क (ii) घ (iii) ग (iv) ख (v) घ (vi) ख (vii) ग (viii) घ (ix) ख (x) क (xi) घ (xii) घ (xiii) ख (xiv) क (xv) ख।
2. **उपसर्ग**—वे शब्दांश जो मूल शब्द के पूर्व आकर जुड़ते हैं और उनके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं, उपसर्ग कहलाते हैं।
3. **परिभाषा**— वे अव्यय (शब्दांश) जो अन्य शब्दों के आगे जुड़कर उन्हें एक नया अर्थ देते हैं, उपसर्ग कहलाते हैं।
4. उपसर्ग चार प्रकार के होते हैं—

(i) संस्कृत के उपसर्ग — अनु — अनुकरण
अभि — अभिमान
(ii) हिन्दी के उपसर्ग — अ — अटल
अन — अनमोल
(iii) उर्दू के उपसर्ग — कम — कमज़ोर
हर — हरदिन
(iv) संस्कृत के अव्यय — अधः — अधःपतन
स्व — स्वदेश

5. (क) ला – लावारिस, लापता (ख) बद – बदनाम, बदसूरत
(ग) बे – बेवकूफ़, बेईमान (घ) बा – बाअदब, बाकायदा

6. **उपसर्ग मूल शब्द उपसर्ग मूल शब्द**

(क) उप	ग्रह	(ख) निर्	वचन
(ग) अति	आचार	(घ) सह	नदी
(ङ) प्र	ज्ञान	(च) कम	जोर
(छ) अव	मानना	(ज) प्रति	क्षण

7.

उपसर्ग		शब्द	अर्थ
होनी —	अन	अनहोनी	जो होने में निश्चित न हो।
पता —	ला	लापता	गायब
शासन —	अनु	अनुशासन	नियंत्रण
जय —	परा	पराजय	हार
देशी —	वि	विदेशी	देश से बाहर का

8. (क) प्र – आगे, दूर – प्रचलन, प्रमोद (ख) ला – बिना – लापरवाह, लाइलाज
(ग) नि – निषेध, अधिकता – निबंध, निवास (घ) उन – एक कम – उनतीस, उन्मत
(ङ) प्रति – हर एक – प्रतिदिन, प्रतिवर्ष (च) पर – दूसरा, पराया – परलोक, परदेशी
(छ) ब – में, के अनुसार – बनाम, बदस्तूर (ज) कु – बुरा – कुपुत्र, कुकर्म
(झ) ना – अभाव – नापसंद, नासमझ (ञ) बा – के साथ – बाइज्जत, बाअदब

● *खेल-खेल में*

1. सत्कार	1. कुविचार
2. सहकार	2. कुकर्म
3. सदाचार	3. कुदृष्टि
4. सद्धर्म	4. कुकृत्य
5. सद्भाव	5. कुपुत्र

अध्याय–10 प्रत्यय

1. (i) ख (ii) क (iii) क (iv) ग (v) ग (vi) क (vii) ग (viii) ख (ix) ख (x) ख (xi) ग (xii) ख (xiii) ग (xiv) ख (xv) ग।
2. प्रत्यय – कुछ शब्दांश शब्दों के अंत में जुड़कर नए शब्दों का निर्माण करते हैं। ऐसे शब्दांशों को प्रत्यय कहा जाता है।
3. प्रत्यय के मुख्यतः दो भेद होते हैं– (i) कृत् प्रत्यय (ii) तद्धित प्रत्यय।
4. जो प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण के अंत में लगकर उनके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं वे तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।
लोहा + आर = लोहार। गाड़ी + वाला = गाड़ीवाला। पुस्त + इका = पुस्तिका।
मनुष्य + ता = मनुष्यता। देव + त्व = देवत्व।
5. जब प्रत्यय क्रियाओं या धातुओं के अंत में लगकर नए शब्दों का निर्माण करते हैं तो कृत् प्रत्यय कहलाते हैं।
जैसे – पालन + हार = पालनहार। सज + आवट = सजावट, दिख + आवा = दिखावा। पढ़ + आई = पढ़ाई। हँस + ई = हँसी।
6.

शब्द	प्रत्यय	मूल शब्द	शब्द	प्रत्यय	मूल शब्द
चढ़ावा	आवा	चढ़	लुटेरा	एरा	लूट
लड़का	आका	लड़	भुलक्कड़	अक्कड़	भूल

	कृपालु	आलु	कृपा			
7.	ई	अभिमानी	मोहिनी	लु	कृपालु	दयालु
	आना	[illegible]	मर्दाना	एरा	चचेरा	ममेरा
	आवट	सजावट	मिलावट	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	आन	उड़ान	थकान	दार	[illegible]	[illegible]
8.	आई	—	अच्छाई	=	राम की अच्छाई की सभी तारीफ करते हैं।	
	ऊ	—	पेटू	=	[illegible] बहुत पेटू है।	
	ईय	—	दर्शनीय	=	मथुरा एक दर्शनीय स्थल है।	
	आलु	—	दयालु	=	दयालु होना एक अच्छा गुण है।	
9.		**उपसर्ग**	**प्रत्यय**		**उपसर्ग**	**प्रत्यय**
	उपयोगी	उप	ई	बेरहमी	बे	ई
	[illegible]	बद	ई	निर्दयता	निर्	ता

10. (क) अड़ियल, (ख) [illegible], (ग) थाली, (घ) बिछौना, (ङ) [illegible] (च) बिकाऊ

11. (क) बेईमानी (ख) बेइज्जती (ग) मक्कारी (घ) [illegible] (ङ) लापरवाही

- *खेल-खेल में*

1. [illegible] + स्थान [illegible] 2. लड़क + पन लड़कपन
3. [illegible] + ई [illegible] 4. [illegible] + ई [illegible]

अध्याय–11 समास

1. (i) ख (ii) क (iii) ग (iv) क (v) घ (vi) क (vii) क (viii) ख (ix) घ (x) ख (xi) ग (xii) क (xiii) ख (xiv) क (xv) ग।
2. **समास**– जब दो या दो से अधिक शब्दों से मिलकर एक नया, छोटा और सार्थक शब्द बनता है, उसे समास कहते हैं। इसे समस्तपद भी कहते हैं।
   समास के निम्नलिखित छः भेद होते हैं–
   1. अव्ययीभाव समास 2. तत्पुरुष समास 3. द्विगु समास 4. बहुव्रीहि समास 5. द्वंद्व समास 6. कर्मधारय समास
3. उपभेद हैं– (i) कर्म तत्पुरुष (ii) करण तत्पुरुष (iii) संप्रदान तत्पुरुष (iv) अपादान तत्पुरुष (v) संबंध तत्पुरुष (vi) अधिकरण तत्पुरुष
4. **अव्ययीभाव समास** – जिस समास का पूर्व पद अव्यय हो तथा वह प्रधान भी हो, तो वह अव्ययीभाव समास कहलाता है। जैसे– (i) आजीवन – जीवन भर (ii) यथाशक्ति – शक्ति के अनुसार
5. **कर्मधारय समास** – जिस समास में एक पद विशेषण और दूसरा पद विशेष्य अथवा एक पद उपमेय और दूसरा पद उपमान होता है, उसे कर्मधारय समास कहते हैं। जैसे– (i) नीलांबर – नीला है जो अम्बर (ii) प्रिय है जो मित्र
6. **द्विगु समास** – जिस समास का पूर्वपद संख्यावाचक विशेषण हो और जिससे समूह का बोध हो, उसे द्विगु समास कहते हैं। जैसे–
   (i) त्रिलोक – तीन लोकों का समूह (ii) चौराहा – चार पैरों का समाहार
   (iii) दोपहर – दो पहरों का समाहार (iv) चौराहा – चार राहों का समूह
7. **द्वन्द्व समास** – वह समास, जिसमें दोनों पद प्रधान होते हैं। इसमें योजक शब्दों का लोप करके नया शब्द बनाया जाता है, द्वन्द्व समास कहलाता है। जैसे– भाई और बहन भाई-बहन। सीताराम – सीता और राम।

8. **बहुव्रीहि समास** – जिस समास में कोई भी पद प्रधान नहीं होता और दोनों पद भाव (आशय) के आधार पर किसी अन्य पद की ओर संकेत करते हैं, वहाँ बहुव्रीहि समास होता है। बहुव्रीहि समास में आए दोनों पदों को छोड़कर किसी तीसरे पद की प्रधानता होती है जैसे–

   (i) नीलांबर – नीले हैं वस्त्र जिसके वह – कृष्ण (ii) दशानन – दस हैं आनन जिसके वह – रावण

9. (क) छोटी-बड़ी – छोटी और बड़ी (ख) राधा-कृष्ण – राधा और कृष्ण (ग) दुबली-पतली – दुबली और पतली (घ) माता-पिता – माता और पिता (ङ) सुख-दुःख – सुख और दुःख।

10.

समास	**विग्रह**	**समास का नाम**	**वाक्य प्रयोग**
सेंकी-तली	सेंकी और तली	द्वन्द्व समास	<u>सेंकी-तली</u> पूड़ियाँ परोसी जा रही हैं।
शोकमग्न	शोक में मग्न	बहुव्रीहि समास	राम <u>वनगमन</u> से दशरथ शोकमग्न हो गए।
भोजनालय	भोजन के लिए घर	संप्रदान तत्पुरुष	<u>गणनायक</u> की आराधना करो।
वनगमन	वन को गमन	कर्म तत्पुरुष	राम के <u>वनगमन</u> के कारण दशरथ ने प्राण त्याग दिए।
शापग्रस्त	शाप से ग्रस्त	करण तत्पुरुष	<u>शापग्रस्त</u> अश्वत्थामा पीड़ा में कराह उठा।
चिंताग्रस्त	चिंता से ग्रस्त	करण तत्पुरुष	राम के पिता <u>चिंताग्रस्त</u> बैठे थे।
आजन्म	जन्म पर्यंत	अव्ययीभाव	भीष्म ने <u>आजन्म</u> ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा की।
निर्भय	बिना भय के	अव्ययीभाव	शेर वन में <u>निर्भय</u> विचरण करता है।
स्नान गृह	स्नान के लिए गृह	संप्रदान तत्पुरुष	<u>स्नानगृह</u> को साफ स्वच्छ रखना चाहिए।

11. (क) चन्द्रवदन (ख) स्नानघर (ग) त्रिकोण (घ) राजा-रंक (ङ) देवालय (च) राष्ट्रप्रेम

12. हस्तलिखित – करण तत्पुरुष; [illegible] – कर्म तत्पुरुष
    मार्गव्यय – संप्रदान तत्पुरुष; नरेन्द्र – अधिकरण तत्पुरुष
    धर्मविमुख – अपादान तत्पुरुष; [illegible] – अधिकरण तत्पुरुष

● *खेल-खेल में*

द्विगु समास	**द्वन्द्व समास**
चारवर्गी	दाल-रोटी
तिरंगा	ठंड-गरम
चौगान	पेड़-पौधे
चौपाया	जल-थल
चतुर्भुज	कुर्ता-धोती

अध्याय–12 संधि

1. (i) ख (ii) ग (iii) क (iv) घ (v) ग (vi) ग (vii) घ (viii) क (ix) क (x) ख (xi) क (xii) ग (xiii) ग (xiv) घ (xv) ख (xvi) ग (xvii) घ (xviii) ख (xix) क (xx) ख।
2. **संधि** – दो समान या भिन्न ध्वनियों के मेल से होने वाले विकार या परिवर्तन को संधि कहते हैं।
3. **संधि के तीन भेद होते हैं**– (1) स्वर संधि (2) व्यंजन संधि (3) विसर्ग संधि।
4. **स्वर संधि** – जब दो स्वरों का मेल होता है तो उसे स्वर संधि कहते हैं।
   जैसे– वेद + अंत = वेदांत, उमा + ईश = उमेश।
5. स्वर संधि के पाँच भेद होते हैं–
   (i) दीर्घ संधि – परम + अर्थ = परमार्थ। (ii) गुण संधि – नर + इंद्र = नरेन्द्र

(iii) वृद्धि संधि — सदा + एव = सदैव। (iv) यण संधि — वि + आकुल = व्याकुल

(v) अयादि संधि — नै + अक = नायक।

6. व्यंजन ध्वनि का किसी अन्य स्वर या व्यंजन से मेल होता है, तब उसे व्यंजन संधि कहते हैं।
जैसे— जगत् + ईश = जगदीश।

7. व्यंजन संधि के नियम—

नियम-1. वर्ग के पहले (1) वर्ण का तीसरे (3) वर्ण में बदलाव होना। जैसे— दिक् + अंबर = दिगंबर।

नियम-2. वर्ग के पहले (1) वर्ण का पाँचवें (5) वर्ण में बदलाव होना। जैसे— सत् + मार्ग = सन्मार्ग।

नियम-3. 'त' संबंधी नियम— यदि पहले शब्द के अंत में त् आए और दूसरे शब्द के आरंभ में च, छ, ज, ट, ड तथा ल आए तो त् क्रमशः च्, ज्, ट्, ड् तथा ल् में बदल जाता है, परंतु त् के बाद यदि श हो तो त् च में तथा श् छ में बदल जाता है। इसी प्रकार त् के बाद ह् हो, तो त् द् में तथा ह् ध में बदल जाता है। जैसे— उत् + चारण = उच्चारण।

नियम-4. 'छ' संबंधी नियम— अगर किसी स्वर में पहले 'छ' आ जाए तो 'छ' से पहले 'च' वर्ण आ जाता है। जैसे— अनु + छेद = अनुच्छेद।

नियम-5. 'म' संबंधी नियम— यदि 'म' के बाद य से ह तक कोई व्यंजन आए तो 'म्' उस व्यंजन के संबंधित वर्ग में बदल जाता है। जैसे— सम् + तोष = संतोष।

8. **विसर्ग संधि—** विसर्ग का किसी स्वर या व्यंजन से मेल होने पर जो परिवर्तन (विकार) उत्पन्न होता है, तो वह विसर्ग संधि कहलाता है। जैसे— निः + चय = निश्चय। अतः + एव = अतएव।

9. **स्वर संधि—** जब दो स्वरों का मेल होता है तो उसे स्वर संधि कहते हैं; जैसे— रमा + ईश = रमेश।
व्यंजन संधि— व्यंजन ध्वनि का किसी अन्य स्वर या व्यंजन से मेल होता है तब उसे व्यंजन संधि कहते हैं।
जैसे— उत् + ज्वल = उज्ज्वल।

10. (क) सूर्योदय (ख) नरेन्द्र (ग) विद्यार्थी (घ) प्रत्युपकार (ङ) गणेश
(च) निष्फल (छ) उल्लेख (ज) सज्जन (झ) प्रातःकाल (ञ) संतोष
(ट) स्वागत (ठ) उल्लास (ड) भोजनालय (ढ) सम्पूर्ण

11.

	स्वरसंधि भेद	उदाहरण
(i)	दीर्घ संधि	पर + अधीन = पराधीन
(ii)	गुण संधि	महा + ऋषि = महर्षि
(iii)	वृद्धि संधि	एक + एक = एकैक
(iv)	यण संधि	प्रति + एक = प्रत्येक
(v)	अयादि संधि	पो + अन = पवन

12. (क) अयादि (ख) यण (ग) वृद्धि (घ) असंयुक्त (ङ) व्यंजन

13. देवर्षि — गुण संधि वनौषध — वृद्धि संधि शिवालय — दीर्घ संधि
शयन — अयादि संधि अत्याचार — यण संधि धनुष्टंकार — विसर्ग संधि
संकलन — व्यंजन संधि

● ***खेल-खेल में***

नदी + ईश = नदीश गिरि + ईश = गिरीश वाक् + ईश = वागीश
दिवा + ईश = दिवेश रमा + ईश = रमेश विद्या + आलय = विद्यालय
भोजन + आलय = भोजनालय औषध + आलय = औषधालय शिक्षा + आलय = शिक्षालय
शिव + आलय = शिवालय

अध्याय–13 मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

1. (i) ख (ii) ग (iii) क (iv) क (v) ख (vi) ग (vii) ख (viii) क (ix) ग (x) क (xi) ख (xii) ख (xiii) ख (xiv) ख (xv) घ (xvi) ख (xvii) ग (xviii) क (xix) ख (xx) घ।

2. (क) पछताना – समय पर पढ़ लेते तो हाथ मलना नहीं पड़ता।
(ख) जान की परवाह न करना – सैनिक जनता की रक्षा के लिए जान पर खेलते हैं।
(ग) हार मानना – वीर पुरुष के सामने दुश्मन पीठ दिखाकर भाग गया।
(घ) बहुत कठिन काम – आजकल सरकारी नौकरी पाना टेढ़ी खीर है।
(ङ) पराजित होना – भारतीय वीरों के सामने चीनी सैनिकों के पाँव उखड़ गए।
(च) नींद न आना – समय पर पढ़ाई नहीं की, अब अंकुश परीक्षा के समय तारे गिन रहा है।
(छ) कर्तव्य पूर्ण होना – बेटी की शादी करके माँ बाप गंगा नहा लिए।
(ज) बहुत प्रिय होना – इकलौता पुत्र शुभम अपने माँ बाप के आँखों का तारा है।

3. (क) कीचड़ उछालना। (ख) हथेली का आँवला होना।
(ग) फूटी आँख न सुहाना। (घ) दाँत काटी रोटी होना।
(ङ) टका सा जवाब देना। (च) नाक सिकोड़ना।

4. (क) मोहन अभी दसवीं पास भी नहीं हुआ और हवाई किले बनाने लगा है।
(ख) नरेन्द्र मोदी की राजनीति का सामना करना सूरज को दिया दिखाना है।
(ग) नरेश के सफल होने पर उसके पिताजी सिर उठाकर चलते हैं।
(घ) रेखा ने बात करके मनु का दिमाग चाट लिया।
(ङ) मेरा दोस्त बहुत खुश मिजाज है।
(च) राकेश ने अपने पड़ोसी की सबके सामने पगड़ी उछाल दी।

5. (क) एक ही थाली के चट्टे बट्टे हैं। (ख) उँगलियों पर नचाते हैं।
(ग) गला काटते हैं। (घ) टका सा जवाब दे दिया।
(ङ) मुँह में पानी आ गया। (च) टेढ़ी खीर है।
(छ) दाँत काटी रोटी है।

6. आम जनता के बीच प्रचलित या उनके द्वारा कही गई उक्तियाँ, लोकोक्तियाँ कहलाती हैं। जैसे— अंधों में काना राजा।

7. (क) अनपढ़ होना (ख) योग्यता से अधिक बोलना
(ग) शक्तिशाली की जीत होना (घ) अपना अच्छा व्यवहार है तो अन्य लोगों का भी व्यवहार अच्छा होता है।
(ङ) भय से सभी डरते हैं (च) लालच अच्छी बात नहीं है

8. (क) कालाबाजारी करने वाले गिरफ्तार हो गए, सही है— जैसी करनी वैसी भरनी।
(ख) खाली तिजोरी देखकर चोरों ने कहा खोदा पहाड़ निकली चुहिया।
(ग) रमन का काम निकलने के बाद उसने संतोष के साथ ओछे की प्रीत बालू की भीत जैसा कर दिया।
(घ) अज्ञानी आदमी सभी के सामने बोलकर थोथा चना बाजे घना जैसा कार्य करता है।
(ङ) हरिद्वार न जाकर शिवालय में गंगाजल चढ़ाकर भक्त बोला— मन चंगा तो कठौती में गंगा।
(च) कम अंक लाने पर भी दीपक अपनी प्रशंसा करता रहता है। इसी को कहते हैं अधजल गगरी छलकत जाए।

9. दाल में कुछ काला होना– आशंका होना
फटे हाल होना – बहुत गरीब होना
अंगारे उगलना– बहुत कठोर बात कहना
नाक का बाल होना– अत्यंत प्रिय होना
चिराग तले अँधेरा– अपनी बुराई न दिखाई देना
अक्ल पर पत्थर पड़ना– बुद्धि भ्रष्ट होना
ईद का चाँद होना– बहुत दिनों बाद दिखाई देना
कमर कसना– दृढ़ निश्चय करना

- *खेल-खेल में*

आँखें तरसना	आँखों से गिर जाना	अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना	आँखें चार होना
आसमान सिर पर उठाना	आँखों में धूल झोंकना	आपे से बाहर होना	आग में घी डालना
आस्तीन का साँप होना	आँखों का तारा होना		

अध्याय–14 शब्द विचार

1. (i) घ (ii) घ (iii) ग (iv) क (v) घ (vi) क (vii) ख (viii) ग (ix) ग (x) ख।

2. (i) ख (ii) ग (iii) क (iv) ग (v) ख (vi) घ (vii) क (viii) क (ix) ग (x) ग।

3. (क) संस्कृत, हिन्दी (ख) बहुव्रीहि (ग) यौगिक, अजायब, घर (घ) देशज (ङ) तद्भव शब्द (च) लता

4.

किताब – अरबी	नंबर – अंग्रेजी	गुलाब – फारसी	कुली – तुर्की
चाबी – पुर्तगाली	चाय – चीनी	डेल्टा – यूनानी	कारतूस – फ्रांसीसी

5. **सार्थक शब्द** – मटका, अभिमान, कागज, उत्पादन, मखमल, मजबूर, डाल, गुड़िया, मकरंद, नल, जल, अस्पताल।
निरर्थक शब्द – मतलबा, सतोष, मचमच, करंक, ढकोसल्को, जबेली, लबड़ी, रिक्स, हमरा, झनदट, गागर।

6. **परिवर्तन द्वारा सार्थक शब्द** – मतलब, संतोष, चमचम, कंकर, ढकोसला, जलेबी, लड़ाई, रिक्शा, हमराज, झटपट, गागर।

7. **शब्द** – वर्णों के सार्थक सामूहिक मेल को शब्द कहते हैं। अर्थ के आधार पर शब्द के दो भेद होते हैं–
(क) सार्थक शब्द (ख) निरर्थक शब्द।

8. **वर्ण एवं शब्द में अन्तर** – वर्ण का कोई निश्चित अर्थ नहीं होता है, जबकि शब्द का एक निश्चित अर्थ होता है। वर्णों के मेल से शब्द बनते हैं, जबकि शब्दों के अर्थ के समूह से वाक्य बनते हैं।

9.

(क) मूसल	(ख) खम्भा	(ग) कुआँ	(घ) हाथ	(ङ) काँटा
(च) गाँव	(छ) घोड़ा	(ज) सौ	(झ) खेत	(ञ) ओठ।

10. (क) **तत्सम शब्द** – संस्कृत भाषा से बिना किसी परिवर्तन के आए हुए शब्द तत्सम शब्द कहलाते हैं।
जैसे– माता, दुग्ध, स्वर्ण आदि।
तद्भव शब्द – वे शब्द जो संस्कृत भाषा से उत्पन्न हो हैं परन्तु हिन्दी में परिवर्तित रूप में सम्मिलित हैं, तद्भव शब्द कहलाते हैं। जैसे– सीख, कौआ, आग आदि।

(ख) **यौगिक शब्द** – वे शब्द जो दूसरे शब्दों के योग से बनते हैं, यौगिक शब्द कहलाते हैं।
जैसे– राष्ट्रपिता, रसोईघर, पीलापन आदि।
योगरूढ़ शब्द – वे शब्द जो योग या जोड़ से बने हों, परन्तु उनका अर्थ अलग प्रचलित होता है, ऐसे शब्द योगरूढ़ शब्द कहलाते हैं। जैसे– दशानन, नीलकंठ, पंकज आदि।

(ग) **देशज शब्द** – वे शब्द जो विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में प्रयोग किए जाते रहे हैं किंतु वर्तमान में जिनका प्रयोग हिंदी भाषा में भी व्यापक रूप से हो रहा है, **देशज शब्द** कहलाते हैं; जैसे– पगड़ी, गाड़ी।
विदेशी शब्द – विदेशी जातियों के संपर्क में आने से उनकी भाषाओं के बहुत से शब्द आधुनिक हिन्दी में प्रयोग किए जाने लगे हैं। ऐसे शब्दों को **विदेशी** अथवा **विदेशज शब्द** कहा जाता है।

(घ) **विकारी शब्द** – ऐसे शब्द जिनमें निरन्तर परिवर्तन होता रहता है। ये शब्द प्रायः लिंग, वचन, काल एवं कारक के आधार पर परिवर्तित होते हैं। ऐसे शब्द विकारी शब्द कहलाते हैं।
जैसे– बड़ा, बड़े, बड़ी, आता, आते, आती।

अविकारी शब्द – वे शब्द विकारी शब्द के विपरीत होते हैं अर्थात वे शब्द जिनमें किसी भी अवस्था में परिवर्तन नहीं होता, अविकारी शब्द कहलाते हैं। जैसे – यहाँ, जल्दी, धीरे, और।

- *खेल-खेल में*

अर्द्ध तत्सम	**संकर शब्द**
अग्या	कामधंधा
कारज	रेलगाड़ी
अगिन	लाठीचार्ज
बच्छ	वर्षगाँठ
अच्छर	बयाना

अध्याय–15 पर्यायवाची शब्द

1. (i) क (ii) क (iii) क (iv) ग (v) घ (vi) क (vii) ग (viii) घ (ix) क (x) घ (xi) घ (xii) क (xiii) क (xiv) ख (xv) ग (xvi) क (xvii) ख।
2. वृक्ष – पेड़, तरु, विटप, पादप।
   सर्प – साँप, नाग, विषधर, भुजंग।
   बिजली – विद्युत, चपला, तड़ित, सौदामिनी।
   मयूर – मोर, केकी, शिखी, सारंग।
3. पृथ्वी – धरती, धरा, वसुंधरा, वसुधा
   आकाश – नभ, गगन, अम्बर, व्योम
   भ्रमर – भौंरा, मधुकर, अलि, द्विरेफ
   पानी – जल, नीर, अंबु, तोय
4. कमल – जलज, पंकज, सरोज, नीरज
   चंद्र – शशि, राकेश, इंदु, मयंक
   घर – सदन, गेह, भवन, धाम
   पवन – वायु, समीर, हवा, अनिल
5. पक्षी – विहग, खग, नभचर
   घोड़ा – अश्व, तुरग, घोटक
6. वन – जंगल, अरण्य, कानन
   समुद्र – सागर, जलधि, उदधि
   अनाज – अन्न, धान्य, खाद्यान्न
   अनाथ – निराश्रय, बेसहारा, लावारिस
   भौंरा – भ्रमर, मधुकर, अलि
7. नदी – सरिता, तटिनी, आपगा
   राक्षस – असुर, रजनीचर, निशाचर
   ओला – हिमगुलिका, हिमोपल, उपल
   क्रोध – कोप, गुस्सा, आक्रोश
   कुत्ता – श्वान, सारमेय, शुनक

8. सुगम – सरल, आसान, साधारण
गाय – धेनु, सुरभि, गौ
गृह – सदन, निकेतन, कुटीर
मयंक – शशि, इंदु, राकेश
प्रेम – ममता, प्यार, वात्सल्य
रुदन – विलाप, क्रंदन, रोना
इच्छा – आकांक्षा, अभिलाषा, कामना
मिलाप – मिलन, भेंट, संयोग

9. (क) सूर्य (ख) मंदिर (ग) कुसुम (घ) निशाचर (ङ) पानी (च) मधु

● *खेल-खेल में*

(क) धनुष, चाप, शरासन, कोदंड (ख) अश्व, घोड़ा, तुरंग, घोटक
(ग) तलवार, असि, करवाल, खड्ग (घ) पेड़, वृक्ष, तरु, विटप

अध्याय–16 विलोम शब्द

1. (i) घ (ii) ग (iii) ख (iv) ख (v) ख (vi) क (vii) ख (viii) ग (ix) ग (x) ख (xi) क (xii) ग (xiii) ख (xiv) क (xv) ग।

2. (क) ह्रास (ख) हिंसा (ग) निंदा (घ) निर्यात (ङ) असत्यवादी (च) बली।

3. आशा – निराशा सज्जन – दुर्जन संयोग – वियोग क्रूर – दयालु
संधि – विग्रह सार्थक – निरर्थक संतोष – असंतोष मानव – दानव

4. (क) निराशा (ख) दुर्जन (ग) वियोग (घ) दयालु (ङ) विग्रह
(च) निरर्थक (छ) असंतोष (ज) दानव।

● *खेल-खेल में*

राजा रंक गरीब अमीर बालक बालिका
आकाश पृथ्वी दानी भिखारी।

अध्याय–17 श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द

1. (i) घ (ii) ख (iii) ग (iv) क (v) ग (vi) क (vii) क (viii) ग (ix) घ (x) ग।

2. (क) (i) सर्वदा – मनुष्य सर्वदा एक सा नहीं रहता।
(ii) सर्वथा – मनुष्य सर्वथा एक जैसा नहीं रहता।
(ख) (i) कठोर – ऐसी कठोर बातें शोभा नहीं देतीं।
(ii) [illegible] – [illegible]
(ग) (i) अन्न – पेट में अन्न पड़े तो चेहरे पर चमक आए।
(ii) दूसरा – तुम अन्य की बातों पर ध्यान मत दिया करो।
(घ) (i) पहाड़ – यह नग बहुत ऊँचा है।
(ii) सर्प – नाग को परेशान नहीं करना चाहिए।

3. (क) बालक – मनस्वी (ख) अंधा – चोर (ग) दुःख – चाय
(घ) पथ्य – रोगी को दिया जाने वाला हल्का भोजन (ङ) अंग – अवस्था
(च) परहेज – नियम (छ) पका – पकने का भाव, पक्का – कच्चा का उल्टा, पका हुआ
(ज) दूर्वा का मग – सुहाना (झ) मौन भिक्षु सुनना।

4. (क) चाव (ख) सुर (ग) पथ्य (घ) दिन (ङ) काल
(च) अंश (छ) प्रमाण (ज) और

● *खेल-खेल में*

जामन दूध जमाने की खटाई जामुन एक फल कोटि करोड़, कोट कोड़। वदन मुख, बदन शरीर। मूल जड़, तूल कोमल शुल्क फीस, शुक्ल सफेद। दिन दिवस, दीन गरीब। मातृ माता, मात्र केवल। शंकर महादेव, संकर मिश्रित। प्रसाद कृपा, प्रासाद महल जात पुत्र, जाति गोत्र।

अध्याय–18 अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

1. (i) ग (ii) ग (iii) क (iv) ख (v) ग (vi) ग (vii) घ (viii) घ (ix) क (x) ग (xi) क (xii) ग (xiii) ख (xiv) ख (xv) क।

2. (क) निरर्थक (ख) अनादि (ग) शुभचिंतक (घ) दम्पति (ङ) वैराग्य
(च) सर्वज्ञ (छ) दर्शनीय (ज) जितेन्द्रिय।

3. (क) जो आशा से परे हो। (ख) आयोजन करने वाला।
(ग) जो मधुर बोलता हो। (घ) जो मौन रहता हो।
(ङ) शिव के उपासक। (च) अर्थ या धन से संबंधित।
(छ) उपकार के बदले उपकार करना। (ज) तर्क की कसौटी पर सही होना।
(झ) हमेशा से रहने वाला।

4. अभिनेता – अभिनय करने वाला पुरुष कृतज्ञ – किसी के उपकार को मानने वाला
शास्त्रज्ञ – शास्त्रों को जानने वाला दुराग्रह – अनुचित बात के लिए आग्रह
स्वावलंबी – जो अपने ही सहारे रहता है सत्याग्रह – सत्य के साथ किया गया आग्रह
चतुर्वेदी – चारों वेदों का ज्ञाता वैधिक – कानून के अनुसार सही

5. (क) विदेशी (ख) चक्रधारी (ग) आस्तिक (घ) बंजर (ङ) अद्वितीय
(च) श्रोता।

● *खेल-खेल में*

1. दुर्लभ 2. शाश्वत 3. अल्पज्ञ 4. मितव्ययी 5. रेखांकित
6. पलायन।

अध्याय–19 अनेकार्थक शब्द

1. (i) ग (ii) ग (iii) क (iv) ग (v) क (vi) क (vii) ख (viii) ग (ix) क (x) ख (xi) घ (xii) ग (xiii) क (xiv) ख (xv) क।

2. (क) पत्रिका, आसन (ख) विष्णु, बन्दर (ग) बाल, मोक्ष (घ) कुशल, जल
(ङ) रंग, अक्षर (च) लक्ष्मी, शोभा (छ) शब्द, नौका (ज) प्रकार, सदृश्य।

3. (क) गुरु हमें पढ़ाते व सिखाते हैं। रोहन मोहन से गुरु है।
   (ख) हम पाँच वर्ष पूर्व यहाँ आए थे। सूर्योदय पूर्व में होता है।
   (ग) इस बात के पीछे गहरा अर्थ है। तुम्हारी बात का कोई अर्थ नहीं है।
   (घ) चलो ! उत्तर की ओर चलते हैं। समझदार व्यक्ति, सोच विचार कर उत्तर देते हैं।
   (ङ) कलियुग में व्यक्तियों के कई वर्ण हैं। राम के लिखे वर्ण बहुत साफ हैं।
   (च) भारत के तीनों दल सम्माननीय हैं। पतझड़ में पेड़ से दल गिरने लगते हैं।
4. (क) रेत (ख) थोड़ा (ग) कोमल (घ) धूल (ङ) पहचान (च) हेतु
5. द्विज – पक्षी, वैश्य, क्षत्रिय, ब्राह्मण नग – वृक्ष, पर्वत, नगीना, अचल
   पद – स्थान, पैर, पाँव, छंद के चरण मंगल – वार, शुभ, सौभाग्य, एक ग्रह
   शिखा – चोटी, किरण, ज्वाला सुरभि – सुगंध, बसंत, कामधेनु
   हलधर – किसान, बैल, बलराम हेम – सोना, हिम, कनक धतूरा
6. (क) स्नेह (ख) प्रेम (ग) हार, हार (घ) दूध, जल, अन्न
   (ङ) मनुष्य (च) बादल, हथौड़ा

● *खेल-खेल में*

पतंग – सूर्य, पक्षी आम – सामान्य, एक फल
फल – परिणाम, तीर का अगला भाग धन – जोड़, रुपया, पैसा

अध्याय–20 विराम–चिह्न

1. **विराम चिह्न** – लिखते समय विराम अवस्था को प्रकट करने के लिए, जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, विराम चिह्न कहलाते हैं।
2. **योजक चिह्न** – वाक्यों में जब समान या विपरीत शब्द एक साथ आते हैं तो इन शब्दों के बीच योजक चिह्न लगाया जाता है, जैसे – माता-पिता, छोटा-बड़ा।
   निर्देशक चिह्न – वाक्य पूरा होने के पश्चात् जब उसमें संबंधित उदाहरणों की ओर संकेत या निर्देश किया जाता है, तब निर्देशक चिह्न का प्रयोग किया जाता है। जैसे – महात्मा गाँधी ने कहा – अहिंसा परम धर्म है।
3. (क) आज हम घर वापस क्यों नहीं चल सकते ?
   (ख) सुभाषचंद्र बोस ने कहा – "तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा।"
   (ग) अरे! आज तो निकल पड़े तुम।
   (घ) बच्चा बोला – "आज नीता, मैं और आप बैडमिंटन खेलेंगे।"
   (ङ) तुम एल.एल.बी. क्यों नहीं कर लेते ?
   (च) वाह! मज़ा आ गया।
4. (क) विस्मयादिबोधक चिह्न (ख) इकहरा उद्धरण चिह्न (ग) प्रश्नवाचक चिह्न
   (घ) विवरण चिह्न (ङ) योजक चिह्न (च) निर्देशक चिह्न
5. बरसात की एक अँधेरी रात थी। एक आदमी साधारण कपड़े पहने, नगर के तंग रास्तों में से चौकन्ना होकर आगे बढ़ रहा था। घोड़े पर सवार वह जैसे ही एक गली में मुड़ा कि पीछे से ये शब्द उसके कानों में पड़े – "रुक जा।" वह बिना कुछ सुने, रुके, अपनी चाल चलता रहा। आगे पलभर में दस बारह डाकुओं ने उसे घेर लिया। मोटा तगड़ा उनका सरदार गरजकर बोला – "अबे सुनाई नहीं देता। उतर घोड़े से।" फिर दो डाकुओं ने उसे खींचकर नीचे उतार दिया। तभी बिजली चमकी तो उसका सफेद रंग का सुंदर घोड़ा देखकर बोला – "मालदार लगता है।"

● *खेल-खेल में*

छात्र अध्यापक महोदय की सहायता से स्वयं करें।

अध्याय–21 पत्र–लेखन

1. आदर्श विद्या मंदिर, जयपुर

दिनांक 22.09.20_ _

पूज्य पिताजी

सादर चरण स्पर्श

आशा है, आप सानंद होंगे। मेरी पढ़ाई अच्छी चल रही है। आपके भेजे गए पैसे खर्च हो गए हैं या यूँ कहूँ कि फिजूल में खर्च हो गए। इस फिजूलखर्ची को रोका जा सकता था, लेकिन कुछ दोस्तों की जिद की वजह से यह फिजूलखर्ची हो गई। इसके लिए मैं बहुत शर्मिंदा हूँ और आपसे क्षमा माँगता हूँ। भविष्य में ऐसी गलती दुबारा न हो, इसका ध्यान रखूँगा। पढ़ाई खर्च के लिए मुझे एक हजार रुपयों की आवश्यकता है। अतः 1000 रुपये मेरे खाते में डलवा दें, ताकि मैं समय पर पुस्तकें खरीद कर पढ़ाई पर अपना ध्यान केन्द्रित कर सकूँ।

माता जी को चरणस्पर्श तथा ईशा को मधुर प्यार

आपका आज्ञाकारी पुत्र

प्रत्यूष

2. प्रतिष्ठा में,

संपादक महोदय

हिन्दुस्तान टाइम्स

इन्दौर

दिनांक 17.06.20_ _

विषय— समाचार पत्र में रचना प्रकाशित करने के संबंध में

महोदय

निवेदन है कि मैं आपके सम्मानित समाचारपत्र हिन्दुस्तान टाइम्स का नियमित पाठक हूँ। मेरी कहानी, कविता तथा सम-सामयिक विषयों पर लिखने की रुचि रही है। मेरी अनेक रचनाएँ पत्र-पत्रिकाओं में छप चुकी हैं।

मान्यवर, आज की ज्वलंत समस्या 'बेरोजगारी : कारण और समाधान' विषय पर एक लेख मैंने आपके पास भेजा है। इसे अपने समाचार पत्र में स्थान देने की कृपा करें। आपकी अति कृपा होगी

धन्यवाद सहित

भवदीय

रमेशकुमार 'चंचल'

3. सेवा में, दिनांक 16.11.20_ _

श्रीमान प्रधानाचार्य महोदय

माध्यमिक उच्च माध्यमिक विद्यालय

राजीव नगर, भोपाल

विषय— गणित की अतिरिक्त कक्षाओं की व्यवस्था के संबंध में

महोदय,

विनम्र निवेदन है कि अर्द्धवार्षिक परीक्षा संपन्न हो चुकी है, इसका परिणाम भी आ चुका है। अधिकांश छात्रों ने गणित विषय में औसत से कम अंक ही प्राप्त किए हैं। अतः इस संबंध में मेरी आपसे प्रार्थना है कि गणित विषय की अतिरिक्त कक्षाओं की व्यवस्था करने की कृपा करें, ताकि आगामी वार्षिक परीक्षा में हम सभी छात्र बेहतर परिणाम दे सकें।

आशा है कि आप मेरे निवेदन पर सहानुभूतिपूर्ण विचार करेंगे।

धन्यवाद सहित,

सादर,

आपका शिष्य

सौभाग्य प्रजापति

कक्षा 7 'अ'

4. सेवा में,

अधीक्षण अभियंता

विद्युत विभाग

मानेसर

दिनांक 22.07.20_ _

विषय— बार-बार अघोषित बिजली कटौती के संदर्भ में

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं राजेश शर्मा आपका ध्यान मानेसर क्षेत्र में हो रही अघोषित बिजली कटौती की ओर दिलाना चाहता हूँ। इस क्षेत्र की बिजली व्यवस्था चौपट हो चुकी है। दिन-रात में कुल मिलाकर सात-आठ घंटे लाइट आती है। बार-बार बिजली कटौती से क्षेत्र के निवासियों को अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। आपसे निवेदन है कि इस समस्या को त्वरित संज्ञान में लेकर आपूर्ति सुनिश्चित करने की व्यवस्था करें। आपकी अति कृपा होगी।

सधन्यवाद

भवदीय

राजेश शर्मा

5. प्रिय मित्र डेविड

नमस्ते!

आशा है कि आप स्वस्थ और मस्त होंगे। मैं आपको इस पत्र के माध्यम से भारत आने का निमंत्रण दे रहा हूँ। भारत एक बहुत ही खूबसूरत और विविधताओं से भरा देश है। यहाँ की संस्कृति, परंपराएँ और यहाँ के लोग बहुत ही मिलनसार हैं। यहाँ अनेक ऐतिहासिक स्थल देखने योग्य हैं। इसके अलावा यहाँ खान-पान और पहनावे में भी अनोखी विविधता है।

मुझे विश्वास है कि आपको भारत आकर बहुत अच्छा लगेगा और जब वापस यहाँ से अमेरिका जाओगे तो अपने साथ यहाँ की मधुर यादें ले जाओगे। मैं भारत में आपके आगमन के स्वागत में हूँ।

उत्तर की प्रतीक्षा में

आपका मित्र

हरप्रीत सोढी

नई दिल्ली (भारत)

अध्याय–22 संवाद लेखन

1. समय के महत्व पर मां-पुत्र के बीच संवाद

मां — वंश बेटा, उठो, सुबह हो गई। देखो, सूरज निकल आया है।

वंश — मम्मी थोड़ी देर और सोने दो, छुट्टी का दिन है।

मां — छुट्टी है तो क्या हुआ ? समय तो बीत ही रहा है। समय का महत्व जानो और इसका सदुपयोग करो।

वंश — समय का महत्व, सदुपयोग! मैं समझा नहीं।

मां — बेटा समय का सही इस्तेमाल करना चाहिए। समय बहुत कीमती है। एक बार जो समय बीत गया, वह लौटकर नहीं आता।

वंश — लेकिन मैं क्या करूँ। अभी तो कुछ काम भी नहीं है।

मां — काम नहीं है तो भी समय का सदुपयोग कर सकते हो। जैसे– अपनी मनपसंद पुस्तक पढ़ो या दोस्तों के साथ खेलो या कुछ रचनात्मक कामों में समय लगाओ।

वंश — ठीक है मम्मी, मैं समझ गया। मैं अब समय व्यर्थ नहीं नष्ट करूँगा।

मां — बहुत अच्छा। खुश रहो बेटा।

2. अपने आस-पास की स्वच्छता बनाए रखने के लिए छात्रों में परस्पर संवाद।

कबीर — हमारे यहाँ इतनी ज्यादा गंदगी क्यों है ?

कमल — क्योंकि कमल हम परिवेश को स्वच्छ रखने पर समुचित ध्यान नहीं देते हैं।

कबीर — मैं एक नागरिक के रूप में क्या कर सकता हूँ ?

कमल — घरेलू कचरे को सड़क के किनारे रखे हुए कचरा पात्रों में डालना चाहिये। हमें अपने घर के सामने के सार्वजनिक मार्ग (सड़क) को साफ रखना चाहिये हमें प्रत्येक रविवार या अन्य अवकाश के दिन एक घण्टा सामुदायिक सफाई के लिये अर्पित करना चाहिये। हमें सार्वजनिक स्थानों पर गंदगी करने से बचना चाहिये। हमें दीवारों, पगडंडियों और सड़कों पर थूकने से अपने आप को रोकना चाहिये। हमें खुली जगह में मूत्र व मल त्याग करने से बचना चाहिये।

कबीर — एक नागरिक के रूप में मुझे क्या नहीं करना चाहिये ?

कमल — हमें सड़कों पर कूड़ा करकट नहीं फेंकना चाहिये। हमें बस व रेल के डिब्बों में छिलके व अन्य कचरे से गंदगी नहीं फैलानी चाहिए। हमें प्लास्टिक की थैलियों का प्रयोग नहीं करना चाहिये। हमें दीवारों पर पोस्टर नहीं चिपकाने चाहिये। हमें बचा हुआ भोजन (जूठन) नहीं फेंकना चाहिये।

कबीर — क्या भारत सरकार ने स्वच्छ भारत के लिए कोई कार्य योजना शुरू नहीं की है ?

कमल — अरे ! हाँ, भारत सरकार ने 'स्वच्छ भारत अभियान' शुरू किया है। ग्रामीण व शहरी भारत को अगले पाँच वर्षों में साफ बनाना है।

कबीर — यदि हम सब नागरिक इन नियमों का पालन करें तो हम स्वच्छ भारत के लिये योगदान कर सकते हैं।

कमल — हाँ, मैं आशा करता हूँ, विद्यार्थी और नागरिक भारत को स्वच्छता सुनिश्चित करने के लिए भरसक प्रयास करेंगे।

3. तंबाकू और धूम्रपान के दुष्प्रभावों पर शिक्षिका और छात्रों के बीच संवाद

शिक्षिका — नमस्ते बच्चो आज हम तंबाकू और धूम्रपान के हानिकारक प्रभावों पर चर्चा करेंगे।

सभी छात्र— जी मैम बहुत अच्छा।

शिक्षिका — क्या आप जानते हैं कि यह स्वास्थ्य के लिए कितना बुरा है? तम्बाकू और धूम्रपान का हमारे मस्तिष्क पर बुरा प्रभाव पड़ता है। इससे कैंसर जैसी बीमारियाँ भी हो जाती हैं। फेफड़े खराब हो जाते हैं। इसके अलावा अन्य अनेक रोग शरीर को दुर्बल बना देते हैं।

एक छात्र— इसलिए मैम हमारे स्कूल के बाहर बोर्ड लगा है, जिसमें धूम्रपान न करने की चेतावनी लिखी है।

शिक्षिका— बहुत सही! तो बच्चो हम सभी संकल्प लेते हैं कि भविष्य में हम कभी धूम्रपान तथा तंबाकू का उपयोग नहीं करेंगे।

एक छात्रा— साथ ही, जो भी ऐसा करता है उसे इसकी हानियाँ बताकर इसे छोड़ने के लिए कहेंगे।

शिक्षिका — यह तो बहुत अच्छी बात है। हम सब इसका ध्यान रखेंगे।

4. मोबाइल के अधिक इस्तेमाल से परेशान दो मित्रों के बीच संवाद

अमित — मित्र, मुझे लग रहा है कि आजकल मैं मोबाइल फोन का उपयोग अधिक कर रहा हूँ।

रवि — सही कह रहे हो, दोस्त, मुझे भी लगता है कि मोबाइल मुझसे भी अधिक चिपक गया है। बीच-बीच में जब भी टाइम मिलता है, मैं मोबाइल देखने लग जाता हूँ।

अमित — मोबाइल के कारण पढ़ाई और नींद दोनों ही नहीं हो पाती हैं।

रवि — मेरी भी यही स्थिति है, मोबाइल की वजह से मेरा तो सिर भी दर्द करने लगा है।

अमित — मेरी अध्यापिका ने बता रही थीं कि ज्यादा देर तक मोबाइल देखने से चिंता और अवसाद भी हो जाते हैं।

रवि — सही कहा, और हाँ रात को सोने से पहले मोबाइल देखना भी गलत है।

अमित — मुझे लगता है कि हमें मोबाइल के अधिक उपयोग से बचना चाहिए।

रवि — बहुत बढ़िया विचार है। चलो आज से ही शुरू करते हैं।

5. अध्यापक व छात्रों के बीच ग्लोबल वार्मिंग पर संवाद

शिक्षक — आज हम ग्लोबल वार्मिंग के बारे में चर्चा करेंगे। यह एक ऐसा विषय है, जिस पर सभी को जागरूक होना चाहिए।

छात्र — सर, ग्लोबल वार्मिंग क्या है और यह कैसे होता है?

शिक्षक — आजकल तुम मौसम में बदलाव देख रहे हो, गर्मी बहुत बढ़ गई है। यह ग्लोबल वार्मिंग ही है। इसका प्रमुख कारण वनों की कटाई, कोयला, तेल जैसे ईंधनों का अधिक प्रयोग तथा बढ़ती औद्योगिक गतिविधियाँ हैं।

छात्र — इन सबका क्या प्रभाव होता है?

शिक्षक — इन सब गतिविधियों से ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन होता है, जो पृथ्वी के तापमान को बढ़ा रहा है।

छात्र — ग्लोबल वार्मिंग के और क्या दुष्परिणाम हैं?

शिक्षक — मौसम में बदलाव, समुद्र के स्तर का बढ़ना, पारिस्थितिकी असंतुलन तथा मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव आदि अनेक दुष्परिणाम होते हैं।

छात्र — ग्लोबल वार्मिंग से कैसे बचा जा सकता है?

शिक्षक — सौर ऊर्जा और पवन ऊर्जा को बढ़ावा, वृक्षारोपण, संरक्षण, प्लास्टिक पर पाबंदी तथा कचरा रिसाइक्लिंग करने जैसे उपाय शामिल हैं।

छात्र — इस महत्वपूर्ण जानकारी के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद सर जी।

6. क्रिकेट मैच के संबंध में दो मित्रों के बीच संवाद

उत्कृष्ट — सुयश क्या तुमने कल विद्यालय में हुए क्रिकेट मैच को देखा था?

सुयश — हाँ देखा था, क्या शानदार मैच था? तुम्हारी टीम ने बहुत अच्छा खेला।

उत्कृष्ट — हाँ विशु की बल्लेबाजी तो कमाल की थी। उसने एक शतक भी ठोका।

सुयश — एक बार तो लगा कि तुम्हारी टीम लक्ष्य पाने में पिछड़ गई है।

उत्कृष्ट — सही कह रहे हो, दूसरी टीम के दो गेंदबाज मोहन और मानव ने अपनी गेंद से बल्लेबाजों को बहुत परेशान किया। दोनों ने मिलकर हमारी टीम के पाँच खिलाड़ी पवेलियन भेज दिए।

सुयश — हाँ, सही है लेकिन मित्र आखिरी ओवर में आपके द्वारा लगाए तीन छक्कों की मदद से आपने टीम को जीत दिला दी।

उत्कृष्ट — सच में, इस मैच में बहुत रोमांच रहा था। चलो, अगले मैच की तैयारी करते हैं।

सुयश — ठीक है मित्र, चलता हूँ।

7. **डाकिये और बूढ़े व्यक्ति के बीच संवाद**

वृद्ध व्यक्ति — क्या आप ही इस क्षेत्र की डाक बाँटते हैं?

डाकिया — जी, बाबूजी बताइए। आपकी क्या समस्या है?

वृद्ध व्यक्ति — मुझे पिछले महीने मुझे मेरा मनीऑर्डर नहीं मिला।

डाकिया — मनीऑर्डर कहाँ से आना था?

वृद्ध व्यक्ति — मेरे पुत्र ने मुझे भेजा था, जो मुझे नहीं मिला।

डाकिया — ओह, यह तो ठीक नहीं है।

वृद्ध व्यक्ति — क्या आप देख सकते हैं कि वह कहाँ है?

डाकिया — ठीक है, मैं पोस्ट ऑफिस में जाकर पता करता हूँ।

वृद्ध व्यक्ति — जी बहुत-बहुत धन्यवाद।

8. **रिक्शा चालक और यात्री के बीच संवाद**

यात्री — भैया! चौक बाजार तक चलोगे।

रिक्शा चालक — जी साहब, चलूँगा।

यात्री — कितना किराया लोगे?

रिक्शा चालक — पचास रुपये दे देना साहब।

यात्री — पचास रुपये तो बहुत अधिक हैं, पिछली बार मैं चालीस रुपये में गया था।

रिक्शा चालक — नहीं साहब, महँगाई हर रोज बढ़ रही है। खर्च भी पूरा नहीं होता। फिर चौक बाजार तक जाने में जाम भी बहुत मिलता है।

यात्री — चलो ठीक है, पैंतालीस रुपये ले लेना।

रिक्शा चालक — ठीक है, साहब, बैठिए। मैं चलता हूँ।

अध्याय–23 कहानी लेखन

1. **सर्प और किसान**

एक गाँव में एक किसान रहता था। गाँव से थोड़ी दूर पर उसका खेत था। जिसमें अनाज उगाकर वह अपने परिवार का पालन-पोषण करता था। एक बार ठंड के दिनों में वह अपने खेत पर गया। वहाँ उसने देखा कि ठंड के कारण एक साँप अकड़ा पड़ा था। ऐसा लग रहा था कि कुछ ही देर में वह मर जाएगा। किसान बहुत दयालु था। वह साँप को ठंड से मरते हुए नहीं देख सकता था। कोई उपाय न देख उसने साँप को उठाकर अपने सीने से चिपका लिया। किसान से गर्मी पाकर साँप को कुछ चेतना आई। धीरे-धीरे गर्मी पाकर साँप सही हो गया। अचानक उसने अपने विषैले दाँतों से किसान को ही काट लिया। थोड़ी ही देर में किसान मर गया।

सीख–किसी बुरे व्यक्ति पर विश्वास नहीं करना चाहिए।

2. **सारस और लोमड़ी**

एक जंगल में सारस और लोमड़ी रहते थे। एक दिन लोमड़ी ने सारस को अपने घर दावत पर बुलाया। लोमड़ी ने दावत में खीर बनाई और एक प्लेट में परोसी। लोमड़ी तो अपनी जीभ से प्लेट में खीर खाती रही, लेकिन सारस प्लेट से खीर नहीं खा सका। सारस भूखा ही लौट आया। अगले दिन सारस ने लोमड़ी से कहा–बहन लोमड़ी! आज मेरे घर पर दावत है, तुम आ जाना। लोमड़ी खुश होकर सारस के घर पहुँची। सारस ने भी बढ़िया खीर बनाई और उसे सुराही में रखकर बोला–आओ बहन खीर का आनंद लो। लोमड़ी सुराही से खीर नहीं खा सकी। सारस चोंच से पूरी खीर खा गया और लोमड़ी से बोला–बहन तुमने जो मजाक मेरे साथ किया, अब उसका आनंद लो। लज्जित लोमड़ी दबे पाँव वहाँ से चली आई।

शिक्षा–हमें दूसरों के साथ वह व्यवहार नहीं करना चाहिए, जो हमें अपने लिए पसंद न हो।

3. **गुड़ की मिठास**

एक गाँव में एक बुढ़िया रहती थी। उसका एक सात वर्ष का नाती था, जो अपनी दादी के साथ रहता था। उस बच्चे को गुड़ खाने की लत थी। उसकी इस आदत से परिवार के सभी लोग परेशान थे। एक दिन वह बूढ़ी माँ उसे गाँव के बाहर एक मंदिर पर ले गई। वहाँ एक साधु रहते थे। बुढ़िया ने कहा कि महाराज गुड़ की मिठास इस बच्चे की कमजोरी है। कृपया आप इसे समझाएँ कि वह अधिक गुड़ न खाया करे। संत ने बुढ़िया से कहा कि एक सप्ताह बाद आना। एक सप्ताह पूरा होने के बाद वह बुढ़िया उस बालक को लेकर संत के पास गई। साधु ने बालक को अपने पास बुलाकर, सिर पर हाथ फेरते हुए कहा–बेटे अधिक गुड़ खाना अच्छी बात नहीं है, अधिक गुड़ मत खाया करो। यह कहकर उसने बुढ़िया को विदा किया। घर आकर कुछ ही दिनों में बालक की गुड़ खाने की आदत छूट गई। बुढ़िया को बहुत आश्चर्य हुआ और वह उस साधु के पास गई और कहा– महाराज जी! यह बात तो आप पहले भी कह सकते थे। एक सप्ताह बाद क्यों बुलाया। संत ने कहा–माताजी! गुड़ की मिठास मेरी भी कमजोरी थी। जब मैंने स्वयं गुड़ खाना छोड़ दिया, तब ही मैंने बालक को गुड़ छोड़ने के लिए कहा।

शिक्षा–अच्छी बातों को पहले अपने जीवन में उतारना चाहिए।

4. **गधे की मूर्खता**

एक व्यापारी था। उसके पास एक गधा था, जिस पर सामान लादकर वह बाजार में बेचने ले जाता था। शहर जाने के रास्ते में एक नदी थी, जिसे व्यापारी को पार करना पड़ता था। एक बार नदी पार करते समय अचानक गधे का पैर फिसल गया। पानी में गिरने से उस पर नमक की बोरी का कुछ नमक पानी में घुल गया। जब गधा खड़ा हुआ तो वजन हल्का हो गया। गधा बड़ा प्रसन्न हुआ। अब तो वह रोजाना जान बूझकर नदी में फिसलता और अपना वजन कम कर लेता। एक दिन व्यापारी ने गधे पर रुई का बोरा लादा। आदतन गधा नदी में पहुँचते ही फिसल गया और देर तक पड़ा रहा। रुई पानी से गीली होकर और भारी हो गई। व्यापारी ने डंडे मार मार कर गधे को उठाया। रुई में पानी भर जाने से वजन बहुत अधिक हो गया था। एक एक कदम चलना गधे को भारी पड़ रहा था। उस दिन से गधे ने नदी में फिसलना छोड़ दिया।

सीख–कोई भी कार्य सोच समझकर करना चाहिए।

5. **गोपू की गाय**

एक गाँव में गोपू नाम का किसान रहता था। उसके पास एक गाय थी, जिसका नाम गौरी था। गोपू अपनी गाय की बहुत अच्छे से देखभाल करता था। गोपू की गाय बहुत सीधी थी, छोटे छोटे बच्चे भी उसके साथ खेलते रहते थे, लेकिन वह कभी किसी को चोट नहीं पहुँचाती थी। एक बार गाँव के कुछ स्त्री पुरुष बच्चे बस में सवार होकर देवी माँ के दर्शन के लिए जा रहे थे। सुहावना मौसम था, हल्की हल्की बूँदें गिर रही थीं। जैसे ही बस गाँव से निकल कर सड़क पर

पहुँची। गोपू की गाय दौड़कर आई और बस के सामने खड़ी हो गई। बहुत हटाने पर भी वह हटी नहीं। थोड़ी ही देर में ज़ोर की आँधी आई और सड़क किनारे खड़ा बरगद का विशालकाय वृक्ष टूटकर सड़क पर गिर गया। यह देखकर सभी लोग कहने लगे कि गोपू की गाय ने हम सबको बचा लिया। गोपू की गाय अब पूरे गाँव की गाय हो गई थी। हर घर में उसके खाने के लिए कुछ न कुछ आता था। गोपू अपनी गाय से बहुत प्रसन्न था।

शिक्षा– पशु पक्षियों में भी संवेदना होती है। हमें इनकी सुरक्षा और देखभाल करनी चाहिए।

6. **चिड़िया का बदला**

एक जंगल में पेड़ पर एक चिड़िया का घोंसला था, जिसमें वह अपने दो छोटे बच्चों के साथ रहती थी। एक हाथी आया और उसने चिड़िया का घोंसला अपनी सूँड़ से तोड़कर ज़मीन पर गिरा दिया। उसके दोनों बच्चे मर गए। चिड़िया बहुत दुखी हुई। उसने हाथी से बदला लेने की सोची। वह अपने मित्रों के पास गई और अपना दुख बताया। सभी ने मिलकर हाथी को सबक सिखाने का निश्चय किया। जब हाथी बैठा था, तो भौंरे ने उसके कान के पास आकर गुनगुनाना शुरू कर दिया। जल्दी ही हाथी को नींद आ गई। तभी कठफोड़वे ने उसकी आँखें फोड़ दीं। अंधा हाथी प्यास से व्याकुल हो गया। एक गड्ढे के पास चिड़िया का मित्र मेंढक टर्र टर्र करने लगा। हाथी वहाँ पानी समझकर गया और गड्ढे में गिरकर मर गया। इस प्रकार चिड़िया ने बलशाली हाथी को मारकर अपना बदला पूरा किया।

सीख– हमें बेवजह किसी को हानि या नुकसान नहीं करना चाहिए।

7. **पर्वत का घमंड**

एक जंगल में एक विशाल पर्वत था। एक दिन उस विशाल पर्वत ने जानवरों को देखा, जंगल को देखा और फिर खुद को देखा। उसे अपने आकार पर बहुत घमंड हुआ। उसने कहा– मैं सबसे शक्तिशाली हूँ, मैं तुम्हारा ईश्वर हूँ। पर्वत की यह बातें सुनकर सभी जानवरों को बहुत गुस्सा आया। घोड़े ने आगे बढ़कर कहा– ओ घमंडी पर्वत, अपने आप पर इतना घमंड मत कर। एक क्षण में तुम्हें दौड़कर पार कर सकता हूँ। लेकिन घोड़ा लड़खड़ाकर गिर गया। पर्वत खिलखिलाकर हँसा। इसी तरह हाथी, ऊँट, जिराफ सभी ने कोशिश की पर वे पहाड़ का कुछ नहीं बिगाड़ पाए। अब सभी जानवरों को अपना दोस्त चूहा याद आया। चूहा पर्वत के पास आया और घमंडी पर्वत को चुनौती दी। घमंडी पर्वत ने चूहे का खूब मज़ाक उड़ाया। चूहे ने मुस्कुराते हुए पर्वत में छेद बनाना प्रारंभ किया। अन्य चूहों ने भी पर्वत में छेद करना चालू कर दिया। घमंडी पर्वत घबरा गया और उसने सभी जानवरों से माफ़ी माँगी। इस तरह पर्वत के घमंड को एक छोटे चूहे ने तोड़ दिया।

सीख– सभी का सम्मान करना चाहिए, कोई छोटा बड़ा नहीं होता, सबका अपना महत्व होता है।

8. **दोस्ती की परख**

यह कहानी एक गाँव में रह रहे दो लड़कों अजय और विजय के बारे में है। वे आपस में दोनों दोस्त थे। एक ही विद्यालय और एक ही कक्षा में पढ़ते थे। विद्यालय जाने के रास्ते में एक जंगल पड़ता था। एक दिन की बात है, स्कूल से पढ़कर जब दोनों मित्र लौट रहे थे, तो जंगल के रास्ते में कुछ दूरी पर उन्हें एक भालू दिखाई दिया। अजय भागकर पेड़ पर चढ़ गया परंतु विजय को पेड़ पर चढ़ना नहीं आता था, उसने अपने मित्र से पेड़ पर चढ़ने में सहायता माँगी, लेकिन अजय ने कोई सहायता नहीं की। विजय ने सुना था कि भालू मरे हुए पर हमला नहीं करता है, यह सोचकर वह शीघ्र ही ज़मीन पर आँखें बंद करके लेट गया। जब भालू पास आया तो उसने अपनी साँसें भी रोक लीं। भालू ने उसे सूँघा और उसे मरा जानकर जंगल में चला गया।

भालू के जाने के बाद अजय पेड़ से उतरा और विजय से पूछा– भालू तुम्हारे कान में क्या कह रहा था। विजय ने कहा– भालू कह रहा था कि दोस्ती की परख संकट में ही होती है तथा कायरों और धोखेबाज मित्रों से दूर रहना चाहिए। अजय लज्जित हो अपने घर चला गया।

सीख– हमें अपने मित्रों का चुनाव सोच समझकर करना चाहिए।

9. **मोबाइल का सबक**

रोहन के पापा आज बाजार से एक नया मोबाइल फोन लाए थे। रोहन बहुत खुश था। रोहन ने अपने लिए गेम डाउनलोड किए। वह मोबाइल पर गेम खेलता था, सेल्फी लेता था। एक बार उसकी माँ गीले फर्श पर फिसल कर गिर पड़ीं। उसने रोहन को आवाज लगाई। रोहन ने कहा आया माँ, लेकिन पहले एक सेल्फी ले लूँ। यह सुनकर उसकी माँ को बहुत बुरा लगा, लेकिन माँ ने रोहन को सबक सिखाने का निश्चय किया।

एक दिन जब माँ बेटे पार्क में घूम रहे थे, रोहन मोबाइल पर गेम खेलते हुए माँ के साथ चल रहा था। अचानक रोहन को ठोकर लगी और गिर गया। माँ ने झट से मोबाइल को तो उठा लिया लेकिन रोहन को पड़े रहने दिया। रोहन दर्द से तड़प उठा। उसने माँ को आवाज लगाई। माँ ने कहा कि रुको अभी आई, पहले इन फूलों के साथ सेल्फी ले लूँ। रोहन को अपनी गलती का अहसास हो गया था। उसने माँ से माफी माँगी और भविष्य में मोबाइल अधिक न देखने की बात कही। रोहन को मोबाइल की लत से अच्छा सबक मिल चुका था।

सीख—अति हर चीज की बुरी होती है।

अध्याय–24 निबंध–लेखन

1. **सर्व शिक्षा अभियान**

प्रस्तावना—'सब पढ़ें सब बढ़ें' नारे को सार्थक करने के लिए सर्व शिक्षा अभियान का प्रारंभ भारत सरकार द्वारा किया गया है। यह एक प्राथमिक बुनियादी शिक्षा प्रदान करने का अभियान है।

प्रारंभ—सर्व शिक्षा अभियान भारत सरकार द्वारा सन् 2001 में शुरू किया गया था, जिसमें सभी 6–14 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा प्रदान की जाती है।

उद्देश्य—सर्व शिक्षा अभियान का उद्देश्य 2010 तक प्राथमिक शिक्षा को सार्वभौमिक बनाना था। इस अभियान के मुख्य उद्देश्य थे— गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और शिक्षा तक सभी बालकों की पहुँच।

लाभ—इस अभियान से अनेक लाभ हुए हैं, जिनमें बच्चों को मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा मिलती है तथा शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हुआ है।

अन्य सहायक कार्यक्रम—सर्व शिक्षा अभियान की मुख्य उपलब्धियाँ हैं—बच्चों का स्कूल में नामांकन बढ़ाकर शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार, स्कूल छोड़ने की दर कम होना। इसके अतिरिक्त वंचित समूह तक शिक्षा की पहुँच तथा लैंगिक असमानता कम होना इसकी उपलब्धियाँ हैं।

उपसंहार—सर्व शिक्षा अभियान से भारत में शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है, जिसमें अधिक बच्चों को स्कूल जाने और बेहतर शिक्षा प्राप्त करने में मदद मिली है।

2. **खेलो-कूदो, आगे बढ़ो**

प्रस्तावना—खेलों का मनुष्य जीवन में बहुत अधिक महत्व है, क्योंकि खेलने से हमारा शरीर स्वस्थ रहता है तथा मानसिक विकास होता है।

खेलों की आवश्यकता—खेलों से हमारे अंदर आत्मविश्वास, सहयोग, अनुशासन, साहस, एकता आदि मानवीय गुणों का भी विकास होता है। हमें नए-नए लोगों से मिलने और समझने का अवसर मिलता है। शारीरिक और मानसिक विकास के लिए खेलों की बहुत आवश्यकता है।

विभिन्न प्रकार के खेल—खेलों को मुख्यतः दो श्रेणियों में बाँटा जा सकता है— इनडोर गेम और आउटडोर गेम। घर के अंदर खेले जाने वाले खेल इनडोर गेम कहलाते हैं, जैसे— शतरंज, कैरम, लूडो, साँप-सीढ़ी, टेबिल टेनिस आदि।

घर से बाहर खेले जाने वाले खेल आउटडोर गेम (खेल) कहे जाते हैं। जैसे– क्रिकेट, फुटबॉल, बैडमिंटन, टेनिस, बास्केट बॉल, हॉकी एवं खो-खो, कबड्डी आदि।

खेलों का महत्व– खेलों का जीवन में बहुत महत्व है। यह न केवल शारीरिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक हैं, बल्कि मानसिक और सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। खेलों से आत्मविश्वास, टीमवर्क और अनुशासन जैसे जीवनोपयोगी कौशल विकसित होते हैं।

उपसंहार– खेलो, कूदो और आगे बढ़ो। यह एक नारा नहीं, बल्कि एक जीवनशैली है, जो स्वस्थ और खुशहाल जीवन जीने में मदद करती है। इसलिए खेलों को अपने जीवन का अनिवार्य हिस्सा बनाएँ और जीवन में आगे बढ़ें।

3. रेलवे प्लेटफॉर्म का दृश्य

प्रस्तावना– यातायात के साधनों में रेलगाड़ी का महत्वपूर्ण स्थान है। यह सस्ती, सुलभ और अधिक सुरक्षित सवारी है। रेलवे स्टेशन, जहाँ रेलगाड़ी रुकती है, वहाँ बने चबूतरों को रेलवे प्लेटफार्म कहते हैं।

रेलवे प्लेटफॉर्म का दृश्य– एक बार मैं अपने परिवार के साथ जयपुर जाने के लिए रेलवे स्टेशन पहुँचा, वहाँ प्लेटफार्म का दृश्य बहुत ही हलचल से भरा था। प्लेटफार्म पर गाड़ी में चढ़ने-उतरने वालों, अपने संबंधियों अथवा मित्रों को विदाई तथा अगवानी करने वालों की भीड़ लगी हुई थी। प्लेटफार्म पर भीड़ का बहुत शोर-शराबा था। इसके अतिरिक्त सामान उठाने, गाड़ी में रखने, उतारने वाले कुली भाग-दौड़ कर रहे थे। एक-दो भिखारी भी प्लेटफार्म पर दिखाई दे रहे थे। खाने-पीने के सामान की तथा दैनिक उपयोग की चीजों तथा पत्र-पत्रिकाओं और पुस्तकों की अनेक स्टाल लगी हुई थीं। कुछ लोग प्लेटफार्म पर बनी बैंचों पर बैठे थे, कुछ चहलकदमी कर रहे थे।

गाड़ी का आगमन– कुछ ही देर में जयपुर जाने वाली गाड़ी आने की घोषणा हुई। लोगों में चहल-पहल बढ़ गई। निर्धारित समय पर रेलगाड़ी प्लेटफॉर्म पर आ गई। यात्री डिब्बे में चढ़ने के लिए रेलगाड़ी की ओर लपके, उधर उतरने वाले यात्री भी डिब्बे से उतरने लगे। चढ़ने और उतरने वाले धक्का-मुक्की करने लगे। हम भी निर्धारित डिब्बे पर पहुँचे और थोड़ी मशक्कत के बाद अपनी सीट पर जाकर बैठ गए।

उपसंहार– रेलवे प्लेटफार्म का दृश्य बड़ा ही रोचक और आकर्षक होता है। यहाँ यात्रियों की भीड़ बहुत अधिक रहती है। कभी भीड़ कम होती है तो कभी रेलगाड़ी आने पर फिर भीड़ बढ़ जाती है। फिर से यात्रियों के चढ़ने-उतरने का दृश्य आरंभ हो जाता है।

4. बाढ़ का दृश्य

प्रस्तावना– जब धरती को पानी की प्यास लगती है, तब तो पानी की बूँद भी नहीं बरसती और कभी पानी इतना बरसता है कि नदियाँ उसे अपने किनारों के आँचल में समेट नहीं पाती और यही पानी बाढ़ के रूप में अभिशाप बन जाता है।

वड़ोदरा में बाढ़– भारी बारिश के कारण विश्वामित्री नदी उफान पर बहने लगी। लगातार बारिश से वड़ोदरा में बाढ़ के हालात बन गए। बाढ़-बारिश के चलते कई लोगों की मौत हो गई, हजारों लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाया गया। शहर के दर्जन भर से ज्यादा इलाकों में 4 से 5 फुट पानी भर गया।

बाढ़ में घिरे जीव-जन्तु– बाढ़ के कारण जीव-जन्तु खासकर पालतू मवेशी– गाय, भैंस, अन्य कुत्ते आदि जानवर बुरी तरह फँस गए। इसके अलावा साँप, कछुए और साही जैसे जानवर भी बाढ़ में घिर गए थे। अनेक जीव-जन्तु इस बाढ़ में डूबकर मर गए।

कालोनियों में मगरमच्छ– विश्वामित्री नदी जो वड़ोदरा से होकर गुजरती है, मगरमच्छों का घर है और बाढ़ के कारण वे नदी से बाहर निकलकर शहर की कालोनियों में फैल गए, जिनमें से कुछ 1[illegible] फीट तक लम्बे थे। जिससे स्थानीय लोगों में दहशत फैल गई। वन विभाग ने कई मगरमच्छों को नदी में पहुँचाया।

विभीषिका– बाढ़ के कारण बड़ोदरा में जान-माल की बहुत हानि हुई, बाढ़ की विभीषिका का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि लोग कई हफ्तों तक सामान्य स्थिति में नहीं आ पाए। बाढ़ के बाद फैली गंदगी, उससे उत्पन्न बीमारियों ने इस विभीषिका को और बढ़ा दिया।

उपसंहार– बाढ़ के कारण न केवल इंसानों को बल्कि जानवरों को भी अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। हमारे देश में प्रत्येक वर्ष कहीं न कहीं बाढ़ के कारण जान-माल की हानि होती रहती है। बाढ़ रोकने के लिए सुनियोजित प्रयास और प्रबंध किए जाएँ, ताकि बाढ़ की विभीषिका से बचा जा सके।

अध्याय–25 सड़क सुरक्षा एवं परिवेशीय सजगता

1. 'सड़क सुरक्षा' सुरक्षित यातायात से सम्बन्धित एक उपाय है जिसमें सड़क दुर्घटना में लोगों को चोट लगने और उनसे मौत होने आदि घटनाओं को कम करने का प्रयास किया जाता है। इस हेतु यातायात के विभिन्न नियमों का पालन करने की अपेक्षा की जाती है ताकि यातायात सर्वाधिक सुरक्षित हो। परिवहन हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। ऐसी दशा में 'सड़क सुरक्षा' से सम्बन्धित नियमों का पालन करना प्रत्येक व्यक्ति के लिए अनिवार्य है।
2. (क) पैदल चलते समय हमें सड़क के फुटपाथ पर चलना चाहिए।
   (ख) सड़क पार करते समय हमें ट्रैफिक लाइट में लाल बत्ती होने पर जेब्रा क्रॉसिंग से सड़क पार करनी चाहिए।
3. ट्रैफिक लाइट में पीली, लाल तथा हरे रंग की तीन बत्तियाँ होती हैं। पीली बत्ती लाल बत्ती के होने का संकेत देती है। लाल बत्ती होने पर वाहन रोकना पड़ता है। हरी बत्ती चालक को आगे बढ़ने का संकेत देती है।
4. सड़क पर बनी सफेद और काली धारी वाली पट्टियों को 'जेब्रा क्रॉसिंग' कहते हैं। इसके ऊपर से पैदल यात्री सड़क पार करते हैं।
5. 'सड़क की भाषा' से आशय यातायात के नियमों का ज्ञान होने से है। सड़क पर अनेक संकेतक चिह्न बने होते हैं। हमें उनके बारे में जानकारी होनी चाहिए, तभी हम सुरक्षित यात्रा कर सकते हैं।
6. सीट बेल्ट दुर्घटना की स्थिति में वाहन चालक एवं सवारी को आगे की टक्कर होने से रोकती है। यह वाहन चालक व सवार सभी व्यक्तियों के लिए महत्वपूर्ण है।
7. (क) 101 पर (ख) 108 पर (ग) 100 पर। (घ) हमें पुलिस और एंबुलेंस को सूचना देनी चाहिए तथा घायलों की प्राथमिक चिकित्सा करनी चाहिए।
8. (क) ट्रैफिक लाइट पर खड़े रहकर इंजन न बंद करने से ईंधन की खपत बढ़ती है तथा वायु प्रदूषण भी होता है।
   (ख) आगे की गाड़ी व अपनी गाड़ी के बीच एक गाड़ी की दूरी रखनी चाहिए।
9. गाड़ी चलाते समय मोबाइल फोन पर बातें करने से चालक का ध्यान बातों की ओर चला जाता है। फलतः वाहन से नियंत्रण हटते ही प्रायः दुर्घटना हो जाती है। अतः वाहन चलाते समय मोबाइल पर बातें नहीं करनी चाहिए।
10. मुझे अपने दादाजी और विज्ञान अध्यापक महोदय से यह जानकारी मिली कि सड़क चिह्न पूरी दुनिया में एक जैसे होते हैं। उनके द्वारा मुझे यह भी ज्ञात हुआ कि विभिन्न देशों में अलग-अलग भाषाएँ बोली जाती हैं। ये भाषाएँ प्रायः वाहन चालकों को समझ में नहीं आतीं। दूसरे शब्दों में सड़क के नियमों को समझने में भाषाई विभिन्नता रुकावट बन जाती है। इसी कारण सड़क के नियमों को संकेत रूप में समझाने के लिए पूरे विश्व में सड़क चिह्न एक जैसे होते हैं।
11. पैदल यात्रा पारपथ को जेब्रा क्रॉसिंग इसलिए कहते हैं क्योंकि सड़क पर जिस जगह यह क्रॉसिंग होती है वहाँ वैसी ही क्षैतिज धारीदार पट्टियाँ बनी होती हैं जैसी जेब्रा पशु के शरीर पर बनी होती हैं। इस प्रकार जेब्रा क्रॉसिंग का आशय धारीदार पट्टियों से होता है।

12. विद्यालय जाते समय और घर वापस आते समय हम सड़क के जिन चिह्नों को देखते हैं उनमें से कुछ के अर्थ निम्न हैं—
(i) आगे मोड़ है। (ii) प्रवेश निषेध। (iii) हॉर्न प्रतिबंधित। (iv) आगे विद्यालय है। (v) पैदल यात्रा प्रतिबंधित है। (vi) गति अवरोधक। (vii) गति सीमा। (viii) यू टर्न निषेध (ix) ओवरटेक निषेध।

13. हमें यातायात के निम्नलिखित नियमों का पालन करना चाहिए—

1. हमें सदैव सड़क पर बायीं ओर ही चलना चाहिए।

2. पैदल चलने की दशा में सड़क हमेशा जेब्रा क्रॉसिंग से ही पार करनी चाहिए।

3. सड़क संकेतों एवं चिह्नों को देखकर उनके द्वारा दिए गए सांकेतिक निर्देशों का सावधानीपूर्वक पालन करना चाहिए।

4. दो पहिया वाहन चलाते समय हेलमेट अवश्य लगाना चाहिए।

5. चार पहिया वाहन चलाते समय सीट बेल्ट अवश्य बाँधनी चाहिए। वाहनों को निश्चित किए गए स्थान पर ही पार्क (खड़ा) करना चाहिए।

14. सड़क पार करते समय हमें सर्वप्रथम दाएँ, बाएँ यह देखना चाहिए कि कहीं कोई वाहन तो नहीं आ रहा है। इसके बाद सड़क के विभिन्न संकेत चिह्नों को देखकर सावधानीपूर्वक सड़क पार करनी चाहिए। पैदल होने पर जेब्रा क्रॉसिंग से ही सड़क पार करनी चाहिए।

15. 1. जब हम पैदल हों तो ध्यानपूर्वक चलना चाहिए। सामने से आ रहे यातायात पर नजर रखनी चाहिए, जहाँ ड्राइवर नहीं देख पाए वहाँ सड़क पार करने से बचना चाहिए।
2. डिवाइडर अथवा रेलिंग के ऊपर से कभी नहीं कूदना चाहिए।
3. यदि हम साइकिल से यात्रा कर रहे हैं तो साइकिल पर क्षमता से अधिक भार नहीं लादना चाहिए, यदि सड़क पर साइकिल मार्ग हो तो केवल उसका ही उपयोग करना चाहिए अथवा हमेशा बायीं ओर चलना चाहिए।
4. सड़क पर मुड़ते समय यातायात पर दृष्टि डालनी चाहिए एवं हाथ से मुड़ने वाली दिशा में संकेत करना चाहिए।
5. यदि हम बस से विद्यालय जा रहे हों तो शरीर का कोई भी अंग खिड़की से बाहर नहीं निकालना चाहिए, शोरगुल कदापि नहीं करना चाहिए। इससे चालक का ध्यान बँटता है और दुर्घटना की सम्भावना बढ़ जाती है।

16. त्रिभुजाकार चिह्न	वर्णन
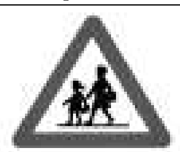	यह चिह्न वाहन को सावधानी से चलाने की चेतावनी देता है और यह दर्शाता है कि आगे थोड़ी दूरी पर स्कूल है। अतः गति धीमी रखें।
	यह चिह्न दर्शाता है कि आगे जेब्रा क्रॉसिंग है, पदयात्री सड़क पार करते हैं। अतः वाहन की गति नियंत्रित करें।

17. 1. प्रवेश निषेध, 2. हॉर्न प्रतिबंधित, 3. आगे विद्यालय है, 4. पैदल यात्रा प्रतिबंधित, 5. गति अवरोधक, 6. गति सीमा।

18. विद्यालय में जल का दुरुपयोग करने वाले छात्रों को हम समझायेंगे कि उन्हें जल का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए क्योंकि जल ही जीवन है, जल का सदुपयोग करना चाहिए। टंकी के नलों को खुला छोड़कर जल व्यर्थ में फैलाना नहीं चाहिए। क्योंकि जल पर्याप्त नहीं रहेगा तो हमारा जीवन संकट में पड़ जायेगा। हमारे दैनिक कार्य नहीं हो सकेंगे।

19. घर के पास गंदा पानी एकत्रित होने से मच्छरों का आतंक बढ़ जाएगा। क्योंकि मच्छर पानी में ही अण्डे देते हैं। ऐसी दशा में मलेरिया एवं डेंगू बुखार होने की सम्भावना अत्यधिक बढ़ जाएगी क्योंकि ये दोनों रोग मच्छरों के काटने से ही होते हैं। इसके निदान हेतु हम दो तरह का उपाय करेंगे—

1. एकत्रित गंदे जल में मिट्टी का तेल डाल देंगे ताकि उसमें पनप रहे मच्छर नष्ट हो जाएँ।
2. गंदे पानी की उचित निकासी के लिए अभिभावकों की मदद से सम्बन्धित व्यक्ति / विभाग से बात करेंगे।

20. हमें खाना खाने से पहले हाथ को साबुन से अच्छी तरह धोने के लिए इसलिए कहा जाता है क्योंकि जब हम काम कर रहे होते हैं तो हमारा हाथ अलग-अलग वस्तुओं, स्थानों आदि पर पहुँचता है। इन वस्तुओं, स्थानों पर विद्यमान विभिन्न प्रकार के हानिकारक जीव हमारे हाथों में चिपक जाते हैं। ये शरीर के अन्दर पहुँचकर घातक नुकसान पहुँचा सकते हैं। इसीलिए साबुन से हाथ को अच्छी तरह धोने के लिए कहा जाता है।

21. बाजार से विभिन्न वस्तुएँ/सब्जियों/फलों आदि को पॉलिथीन बैग में लाना उचित नहीं है। इसके लिए हमें घर से कपड़े का थैला ले जाना चाहिए। पॉलिथीन का अपघटन नहीं हो पाता इस कारण मृदा के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। इसका प्रभाव अन्नोत्पादन पर पड़ता है। इसके अलावा जानवर आदि भी इसे खा जाते हैं जिसके कारण उनकी मृत्यु तक हो जाती है।

22. बिजली बचाने के लिए हम अपने स्तर से निम्नलिखित प्रयास कर सकते हैं—

(क) जब आवश्यक हो तभी बल्ब, पंखे आदि जलाएँ/चलाएँ उन्हें अनावश्यक जलता हुआ/चलता हुआ न छोड़ें।

(ख) यदि सीमित रोशनी की आवश्यकता हो तो अधिक वोल्टेज वाले बल्ब का प्रयोग न करें।

(ग) बिजली का अपव्यय न हो इस हेतु ISI मार्क उपकरणों का इस्तेमाल करने के लिए अभिभावक से कहेंगे।

23. हमें भलीभाँति मालूम है कि स्वस्थ जीवन के लिए स्वच्छ पर्यावरण अनिवार्य है। इसे स्वच्छ रखना हमारी महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी है। इसकी स्वच्छता हेतु हम निम्नलिखित प्रयास कर सकते हैं—

(1) एक पेड़ लगाकर उसे तैयार करने का संकल्प लें।

(2) न तो जल को दूषित करें न करने दें।

(3) विवाह व अन्य समारोहों में ध्वनि विस्तारक यन्त्रों से ध्वनि प्रदूषण होता है। इस हेतु लोगों को जागरूक करेंगे।

(4) कूड़ा-कचरे को निर्धारित स्थान पर ही इकट्ठा करने के लिए लोगों को प्रेरित करेंगे।

24. स्वच्छ भारत अभियान में हम अपने स्तर से यह योगदान दे सकते हैं कि विद्यालय/गाँव के साथियों के साथ अलग-अलग टोली बनाएँ और आस-पास के क्षेत्रों की साफ-सफाई करें। कूड़े-कचरे को निर्धारित स्थान पर एकत्रित कर उसका उचित निस्तारण करवाएँ। इस तरह किया गया छोटा-छोटा प्रयास अन्ततोगत्वा बहुत बड़ी सफलता अर्जित करेगा।

25. 'नमामि गंगे' योजना केन्द्र सरकार द्वारा गंगा नदी के प्रदूषण को समाप्त करने के लिए शुरू की गई है। इसके तहत नदी के ऊपरी सतह की सफाई से लेकर बहते हुए ठोस कचरे की समस्या को हल करने, घाटों के निर्माण, मरम्मत और आधुनिकीकरण का लक्ष्य शामिल है। यद्यपि गंगा नदी की सफाई इसके सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व और विभिन्न उपयोगों के कारण बहुत कठिन है किन्तु बेहतर भविष्य के लिए ठोस कदम उठाने ही पड़ेंगे।

26. ई-प्रदूषण—इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों (मोबाइल फोन, टी.वी., रेफ्रिजरेटर आदि) के कचरे से उत्पन्न होने वाला प्रदूषण, ई-प्रदूषण कहलाता है। इस कचरे के कारण पर्यावरण में विभिन्न प्रकार की जहरीली गैसें बनती हैं जो स्वास्थ्य पर बहुत बुरा प्रभाव डालती हैं। इससे बचने के लिए ई-कचरे का वैज्ञानिक प्रबन्धन आवश्यक है अन्यथा धीरे-धीरे यह विकराल रूप धारण कर लेगा।

हिन्दी

व्याकरण एवं रचना

Teachers' Manual

कक्षा 8

हिन्दी व्याकरण एवं रचना कक्षा - 8

अध्याय–1 संज्ञा

1. क. (अ) ख. (स) ग. (द) घ. (अ) ङ. (ब) च. (स)
2. संज्ञा—किसी प्राणी, वस्तु, स्थान तथा भाव के नाम का बोध कराने वाले शब्द संज्ञा कहलाते हैं। उदाहरण—राम, मकान, आगरा आदि।
3. संज्ञा के तीन भेद होते हैं—(i) व्यक्तिवाचक संज्ञा (ii) जातिवाचक संज्ञा (iii) भाववाचक संज्ञा।
4. जातिवाचक संज्ञा के दो उपभेद हैं—(i) द्रव्यवाचक संज्ञा (ii) समूहवाचक संज्ञा।
5. **जातिवाचक संज्ञा**—जिन संज्ञा शब्दों से किसी प्राणी, वस्तु या स्थान की सामूहिकता या वर्ग का बोध होता है, वे जातिवाचक संज्ञा शब्द कहलाते हैं।
   उदाहरण—1. भक्तों की मंडली भजन गा रही है। 2. कलम मेज पर है।
6. **व्यक्तिवाचक संज्ञा**—जिन संज्ञा शब्दों से किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान का ज्ञान होता है, उन शब्दों को व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे—कुतुबमीनार, क्रिकेट, महात्मा गाँधी।
7. **भाववाचक संज्ञा**— जिन संज्ञा शब्दों के द्वारा प्राणियों, वस्तुओं तथा स्थानों के गुण, दोष, धर्म, दशा, मनोभाव, कार्य आदि का बोध होता है, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं। सामान्यतः गुण, प्रकृति, अवस्था, क्रिया व्यापार के मूल रूप भाववाचक संज्ञा में सम्मिलित किए जाते हैं। जैसे— लम्बाई, वृद्धावस्था, जवानी, नम्रता, क्रोध, मिठास, ठंडक, दया, करुणा, शत्रुता, मित्रता आदि।
8. (क) लालिमा (ख) हरीतिमा (ग) सुंदरता (घ) स्वास्थ्य।
9. (क) अपनापन (ख) परायापन (ग) ममत्व (घ) निजत्व।
10. (क) मनुष्यता (ख) जवानी (ग) वकालत (घ) लड़कपन।
11. (क) पिसाई (ख) अपनापन (ग) पढ़ाई (घ) बुढ़ापा।
12. (क) कृपणता (ख) बचपन (ग) गुरुता (घ) गंध।
13. (क) पंकज—व्यक्तिवाचक संज्ञा, छात्र— जातिवाचक संज्ञा।
    (ख) गंगा— व्यक्तिवाचक संज्ञा, नदी— जातिवाचक संज्ञा।
14. व्यक्तिवाचक संज्ञा— भास्कर, भारत, ललाट।
    जातिवाचक संज्ञा— नरेश, गिरि, वन, देश, विषय।
    भाववाचक संज्ञा— एकता, मन, शांति, प्रेम।
15. (क) पंडित जी— जातिवाचक संज्ञा।
    (ख) कौटिल्य— व्यक्तिवाचक संज्ञा।
    (ग) नाविक— जातिवाचक संज्ञा।
    (घ) राजगुरु— जातिवाचक संज्ञा।
16. (i) अंबिका, सौभाग्य एवं वंश पढ़ाई में होशियार हैं।
    (ii) दिल्ली, मुंबई और कोलकाता बड़े नगर हैं।
    (iii) चीन, पाकिस्तान भारत के पड़ोसी देश हैं।
17. (i) सुभाष के व्यवहार में नम्रता और मधुरता है।
    (ii) बुद्ध दया, करुणा के अवतार थे।
    (iii) शत्रुता और मित्रता बढ़ने से बढ़ती है।

18. (i) फसलों को टिड्डी दल खा गया।
(ii) सुंदरवन में जानवरों की सभा हुई।
(iii) बंदरों की भीड़ ने बगीचे में धावा बोल दिया।
(iv) कृत्रिम उपग्रह कक्षा में स्थापित हो गया।

अध्याय–2 सर्वनाम

1. क. उसका ख. अपने ग. तुम्हारी घ. उन्हें

2. **सर्वनाम**– संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्द, सर्वनाम शब्द कहलाते हैं। जैसे– उसको, मुझे, यह, तुम, कोई आदि।

3. सर्वनाम के छह प्रमुख भेद हैं–

1. पुरुषवाचक सर्वनाम	– मुझे	2. निश्चयवाचक सर्वनाम	– यह
3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम	– कुछ	4. संबंधवाचक सर्वनाम	– जिसको
5. प्रश्नवाचक सर्वनाम	– किसे	6. निजवाचक सर्वनाम	– स्वयं

4. प्रश्नवाचक सर्वनाम

5. निजवाचक सर्वनाम

6. निजवाचक सर्वनाम

7. बहुवचन– आप कहाँ से आए हैं?

8. वाक्य में संज्ञा के दोहराव से बचने के लिए सर्वनाम शब्द प्रयोग होते हैं। भाषा को सहज और प्रभावी बनाने के लिए, लेखन को अधिक आकर्षक बनाने के लिए तथा वाक्य को छोटा और संक्षिप्त बनाने के लिए सर्वनामों का प्रयोग किया जाता है।

9. (क) मुझे तुम्हारे घर जाना है।
(ख) जिस आदमी ने तुम्हें देखा था, वह चला गया।
(ग) तुम्हें मेरी माताजी बुला रही हैं।
(घ) मुझे आज खाना नहीं खाना है।
(ङ) जिसने खाना खाया, वही पैसा देगा।
(च) मेरे घर का पता किसी को नहीं चले।

10. (क) जो (ख) स्वयं (ग) उन्हें (घ) आप (ङ) मुझे (च) जो, वह

11. (क) स्वयं– निजवाचक (ख) मेरे– निजवाचक, कौन सो– प्रश्नवाचक
(ग) जो, सो– संबंधवाचक (घ) कोई– अनिश्चयवाचक (ङ) यह– निश्चयवाचक, हमारा– निजवाचक

12. **परिभाषा**– लिंग शब्दों के वे रूप हैं जिनके द्वारा संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि शब्दों की स्त्री या पुरुष जाति का बोध होता है।

13. हिंदी भाषा में लिंग दो प्रकार के होते हैं
1. पुल्लिंग 2. स्त्रीलिंग

14. सदैव पुल्लिंग– तोता, मच्छर, खटमल, झींगुर, बिच्छू।

15. (क) साध्वी (ख) स्त्री (ग) कवयित्री (घ) कुमारी (ङ) नागिन (च) सेविका (छ) विधवा (ज) विदुषी

16. (क) रोटियाँ किसने खाईं? (ख) यहाँ गुड़ियाँ बेची जाती हैं।
(ग) मिठाइयों पर मक्खियाँ बैठी हैं। (घ) उल्लू अँधेरे में भी देख सकते हैं।
(ङ) भेड़ें मैदान में चर रही हैं। (च) वे लड़कियाँ अच्छा खेलती हैं।
(छ) नानी ने मुझे कहानियाँ सुनाईं।

17. (क) से— अपादान कारक (ख) का— संबंध कारक
(ग) पर— अधिकरण कारक (घ) से— अपादान कारक
(ङ) से— अपादान कारक (च) से— करण कारक
(छ) की— संबंध कारक (ज) ने— संबंध कारक

18. **करण कारक**— वाक्य में क्रिया को संपन्न करने के लिए जिस साधन का प्रयोग किया जाता है, वह करण कारक कहलाता है। इसका परसर्ग 'से' अथवा 'के द्वारा' होता है, किंतु यह चिह्न लुप्त होकर भी लिखा और बोला जाता है। जैसे— राम प्रतिदिन गेंद से खेलता है।

19. (क) जंगल में अनेक मोर थे। (ख) इन साधुओं को भोजन कराओ। (ग) मुझको किसने बुलाया। (घ) यह पुस्तक अभी तक नहीं पढ़ी है। (ङ) डॉक्टर से मरीज के लिए दवा लाओ।

अध्याय–3 विशेषण

1. क. (अ) ख. (स) ग. (द) घ. (स) ङ. (ब)
2. क. (ब) ख. (अ) ग. (स) घ. (अ) ङ. (द)
3. क. दयालु ख. धार्मिक ग. ऐतिहासिक घ. लंबाई ङ. मर्दाना च. गर्म छ. रक्षक
4. **विशेषण**— संज्ञा तथा सर्वनाम शब्दों की विशेषता प्रकट करने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं।
5. **गुणवाचक विशेषण**— जिन विशेषण शब्दों से संज्ञा तथा सर्वनाम शब्दों के गुण, दोष, दशा, स्वभाव, रंग, अवस्था, आकार आदि का बोध होता है, उन्हें गुणवाचक विशेषण कहते हैं।
6. **परिमाणवाचक विशेषण**— जिन विशेषण शब्दों से संज्ञा तथा सर्वनाम शब्दों के परिमाण (नाप, तोल आदि) का बोध होता है, वे परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं।
7. **संख्यावाचक विशेषण**— जिन विशेषण शब्दों द्वारा संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध होता है, उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। जैसे— पाँच आम, कुछ अंडे, तीसरा मकान, सारे लड़के आदि।
8. (क) विशेषण— ऊँची, विशेष्य— दुकान। विशेषण— फीके, विशेष्य— पकवान।
(ख) विशेषण— नीले, विशेष्य— घोड़ा। विशेषण— लाल, विशेष्य— लगाम।
9. (क) लीटर (ख) कितने (ग) थोड़ी सी (घ) दो मीटर (ङ) कुछ (च) थोड़ा सा (छ) कम (ज) किलो
10.

	विशेषण	**भेद**	**संबंधित विशेष्य**
(क)	गहन	गुणवाचक	अंधकार
(ख)	दर्शनीय	गुणवाचक	स्थान
(ग)	थोड़ा सा	अनिश्चित परिमाणवाचक	घी
(घ)	एक	संख्यावाचक	फूल
(ङ)	मनोरंजक	गुणवाचक	कहानी
(च)	एक दर्जन	संख्यावाचक	केले

11. (क) यह, हमारी (ख) यह, किसका (ग) उस, कोई (घ) यह, तुम्हारा (ङ) यह, इसे
12. तुलना की दृष्टि से विशेषण की तीन अवस्थाएँ होती हैं—
1. मूलावस्था 2. उत्तरावस्था 3. उत्तमावस्था
13. (क) अच्छा— अधिक अच्छा, बहुत अच्छा
(ख) मधुर— मधुरतर, मधुरतम
(ग) गुरु— गुरुतर, गुरुतम

(घ) बुरा– अधिक बुरा, बहुत बुरा

(ङ) निम्न– निम्नतर, निम्नतम

(च) श्रेष्ठ– श्रेष्ठतर, श्रेष्ठतम

अध्याय–4 क्रिया

1. क. (द) ख. (द) ग. (अ) घ. (स) ङ. (अ) च. (अ) छ. (स) ज. (द) झ. (अ) ञ. (ब)
2. रोती है– अकर्मक क्रिया।
3. खेलता है।
4. चुन लो – सकर्मक क्रिया।
5. प्रेरणार्थक क्रिया।
6. चले जाओ।
7. **सकर्मक तथा अकर्मक क्रिया में अंतर**– जिस वाक्य में क्रिया के साथ कर्म उपस्थित न हो, अकर्मक क्रिया कहते हैं, जबकि वह क्रिया जिसमें कर्म उपस्थित हो, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं।
8. सामान्य क्रिया एक ही क्रियापद से बनी होती है, जबकि संयुक्त क्रिया दो या दो से अधिक क्रियापदों के योग से बनती है।
9. **नामधातु क्रिया**– क्रिया की रचना के अलावा धातुओं में प्रत्यय जोड़ने पर अन्य जो क्रियाएँ बनती हैं, उन्हें नामधातु क्रिया कहते हैं।
10. प्रेरणार्थक क्रिया में, कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी और को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है, जबकि नामधातु क्रिया संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण शब्दों से बनती है।
11. **वाच्य**– क्रिया का वह रूप जो कर्ता, कर्म, भाव के अनुसार परिवर्तित होता है, वाच्य कहलाता है।
    जैसे– राम पढ़ाई करता है। इस वाक्य में क्रिया कर्ता के अनुसार परिवर्तित होती है।
    वाच्य के तीन भेद होते हैं– कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य, भाववाच्य।
12. **कर्तृवाच्य**– क्रिया के जिस रूप से पता चले कि वह (क्रिया) कर्ता के अनुसार परिवर्तित होती है कर्तृवाच्य कहलाती है। जैसे– शालिनी गा रही है।
13. **कर्मवाच्य**– कर्म के लिंग एवं वचन के अनुसार क्रिया में होने वाले परिवर्तन को कर्मवाच्य कहते हैं।
    जैसे– मेरी पुस्तक चुरा ली गई।
14. **भाववाच्य**– भाव के अनुसार क्रिया में होने वाले परिवर्तन को भाववाच्य कहते हैं। जैसे– उससे पढ़ा नहीं जा रहा है।
15. (अ) सामान्य क्रिया (ब) संयुक्त क्रिया (स) पूर्वकालिक क्रिया (द) संयुक्त क्रिया (य) प्रेरणार्थक क्रिया (र) पूर्वकालिक क्रिया (ल) संयुक्त क्रिया (व) पूर्वकालिक क्रिया (श) संयुक्त क्रिया (ष) प्रेरणार्थक क्रिया।
16. (क) मजदूर द्वारा लकड़ी काटी जाती है।
    (ख) नूपुर द्वारा फूल तोड़े जाएँगे।
    (ग) माता द्वारा खाना खाया गया।
    (घ) हमारे द्वारा भगतसिंह नहीं भुलाये जा सकते।
    (ङ) मुझसे पत्र नहीं पढ़ा जाता है।
    (च) चोरों को पुलिस द्वारा पकड़ा गया।
17. (क) वह गीत गाएगा।
    (ख) अध्यापक ने अंग्रेजी नहीं पढ़ाई थी।

(ग) अध्यापक ने बच्चों को पीटा।

(घ) किसान ने खेत नहीं जोते।

(ङ) सुरेन्द्र ने यात्राएँ बोली की।

18. (क) मैं चल नहीं सकता हूँ।

(ख) रानी नहीं गाती है।

(ग) मैं काम नहीं कर सकता हूँ।

(घ) मदन चित्र नहीं बनाता है।

(ङ) राम पढ़ नहीं रहा है।

(च) मैं नहीं करूँगा।

अध्याय–5 उपसर्ग

1. क. (ब) ख. (द) ग. (द) घ. (ब) ङ. (ब) च. (ब) छ. (स) ज. (ब) झ. (अ) ञ. (अ)
2. क. अनुदेश ख. उपयोग ग. उपयोग घ. सहयोग।
3. उपसर्ग—वे शब्दांश जो मूल शब्द के पूर्व आकर जुड़ते हैं और उनके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं, उपसर्ग कहलाते हैं। उपसर्ग मुख्यतः चार प्रकार के होते हैं– (i) संस्कृत उपसर्ग (ii) हिन्दी उपसर्ग (iii) आगत उपसर्ग (iv) संस्कृत के अव्यय।
4. उपसर्ग का भाषा में बहुत महत्व है। उपसर्ग शब्दों के अर्थ को विस्तृत करता है, नए शब्द बनाता है और भाषा को अधिक प्रभावी बनाता है। जैसे– प्र + हार = प्रहार। अनु + करण = अनुकरण।
5. विदेशी उपसर्ग वे शब्दांश होते हैं जो हिंदी भाषा में विदेशी भाषाओं, जैसे कि अरबी, फारसी, उर्दू और अंग्रेजी से आए हैं और किसी शब्द के आगे लगकर उसके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं। जैसे– बे, गैर बे + वफा = बेवफा, गैर + कानूनी = गैरकानूनी।
6. संस्कृत भाषा के चार अव्यय जो उपसर्ग के रूप में हिंदी भाषा में प्रयोग होते हैं– अधः, बहिर्, सत्, पुरा।

अर्थ और उनसे निर्मित दो शब्द

अधः– नीचे – अधःपतन, अधोगति।

बहिर्– बाहर– बहिर्गमन, बहिर्गत।

सत्– श्रेष्ठ– सज्जन, सत्कर्म।

पुरा– प्राचीन– पुराकाल, पुरातन।

7.	अ	अबोध, अमर	अति	अतिशय, अत्यधिक
	अध	अधपका, अधभुना	निर्	निराकरण, निर्वाह
	निस्	निस्सार, निस्तेज	उन्	उन्नीस, उन्मत्त
	खुश	खुशबू, खुशदिल	दुर्	दुर्बल, दुर्लभ
	दुस्	दुस्साहस, दुष्कर्म	परा	पराजय, पराक्रम
8.	अनंत	अन + अंत	परीक्षा	परि + ईक्षा
	प्रस्थान	प्र + स्थान	अनुपयोग	अन + उपयोग
	नीरोग	नि + रोग	संकल्प	सम् + कल्प
	नास्तिक	न + आस्तिक	परिच्छेद	परि + छेद

अध्याय–6 प्रत्यय

1. क. (स) ख. (द) ग. (अ) घ. (द) ङ. (द) च. (ब) छ. (स) ज. (द) झ. (द) ञ. (स)
2. क. आचारी ख. गर्वीला ग. धोखेबाज घ. भिखारी ङ. लड़ाई
3. परिभाषा— वे शब्दांश जो किसी शब्द के अंत में जुड़कर नयी विशेषता उत्पन्न कर देते हैं, प्रत्यय कहलाते हैं। जैसे— 'हिरन' शब्द में 'ई' प्रत्यय जोड़ने पर हिरनी बनता है, जो मूल शब्द का उल्टा अर्थ देता है। इसी प्रकार बल शब्द में 'हीन' प्रत्यय जोड़ने पर विपरीतार्थक शब्द बलहीन प्राप्त होता है।
   प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं— 1. कृत् प्रत्यय तथा 2. तद्धित प्रत्यय।
4. क. पन ख. इत ग. इया घ. गार ङ. आई च. आइन
5. (क) त्व— मनुष्यत्व, गुरुत्व (ख) गीर— राहगीर, दामनगीर
   (ग) आनी— देवरानी, नौकरानी (घ) इया— चिड़िया, बिंदिया
   (ङ) ईय— राष्ट्रीय, जातीय (च) ईला— रंगीला, बर्फीला
   (छ) आवट— सजावट, बनावट (ज) ता— सफलता, सुंदरता
   (झ) औती— बपौती, मनौती (ञ) आहट— घबराहट, कड़वाहट
6.

	शब्द	उपसर्ग	प्रत्यय
(क)	वैज्ञानिक	वि	इक
(ख)	बेरोजगारी	बे	गारी
(ग)	अमानवीय	अ	ईय
(घ)	निर्बलता	निर्	ता
(ङ)	अनपढ़पन	अन	पन
(च)	अपमानित	अप	इत
(छ)	असामाजिक	अ	इक

7. (क) दार, ई (ख) वाला, ई (ग) आवट, ई (घ) ईय, ता (ङ) इक, ता
8. भाषा में प्रत्यय का बहुत महत्त्व है। प्रत्यय, जो शब्द के अंत में जुड़कर नए शब्द बनाते हैं, भाषा को समृद्ध और अर्थपूर्ण बनाते हैं। प्रत्यय, भाषा को न केवल अधिक विस्तृत और प्रभावी बनाते हैं, बल्कि शब्दों के अर्थ को गहराई और विशिष्टता भी प्रदान करते हैं। जैसे— कला + कार = कलाकार। सुंदर + ता = सुंदरता।
9.

	शब्द	उपसर्ग	प्रत्यय	मूल शब्द
(क)	निरीह	निर्	—	ईह
(ख)	भावित	—	इत	भाव
(ग)	आर्थिक	—	इक	अर्थ
(घ)	उपहार	उप	—	हार
(ङ)	अनंत	अन	—	अंत
(च)	पौराणिक	—	इक	पुराण
(छ)	गौरव	—	अ	गुरु
(ज)	अत्यंत	अति	—	अंत
(झ)	अध्यादेश	अधि	—	आदेश
(ञ)	नाटक	—	अक	नट
(ट)	आध्यात्मिक	अधि	इक	आत्मन

(ठ) न्यून	नि	—	ऊन
(ड) निर्धन	निर्	—	धन
(ढ) यौगिक	इक	—	योग
(ण) संसार	सम्	—	सार
(त) बालक	—	क	बाल
(थ) प्रशासन	प्र	—	शासन
(द) दूरी	—	ई	दूर
(ध) अप्रिय	अ	—	प्रिय
(न) भूखा	—	आ	भूख
(प) नैतिक	—	इक	नीति
(फ) आहार	आ	—	हार
(ब) लड़ना	—	ना	लड़
(भ) निर्बल	निर्	—	बल
(म) विदित	वि	इत	विद

10. (क) अमेरिकन – अमेरिका – इन
(ख) सिल्की – सिल्क – ई
(ग) क्यूनाल – क्यूनर – ल
(घ) यूरोपियन – यूरोप – इयन
(ङ) हिंदुइज्म – हिंदु – इज्म
(च) सोशलिस्ट – सोशल – इस्ट

11. अभिमानी, अपमानित, परिपूर्णता, बदचलनी, निर्दयी, अनजाना, सुलभता, निर्बुद्धि, कलाकार, दुस्साहसी।

अध्याय–7 अव्यय

1. क. (ब) ख. (अ) ग. (अ) घ. (ब) ङ. (द) च. (स)
2. क. (स) ख. (द) ग. (ब) घ. (ब) ङ. (अ) च. (ब)
3. क. और ख. हाँ ग. सदा घ. के पास ङ. यहाँ च. अतः छ. तक ज. में झ. इसलिए ञ. लेकिन, नहीं जाएगा।
4. **वाक्य**– तुम आज दिनभर सोते ही रहोगे।
5. वह हाथी तेजी से दौड़ा मानो उसके पीछे शेर दौड़ रहा हो।
6. 'के पश्चात' एक संबंधबोधक अव्यय है। वाक्य– भोजन के पश्चात् हम घूमने गए।
7. **परिमाणवाचक अव्यय**– थोड़ा सा। वाक्य प्रयोग– मेहमानों ने थोड़ा सा खाया।
8. प्रेम– प्रेमपूर्वक, दिन– दिनभर, स्वभाव– स्वाभाविक, शांति– शांतिपूर्वक।
9. **परिभाषा**– वे शब्द जिनमें लिंग, वचन, पुरुष तथा काल के कारण कोई विकार नहीं आता, अव्यय कहलाते हैं। जैसे– इधर, उधर, आज, तेजी से, धीरे-धीरे आदि।
अव्यय के भेद– अव्यय के निम्नलिखित पाँच भेद हैं–
1. क्रिया विशेषण 2. सम्बन्धबोधक 3. समुच्चयबोधक 4. विस्मयादिबोधक 5. निपात।
10. जो अव्यय (अविकारी) शब्द किसी संज्ञा या सर्वनाम के पश्चात् प्रयुक्त होकर वाक्य में अन्य शब्दों से उसका संबंध स्थापित करते हैं, संबंधबोधक अव्यय कहलाते हैं। संबंधबोधक अव्यय के दो रूप होते हैं–

(क) परसर्ग सहित; जैसे— के अंदर।

(ख) परसर्ग रहित; जैसे— भर, मात्र।

11. परिभाषा— वे अव्यय (अविकारी) शब्द, जो क्रिया की विशेषता बताते हैं, क्रिया विशेषण कहलाते हैं।

क्रिया-विशेषण के भेद—

(i) रीतिवाचक क्रिया विशेषण (ii) स्थानवाचक क्रिया विशेषण

(iii) कालवाचक क्रिया विशेषण (iv) परिमाणवाचक क्रिया विशेषण

12. **समानाधिकरण समुच्चयबोधक**— इसके चार उपभेद हैं—

(i) **संयोजक**— और, एवं, व, तथा आदि। जैसे—

राम और श्याम चाचा भतीजे हैं। तुम भी चलोगे तथा राम भी चलेगा। शांतु यहाँ आओ एवं दिनभर रहो।

(ii) **विभाजक**— या, चाहे, अथवा, किंतु, नहीं तो आदि। जैसे— या तो शांति से बैठो या चले जाओ। चाहे यहाँ रहो चाहे वहाँ समय का पालन करो नहीं तो नौकरी से देंगे।

(iii) **विरोधसूचक**— लेकिन, पर, परंतु, किन्तु, अगर मगर। जैसे— मैं तो पास हो जाऊँगा लेकिन तुम्हारा क्या होगा? मैं पहुँचूँगा मगर देर से। भोजन सादा था किंतु मजा आ गया।

(iv) **परिणामसूचक**— इसलिए, अतः, अतएव आदि। जैसे— मैं बीमार था इसलिए न आ सका। सभी चले गए थे, अतः सभा समाप्त हो गई। तुम दुष्ट हो अतएव यहाँ नहीं रह सकते।

13. हर्षसूचक— धन्य भाग! जो आप हमारे यहाँ पधारे।

शोकसूचक— हाय! मैं बर्बाद हो गया।

विस्मयसूचक— अरे! आप अचानक कैसे आ गए?

तिरस्कारसूचक— छिः तुमने कपड़े गंदे कर दिए।

14. (क) संयोजक (और, तथा)— राम और श्याम चाचा भतीजे हैं। तुम भी चलोगे तथा राम भी चलेगा।

(ख) विरोधसूचक (लेकिन, किंतु) मैं तो पास हो जाऊँगा लेकिन तुम्हारा क्या होगा? भोजन सादा था किंतु मजा आ गया।

(ग) विभाजक (अन्यथा, चाहे)— या तो शांति से बैठो, अन्यथा चले जाओ। चाहे यहाँ रहो, चाहे वहाँ, समय का पालन करो।

(घ) परिणामसूचक (इसलिए, अतः)— मैं बीमार था इसलिए न आ सका। सभी चले गए थे, अतः सभा समाप्त हो गई।

अध्याय–8 संधि

1. क. (अ) ख. (स) ग. (ब) घ. (स) ङ. (स) च. (ब) छ. (स) ज. (अ) झ. (द) ञ. (अ) ट. (अ) ठ. (ब) ड. (ब) ढ. (स) ण. (स) त. (स) थ. (स) द. (स) ध. (अ) न. (द)

2. क. अन् + एषण ख. विम्नां ग. अधि + ईश घ. आत्मोन्नति ङ. अ और उ

3. (क) सन्देशांत — सन्देश + अंत (ख) एकैक — एक + एक

(ग) उन्मत्त — उत् + मत्त (घ) दुश्शासन — दुः + शासन

(ङ) आच्छादन — आ + छादन (च) गुर्वादेश — गुरु + आदेश

(छ) निराशा — निः + आशा (ज) स्वागतम् — सु + आगतम्

(झ) योजनावधि — योजन + अवधि (ञ) अण्डाकार — अण्ड + आकार

(ट) अधोगति — अधः + गति (ठ) आध्यात्मिक — अधि + आत्मिक

(ङ) नरोत्तम = नर + उत्तम
(ग) विद्योत्तमा = विद्या + उत्तमा
(घ) दुर्गम = दुः + गम
(च) आशोन्मुख = आशा + उन्मुख
(ख) तथास्तु = तथा + अस्तु
(ज) कृष्णावतार = कृष्ण + अवतार
(द) युगानुसार = युग + अनुसार

4. क. लक्ष्मण ख. रेखांश ग. अधीश घ. नगेन्द्र
ङ. नारीश्वर च. योगीश्वर छ. बहूद्देशीय ज. भानूदय
झ. स्वेच्छा ञ. यथोचित ट. व्यापक ठ. स्वस्थागमन
ड. गुणांश ढ. पित्रुपदेश ण चयन

अध्याय–9 समास

1. क. (अ) ख. (स) ग. (द) घ. (अ) ङ. (स) च. (द) छ. (स) ज. (अ) झ. (अ) ञ. (स) ट. (अ) ठ. (द) ड. (स) ढ. (द) ण. (द)
2. द्वन्द्व समास
3. अव्ययीभाव समास
4. बहुव्रीहि समास में
5. तत्पुरुष समास
6. कर्म तत्पुरुष
7. तत्पुरुष समास
8. उदाहरण शोकाकुल। समास विग्रह– शोक से आकुल
9. उदाहरण – राजपुत्र। समास विग्रह– राजा का पुत्र
10. उदाहरण– चंद्रमौलि। समास विग्रह– चंद्र है मौलि पर जिसके अर्थात् भगवान शिव
11. तत्पुरुष समास। अ + न्याय। विग्रह – न न्याय
12. **अव्ययीभाव समास**– जिस समास में पूर्व पद कोई अव्यय तथा प्रधान हो, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं, जैसे–

पूर्वपद (अव्यय)	+	उत्तरपद	=	समस्तपद	विग्रह
प्रति	+	एक	=	प्रत्येक	प्रति एक
आ	+	जीवन	=	आजीवन	जीवन भर

13. **द्विगु समास**– इस समास में पूर्व पद संख्यावाचक होता है और कभी-कभी उत्तरपद भी संख्यावाचक हो सकता है। इस समास में प्रयुक्त संख्या समूह का बोध कराती है। इससे किसी समूह या समाहार का ज्ञान होता है। जैसे–

विग्रह	समस्तपद	विग्रह	समस्तपद
नौ ग्रहों का समूह	नवग्रह	पाँच तत्वों का समूह	पंचतत्व
चार मासों का समूह	चौमासा	सात ऋषियों का समूह	सप्तर्षि

14. **द्वंद्व समास**– इस समास में दोनों पद प्रधान होते हैं। समासान्तर: दोनों पद एक दूसरे का विलोम भाव रखते हैं। इसमें और, एवं, या, व का लोप होता है जैसे–

विग्रह	समस्तपद	विग्रह	समस्तपद
जल और वायु	जलवायु	गुण और दोष	गुणदोष
ठंडा और गर्म	ठंडा-गर्म	दिन और रात	दिन-रात

15. बहुव्रीहि समास— इस समास में कोई भी पद प्रधान नहीं होता अपितु अन्य कोई पद प्रधान होता है। इसका विग्रह करने पर— वाला है, जो, जिसका, वह आदि शब्द आते हैं। जैसे—

समस्तपद	**विग्रह**
गजानन	गज जैसा आनन है जिसका अर्थात् गणेश
लंबोदर	लंबा है उदर जिसका अर्थात् गणेश
दशानन	दस हैं आनन जिसके अर्थात् रावण
नीलकंठ	नीले कंठ वाला अर्थात् शिवजी

16. कर्मधारय और बहुव्रीहि समास में अंतर— कर्मधारय समास में एक पद विशेषण या उपमान होता है इसका दूसरा पद विशेष्य या उपमेय होता है जैसे—नील कमल में नील (उपमान) और कमल (उपमेय) है। चरणकमल में चरण उपमेय और कमल उपमान है।

बहुव्रीहि समास का समस्त पद ही विशेषण का कार्य करता है जैसे—चक्रधर—चक्र धारण करता है जो अर्थात विष्णुजी।

नीलकंठ — नीले कंठ वाला (कर्मधारय)

नीलकंठ — नीला है कंठ जिसका अर्थात शिवजी (बहुव्रीहि)

गजानन — गज जैसे आनन वाला (कर्मधारय)

गजानन — गज जैसा आनन है जिसका अर्थात् गणेशजी (बहुव्रीहि)

17. द्विगु और बहुव्रीहि समास में अंतर—द्विगु समास का पूर्व पद संख्यावाचक विशेषण तथा उत्तरपद विशेष्य होता है, जबकि बहुव्रीहि समस्त पद ही विशेषण का कार्य करता है और अन्य कोई पद प्रधान होता है जैसे—

चतुरानन — चार आनन का समाहार (द्विगु) चतुरानन — चार हैं आनन जिसके अर्थात् ब्रह्मा जी (बहुव्रीहि)

दशानन — दस आननों का समाहार (द्विगु) दशानन — दस हैं आनन जिसके अर्थात् रावण (बहुव्रीहि)

18. द्विगु और कर्मधारय समास में अंतर— द्विगु समास का पहला पद हमेशा संख्यावाचक विशेषण होता है जो द्वितीय पद की संख्यावाचक विशेषता बताता है जबकि कर्मधारय समास का एक पद विशेषण एवं द्वितीय पद विशेष्य होता है। इसका कोई भी पद विशेषण और विशेष्य हो सकता है किंतु संख्यावाचक कभी नहीं हो सकता। जैसे—

त्रिभुज	—	तीन (संख्यावाचक विशेषण)	भुजाओं का समाहार (द्विगु)
चतुर्भुज	—	चार (संख्यावाचक विशेषण)	भुजाओं का समाहार (द्विगु)
चंद्रवदन	—	चंद्रमा (विशेषण) के समान	वदन (विशेष्य) (कर्मधारय)
चरणकमल	—	चरण (विशेष्य) है जो	कमल (विशेषण) के समान (कर्मधारय)

19. (क) चार हैं आनन जिसके — चतुरानन — बहुव्रीहि समास

(ख) चन्द्र का उदय — चन्द्रोदय तत्पुरुष समास

(ग) जन्म से अंधा जन्मांध अपादान तत्पुरुष

(घ) तिल से बनी पापड़ी तिल पापड़ी तत्पुरुष समास

(ङ) देव और असुर देवासुर द्वन्द्व समास

(च) नरों में उत्तम नरोत्तम तत्पुरुष समास

(छ) वज्र है आयुध जिसका वज्रायुध बहुव्रीहि समास

(ज) राम का अयन रामायन तत्पुरुष समास

(झ) यथा इष्ट यथेष्ट अव्ययीभाव समास

(ञ) मालन के लिए गोदाम मालगोदाम तत्पुरुष

(ट) चार पाँव वाला चौपाया द्विगु समास

अध्याय–10 शब्द विचार

1. क. (ब) ख. (अ) ग. (ब) घ. (द) ङ. (द) च. (अ) छ. (स) ज. (स) झ. (द) ञ. (ब)

2. क. अविकारी ख. अरबी ग. यौगिक घ. फारसी, संस्कृत ङ. उच्चारण च. देशज छ. संकर ज. ओष्ठ झ. विकारी, ञ. तत्सम।

3. शब्द– वर्णों के सार्थक सामूहिक मेल को शब्द कहते हैं। वर्णों के सार्थक मेल से शब्द का निर्माण होता है। वर्ण का स्वतंत्र रूप से कोई अर्थ नहीं होता। जबकि शब्द का अर्थ होता है। शब्दों के सार्थक समूह से वाक्य बनता है।

4. शब्द के निम्नलिखित आधारों पर पाँच भेद हैं–
1. व्याकरणिक प्रकार्य के आधार पर (जैसे– घोड़ा, घोड़े, बाहर)। 2. प्रयोग के आधार पर (जैसे– पूजा, पकौड़े, भौतिकी)। 3. उत्पत्ति के आधार पर (जैसे– भात, भाई, दस्तखत, टिकट)। 4. रचना या बनावट के आधार पर (जैसे– कमल, पीताम्बर, दशानन)। 5. अर्थ के आधार पर (जैसे– सहपाठी, अचार, अचार, नेत्र लोचन, गरीब अमीर, अश्व किरण रश्मि, प्रेम ईर्ष्या)।

5. तत्सम शब्द– दंड, ग्रंथि, क्षार, तत्सम
तद्भव शब्द– घर, साग, लोभ, दाँत
देशज– खटिया, फटाफट, भड़ास, लुटिया, खिचड़ी
विदेशी– स्कूल, दारोगा, बाजार, पेंसिल, इंजन

6. यौगिक – विद्यार्थी, प्रयोगशाला, मेलजोल, नरेंद्र, वायुयान
योगरूढ़– हलधर, निशाचर, जलज, वीणावादिनी, चक्रधर, पंचांग, एकदंत

7. 1. रेलगाड़ी– आजकल रेलगाड़ी से यात्रा करना बहुत आरामदायक है।
2. टिकटघर– फिल्म देखने के लिए टिकटघर से टिकट खरीद लो।
3. मोटरगाड़ी– वह मोटरगाड़ी से कार्यालय जाता है।
4. छायादार– छायादार वृक्ष गर्मी में राहत देता है।
5. कामधंधा– राजू अब कामधंधा करने लगा है।

8. **यौगिक शब्द**– वे शब्द जो दो या दो से अधिक सार्थक शब्दों के योग से बनते हैं, सार्थक शब्द कहलाते हैं। इन शब्दों का विभाजन किए जाने पर इनके खंड भी सार्थक ही रहते हैं। जैसे–
देवालय = देव + आलय
आगमनादि = आ + गमन + आदि
श्रुतिसमभिन्नार्थक = श्रुति + सम + भिन्न + अर्थक
उपर्युक्त समस्त शब्दों के खंड करने पर प्राप्त शब्द भी सार्थक हैं, अतः ये सभी शब्द यौगिक शब्द हैं।

9. क. रूप ख. कर्तव्य ग. कहानी
घ. हृदय ङ. भाग्य च. रस
छ. समिति ज. निद्रा झ. प्रारम्भ
ञ. भूमि ट. लिपिक ठ. झंझावात

10. क. अंग्रेजी ख. फारसी ग. पुर्तगाली
घ. हिन्दी ङ. फारसी च. पुर्तगाली
छ. जापानी ज. चीनी झ. रूसी
ञ. तुर्की ट. फारसी ठ. अरबी
ड. अंग्रेजी ढ. अरबी ण. चीनी

11. क. मच्छर ख. मेंढा ग. कुआँ
घ. हाथ ङ. फंदा च. गाँव
छ. घोड़ा ज. माँ झ. लंका
ञ. ऊँट ट. बहू ठ. कंजूस

अध्याय–11 पर्यायवाची शब्द

1. क. (द) ख. (स) ग. (द) घ. (ब) ङ. (स) च. (स) छ. (अ) ज. (अ) झ. (द) ञ. (ब) ट. (अ) ठ. (अ) ड. (ब और स) ढ. (द) ण. (अ) त. (द) थ. (स) द. (द) ध. (ब) न. (अ)

2. क. सागर – समुद्र, जलधि, उदधि ख. गिरि – पहाड़, पर्वत, शैल
ग. वन – कानन, अरण्य, जंगल घ. नर – मनुष्य, मानव, आदमी

3. क. भूमि – पृथ्वी, धरा, धरती ख. नभ – आकाश, गगन, अंबर
ग. घन – मेघ, बादल, जलद घ. निशा – रजनी, यामिनी, रात्रि

4. क. तलवार – असि, खड्ग, कृपाण ख. धरती – पृथ्वी, धरा, वसुंधरा
ग. सुमन – फूल, कुसुम, प्रसून

5. क. सोना – स्वर्ण, कंचन, हेम ख. यमुना – कालिंदी, सूर्यसुता, जमुना
ग. प्रस्तर – पत्थर, पाषाण, उपल घ. गिरि – पहाड़, शैल, पर्वत

6. क. खग – पक्षी, विहग, नभचर ख. आँख – नेत्र, नयन, चक्षु
ग. प्रसून – फूल, पुष्प, सुमन घ. कूल – किनारा, तट, तीर

7. क. मोर – मयूर, नीलकंठ, केकी ख. हंस – मराल, कलहंस, कादम्ब
ग. आँख – नेत्र, नयन, चक्षु घ. माँ – माता, जननी, मैया
ङ. पत्नी – भार्या, वामांगी, वनिता च. गंगा – भागीरथी, देवनदी, मंदाकिनी
छ. हिमालय – नगपति, नगेश, गिरिराज ज. कामदेव – मनोज, मन्मथ, मदन

8. क. रात्रि – निशा, रजनी, विभावरी, शर्वरी ख. दिन – दिवस, वार, वासर, अहन
ग. देवता – देव, अमर, सुर, आदित्य घ. पवन – वायु, समीर, हवा, अनिल
ङ. बिजली – विद्युत, चंचला, दामिनी, तड़ित च. भौंरा – भ्रमर, मधुकर, मधुप, अलि
छ. अमृत – सुधा, पीयूष, सोम, अमिय ज. सोना – स्वर्ण, कंचन, कनक, हेम
झ. राजा – नरेश, भूप, नृप, महीपाल ञ. पार्वती – उमा, गौरी, गिरिजा, भवानी

9. क. विष – जहर, गरल, हलाहल, माहुर ख. सोना – स्वर्ण, कंचन, कनक, हेम
ग. सिंह – शेर, वनराज, शार्दूल, मृगराज घ. सुंदर – सुशील, मनोहर, रमणीक, आकर्षक

10. क. धनुष – कमान, चाप ख. पत्थर – पाषाण, शिला
ग. स्वर्ग – देवलोक, सुरलोक

11. वीर – शूर, योद्धा, बहादुर
जगत् – संसार, विश्व, लोक

अध्याय–12 विलोम शब्द

1. क. (अ) ख. (द) ग. (स) घ. (अ) ङ. (ब) च. (ब) छ. (द) ज. (द) झ. (अ) ञ. (ब)
2. **विपरीतार्थक** – शब्दों के अपने निश्चित अर्थ होते हैं। इन अर्थों के विपरीत अर्थ देने वाले शब्दों को विलोम या विपरीतार्थक शब्द कहते हैं। जैसे मोटा – पतला, बालक – वृद्ध
3. क. न्यूनतम – अधिकतम ख. आरोही – अवरोही ग. सुगम – दुर्गम
   घ. सभ्य – असभ्य ङ. आकर्षण – अनाकर्षण च. सक्रिय – निष्क्रिय
   छ. मृदुभाषी – कटुभाषी ज. विलोम – समान/पर्याय झ. संघर्ष – समझौता
   ञ. साध्य – असाध्य ट. वास्तविक – काल्पनिक ठ. आयात – निर्यात
   ड. अंशविभाजन – संकलन ढ. मादा – नर ण. संयोग – वियोग
   त. ह्रस्व – दीर्घ थ. भीरु – निर्भीक द. मंद – तीव्र
   ध. लौकिक – अलौकिक न. पक्षपाती – निष्पक्ष
4. (क) 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ लेकिन अभी भी आर्थिक रूप से परतंत्र है।
   (ख) ईमानदार व्यक्ति का सदैव पक्ष लेना चाहिए बुराई के विपक्ष में रहना चाहिए।
   (ग) आज के समय में रक्षक ही भक्षक बन गए हैं।
   (घ) कठिन परिश्रम करके वह विपन्न से संपन्न बन गया।
   (ङ) सज्जन की संगति करनी चाहिए, दुर्जन का साथ छोड़ देना चाहिए।
   (च) विद्या धन वितरण करने से बढ़ता है, जबकि संग्रह से घटता है।
   (छ) कई दिन निराहार रहकर उसे आज आहार मिला।
   (ज) सज्जनों का अनुकरण तथा दुर्जनों की उपेक्षा करनी चाहिए।

अध्याय–13 अनेकार्थी शब्द

1. क. (अ) ख. (द) ग. (द) घ. (अ) ङ. (द) च. (स) छ. (स) ज. (स) झ. (स) ञ. (स) ट. (अ) ठ. (स) ड. (अ) ढ. (ब) ण. (द)
2. क. नागों (कीड़े)
   ख. आम, आम (आम फल का नाम, जन साधारण)
   ग. घोड़ा, घोड़ा (बंदूक का भाग, पशु का नाम)
   घ. सारंग, सारंग (मोर, सर्प)
   ङ. हल, हल (खेत जोतने का यंत्र, समाधान)
   च. भाग, भाग (गणित की क्रिया, हिस्सा)
   छ. लहर, लहर (जल की तरंग, मन की उमंग)
   ज. जवान, जवान (युवा, सैनिक)
   झ. अंबर, अंबर (आकाश)
   ञ. जीवन, जीवन (जिंदगी, जीवन संघर्ष)
   ट. द्विज, द्विज (वैश्य, ब्राह्मण)
   ठ. बलि, बलि (एक राजा का नाम, बलिदान)
   ड. कुल, कुल (वंश, संपूर्ण)

ढ. खर, खर (तीखा, गधा)

ण. चाल, चाल (स्थिति, परिणाम)

अध्याय–14 श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द

1. क. (द) ख. (अ) ग. (स) घ. (ब) ङ. (द) च. (स) छ. (अ) ज. (ब) झ. (स) ञ. (ब)

2. क. मात्र
   ख. मूल
   ग. परिणाम
   घ. दाँत
   ङ. अन्न
   च. नीड़
   छ. चिर
   ज. उपेक्षा
   झ. निशान
   ञ. नग

3. (क) ओर – (दिशा) – राम को उस ओर जाना चाहिए।
   और – कुछ अधिक – कविता को और पढ़ना चाहिए।
   (ख) ग्रह (नक्षत्र) – हमारे सौरमंडल में नौ ग्रह हैं।
   गृह (घर) – गृहिणी से गृह व्यवस्थित होता है।
   (ग) अपेक्षा (उम्मीद) – मुझे भगवान् से यह अपेक्षा नहीं थी।
   उपेक्षा (ध्यान न देना) – व्यक्ति को अपने कर्तव्यों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।
   (घ) चिर (प्रारंभ) – मानव का चिरकाल से ही प्रकृति से नाता रहा है।
   चीर (कपड़े का टुकड़ा) – उँगली में चोट लग गई है, चीर बाँध दो।
   (ङ) वदन (मुँह) – क्रोध में राम का वदन लाल हो गया।
   बदन (शरीर) – पहलवान का बदन गठीला है।
   (च) सुत (पुत्र) – राजा दशरथ के चार सुत थे।
   सूत (धागा) – कपास के सूत से बड़ी-बड़ी रस्सियाँ बनाई जाती हैं।
   (छ) प्रकार (किस्म) – संज्ञा मुख्यतः पाँच प्रकार की होती हैं।
   प्राकार (परकोटा) – चित्तौड़गढ़ के किले का प्राकार अति विशाल व ऊँचा है।

अध्याय–15 अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

1. क. (स) ख. (ब) ग. (द) घ. (अ) ङ. (ब) च. (ब) छ. (ब) ज. (अ) झ. (द) ञ. (द) ट. (अ) ठ. (ब) ड. (स) ढ. (ब) ण. (ब)

2. क. जहाँ रोगी का इलाज होता हो – अस्पताल
   ख. जो फल बेचता हो – फल विक्रेता
   ग. जो खेती करता है – किसान
   घ. जो कपड़े सिलता हो – दर्जी

3. क. मठ में रहने वाला – मठवासी
ख. जिसका कोई शत्रु न हो – अजातशत्रु
ग. आलोचना करने वाला – आलोचक
घ. जिसने इंद्रियों को जीत लिया हो – जितेन्द्रिय
ङ. आकाश को चूमने वाला – गगनचुंबी
च. दूसरों का भला करने वाला – परोपकारी
छ. सोच समझ कर खर्च करने वाला – मितव्ययी
ज. जिसका स्वभाव झगड़ा करने का हो – झगड़ालू
झ. किसी के उपकार को न मानने वाला – कृतघ्न
ञ. किसी के उपकार को मानने वाला – कृतज्ञ
ट. जिसके आर पार दिखाई दे – पारदर्शी
ठ. 15 दिन में छपने वाला – पाक्षिक
ड. जो एक ही उदर से जन्मा हो – सहोदर
ढ. विदेश से मँगाया जाने वाला सामान – आयातित
ण. अंडे से जन्म लेने वाला – अंडज
त. ऊँचे कुल में जन्म लेने वाला – कुलीन
थ. कहानी लिखने वाला – कहानीकार
द. सुंदर आँखों वाली स्त्री – सुलोचना
ध. वेतन पाने वाला व्यक्ति – वेतनभोगी
न. तेज हवाओं के साथ होने वाली वर्षा – झंझावात
प. बच्चे को प्रथम बार अन्न खिलाना – अन्नप्राशन

अध्याय–16 मुहावरे

1. क. (स) ख. (ब) ग. (स) घ. (स) ङ. (अ) च. (स) छ. (स) ज. (अ) झ. (स) ञ. (अ)
2. क. वह नेता जो भी करें कम है। सब एक ही थाली के चट्टे बट्टे हैं।
ख. गरीब श्रम न मानें, अमीर सदा उन्हें उँगली पर नचाते हैं।
ग. मजदूरों की दिहाड़ी काटकर मिल मालिक उनका गला काटते हैं।
घ. उधार माँगने पर बड़े भाई ने हरी को टका सा जवाब दे दिया।
ङ. जन्मदिन का बड़ा सा केक देखते ही सभी बच्चों के मुँह में पानी आ गया।
च. मयंक से कोई भी काम करवाना टेढ़ी खीर है।
छ. मोहन और लखन की दोस्ती दाँत काटी रोटी जैसी है।
ज. रानी घर से भागकर सभी की आँखों से गिर गई।
झ. गीता फोगाट ने अपने प्रतिद्वंद्वियों को पल भर में धूल चटा दी।
ञ. आपकी तारीफ करना तो सूरज को दिया दिखाने जैसा है।
3. क. गिरना ख. फलों
ग. अलग घ. बल
ङ. नाली च. चिपका
छ. आम ज. कुआ
4. क. पौ बारह होना – सब तरफ से लाभ ही लाभ होना।
वाक्य प्रयोग – जब से उसने व्यापार में कदम रखा उसके तो पौ बारह हो गए।
ख. फूला न समाना – अत्यधिक प्रसन्न होना।
वाक्य प्रयोग – परीक्षा में अच्छे अंक आने पर दिनेश फूला न समाया।
ग. शूल उठना – मन में बेचैनी होना।
वाक्य प्रयोग – परीक्षा में कम अंक आने पर उसके मन में शूल उठने लगे।
घ. मीठी नींद सोना – निश्चिंत होकर सोना।
वाक्य प्रयोग – माँ की गोद में बच्चा मीठी नींद सो रहा है।
ङ. बैर मोल लेना – जान बूझकर दुश्मनी खड़ी करना।
वाक्य प्रयोग – कॉलेज के नियमों का उल्लंघन करके रोहित ने प्रबंधक से बैर मोल ले लिया।

घ. मुँह छिपाना – शर्मिंदा होना।

वाक्य प्रयोग– अपनी गलती स्वीकार न करने पर वह मुँह छिपाए फिर रहा था।

ङ. मुँह पर कालिख लगाना– बदनामी होना या कलंकित होना।

वाक्य प्रयोग– विकास ने चोरी करके अपने परिवार के मुँह पर कालिख पोत दी।

5. क. आग बबूला होना – अत्यधिक क्रोधित होना।

वाक्य प्रयोग– बच्चों द्वारा खिड़की का काँच तोड़ने पर पड़ोसी आग बबूला हो गया।

ख. टीका टिप्पणी करना – आलोचनात्मक विचार व्यक्त करना।

वाक्य प्रयोग– टीका टिप्पणी करने से पहले हमें तथ्यों की जाँच कर लेनी चाहिए।

ग. नुक्ताचीनी करना – दोष निकालना।

वाक्य प्रयोग– बच्चों की गलतियों पर नुक्ताचीनी करने के बजाय प्यार से समझाना चाहिए।

6. क. जान की बाजी लगाना – अपनी जान को खतरे में डालना।

वाक्य प्रयोग– सैनिक अपने देश की रक्षा में जान की बाजी लगा देते हैं।

ख. आँखों में आँसू भर आना – दुखी होना।

वाक्य प्रयोग– गरीब बच्चे की हालत देखकर मेरी आँखें भर आईं।

ग. होंठ फड़कना– क्रोधित होना।

वाक्य प्रयोग– परशुराम के कटु वचन सुनकर लक्ष्मण के होंठ फड़कने लगे।

घ. कलेजा मुँह को आना– बहुत घबराहट या डर महसूस होना।

वाक्य प्रयोग– अचानक सामने शेर को देखकर उसका कलेजा मुँह को आ गया।

7. क. साँचे में ढला होना – एक ही रूप रंग का होना।

वाक्य प्रयोग– दोनों भाई देखने में बिलकुल एक जैसे हैं मानो एक ही साँचे में ढले हों।

ख. प्यार सा उमड़ आना– भावनाओं का तीव्रगति से उमड़ना।

वाक्य प्रयोग– मैच जीतने की खुशी में दर्शकों के बीच प्यार सा उमड़ आया।

ग. चकाचौंध उत्पन्न करना– किसी को चकित या स्तब्ध कर देना।

वाक्य प्रयोग– मेले में इतनी सारी दुकानें और रोशनी देखकर बच्चे चकाचौंध हो गए।

8. क. आँखों से ओझल होना– विमान इतनी तेज दौड़ा कि देखते देखते ही आँखों से ओझल हो गया।

ख. मन मसोसकर रह जाना– जब रमेश को पता चला कि उसका दोस्त परीक्षा में नकल करके पास हुआ है तो वह मन मसोसकर रह गया।

ग. हृदय भर आना– बेटी की विदाई के समय माँ का हृदय भर आया।

9. मन को मोहित करना– किसी को अपनी ओर आकर्षित करना।

वाक्य प्रयोग– प्रदर्शनी में हस्तशिल्प की वस्तुओं ने दर्शकों का मन मोह लिया।

10. बाँछें खिलना –अत्यधिक प्रसन्न होना।

वाक्य प्रयोग– परीक्षा में प्रथम आने पर नवीन की तो बाँछें खिल गईं।

11. क. पाँव तले जमीन खिसकना– जब विकास ने सुना कि उसकी नौकरी चली गई है तो उसके पाँवों तले जमीन खिसक गई।

ख. सन्नाटा छाना– एक्सीडेंट की खबर सुनकर परिवार में सन्नाटा छा गया।

ग. फूला न समाना – बेटे की सरकारी नौकरी लगने पर गुप्ताजी फूले नहीं समा रहे थे।

घ. घड़ों पानी पड़ना– परीक्षा में नकल करते हुए पकड़े जाने पर राज पर घड़ों पानी पड़ गया।

अध्याय–17 लोकोक्तियाँ

1. क. (द) ख. (स) ग. (अ) घ. (अ) ङ. (द) च. (अ) छ. (स) ज. (स) झ. (च)
2. **लोकोक्तियाँ**– आम जनता के बीच प्रचलित या उनके द्वारा कही गयी उक्तियाँ, लोकोक्तियाँ कहलाती हैं। जैसे– अंधों में काना राजा।
3. अंतर– विशिष्ट अर्थ देने वाले वाक्यांशों को मुहावरा कहते हैं, ये वाक्य में आकर उनका अर्थ बदल देते हैं, जबकि लोकोक्ति का अर्थ है– आम जनता के बीच प्रचलित या उनके द्वारा कही गई। लोकोक्ति अपने आप में पूर्ण वाक्य होते हैं। इसका प्रयोग वाक्य में स्वतंत्र रूप से होता है।
4. (क) अंत भला तो सब भला– यदि किसी काम का परिणाम अच्छा हो तो शुरुआत की कठिनाई मायने नहीं रखती। परीक्षा में पहले अच्छी तैयारी नहीं हो सकी, लेकिन अंत में अच्छे नंबर आए। सही है– अंत भला तो सब भला।
   (ख) अशर्फी की लूट कोयले पर छाप (?) ... अगर की दहिया गुजराती ताला– कम मूल्यवान वस्तु पर बहुत अधिक सुरक्षा– राम ने अपनी पुरानी साइकिल में एक हजार रुपए का ताला लगवाया। इसे कहते हैं– अगर की दहिया गुजराती ताला।
   (ग) आधा तीतर आधा बटेर– बेमेल होना– लक्ष्मण सिंह ने अपनी शादी में आधे पंजाबी और आधे बंगाली रीति रिवाजों का पालन किया। यह तो वही हुआ– आधा तीतर आधा बटेर।
   (घ) उधार दो दुश्मन बनाओ– जान बूझकर परेशानी मोल लेना। मैंने अपने दोस्त को कुछ पैसे उधार दिए थे, अब वह मुझसे बात भी नहीं करता। सच ही है, उधार दो, दुश्मन बनाओ।
   (ङ) ऊँचा तिलक माथुरी बानी, दगाबाज की यह निशानी– कुटिल व्यक्ति ही आडम्बर अधिक करते हैं। हम उसके भव्य स्वरूप को देखकर धोखा खा गए, ठीक ही कहा है– ऊँचा तिलक माथुरी बानी, दगाबाज की यही निशानी।
5. (क) एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है– मोहन की बुरी संगत ने पूरे परिवार का नाम खराब कर दिया। सच है एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है।
   (ख) कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा भानुमती ने कुनबा जोड़ा– पप्पूलाल ने इधर उधर से सामान इकट्ठा करके एक बेडरूम बना लिया। यह तो वही हुआ– कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा भानुमती ने कुनबा जोड़ा।
   (ग) काने के ब्याह में भी जोखिम– आज सरकारी नौकरी पाने में बहुत अड़चनें आती हैं। सच ही है– काने के ब्याह में भी जोखिम।
   (घ) खिसियानी बिल्ली खंभा नोंचे– जब वह अपनी गलती नहीं मान पाया, तो बेवजह दूसरों पर गलती थोपकर गुस्सा करने लगा। सच है– खिसियानी बिल्ली खंभा नोंचे।
   (ङ) घर का भेदी लंका ढाए– दुश्मन को हमारे गुप्त भेद बताकर उसने बड़ी कहावत सच कर दी– घर का भेदी लंका ढाए।
6. (क) लातों के भूत बातों से नहीं मानते– दुष्ट व्यक्ति केवल कठोरता से ही सुधरते हैं समझाने से नहीं।
   (ख) पाँचों उँगलियाँ घी में– हर तरफ से लाभ ही लाभ होना या अत्यधिक मौज मस्ती करना।
   (ग) दूर के ढोल सुहावने– दूर की चीजें या बातें अच्छी लगती हैं, लेकिन पास आने पर उसकी सच्चाई का पता चलता है।
   (घ) तीन लोक से मथुरा न्यारी– सबसे अलग या निराला होना।
   (ङ) यथा राजा तथा प्रजा– जैसा मालिक होता है, वैसे ही उसके कर्मचारी होते हैं।
   (च) गोद में छोरा नगर में ढिंढोरा– पास रखी वस्तु को दूर दूर तक ढूँढना।
   (छ) कहने से कुम्हार गधे पर नहीं चढ़ता– कोई व्यक्ति किसी के कहने से अपना काम नहीं करता, बल्कि अपनी मर्जी से करता है।

(ज) छठी का दूध याद दिलाना– बहुत अधिक कष्ट या परेशानी में डालना।

(झ) घर की मुर्गी दाल बराबर– अपनी वस्तु या व्यक्ति का महत्त्व न समझना।

(ञ) घाट घाट का पानी पीना– बहुत अनुभवी होना।

7. (क) अकल बड़ी या भैंस

(ख) खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे

(ग) उल्टी गंगा बहना

(घ) पानी चाँदी मीन सोना

(ङ) खूनी खून मिलना

(च) आगे कुआँ पीछे खाई

(छ) एक म्यान में दो तलवार नहीं रह सकती

(ज) आए थे हरि भजन को ओटन लगे कपास

(झ) ईश्वर की माया कहीं धूप कहीं छाया

(ञ) अपनी अपनी ढपली अपना अपना राग

8. ● छोटा मुँह बड़ी बात– योग्यता से अधिक बोलना– रिया अपनी माँ से कहने लगी– मैं आपको इडली साँभर बनाना सिखाऊँगी। माँ ने कहा– यह तो है– छोटा मुँह बड़ी बात।

● अंधे की लकड़ी होना– श्रवण कुमार अपने अंधे माता पिता के एकमात्र पुत्र थे, सच में वह अंधे की लकड़ी थे।

● आग बबूला होना– क्रोधित होना– पुत्र की उद्दंडता देखकर पिताजी आग बबूला हो गए।

अध्याय–18 वाक्य विचार

1. क. (अ) ख. (स) ग. (अ) घ. (स) ङ. (ब) च. (द) छ. (अ) ज. (ब) झ. (ब) ञ. (द) ट. (अ) ठ. (स) ड. (स) ण. (ब) त. (अ)

2.

	उद्देश्य	विधेय
क.	आप	यहाँ आकर बातें कीजिए।
ख.	चंद्रशेखर आजाद	स्वतंत्रता के लिए जिए और मरे।
ग.	स्मृति का भाई अल्पेश	मेरा सहपाठी है।
घ.	भृगु की बहन दुर्गेश	सुंदर सुंदर चित्र बनाती है।
ङ.	आप	स्नान करके भोजन कर लीजिए।
च.	मेरे पक्के मित्र देवेश ने	कल मेरी मदद की।
छ.	मैंने	सड़क पर कुचला हुआ साँप देखा।
ज.	भूख से तड़पते बालक ने	अपना भोजन दान कर दिया।
झ.	सभी चोर	पुलिस को देखकर भाग गए।
ञ.	युवराज ने	एक ओवर में छह छक्के लगाए।

3. क. मनु ननिहाल में बीमार हो गया।

ख. वह स्कूल से घर आकर खेलने लगा।

ग. गाँव में सूखा पड़ने से ग्रामीण जीवन छिन्नभिन्न हुआ।

घ. सूरज निकलने पर आकाश में लालिमा छा गई।

ङ. मेरा नेपाली मित्र कल कुएँ में गिर गया।

च. कल आँधी आने से अनेक वृक्ष गिर गए।

छ. मैंने उसे मुस्कुराते हुए देखा।

ज. वह हमेशा कर्ज लेकर लौटाता नहीं है।

झ. एक सुंदर लड़का कल तुम्हें पूछ रहा था।

ञ. यह मेरी किताब मुझे मेरी दादी जी ने दी थी।

4. क. आश्रित उपवाक्य – कि वह आगे बढ़े। प्रकार – संज्ञा उपवाक्य

ख. आश्रित उपवाक्य – जहाँ भी गया। प्रकार – क्रिया विशेषण उपवाक्य

ग. आश्रित उपवाक्य – जब भी वह मेरे घर आया। प्रकार – विशेषण उपवाक्य

घ. आश्रित उपवाक्य – जो परिश्रम करते हैं। प्रकार – विशेषण उपवाक्य

ङ. आश्रित उपवाक्य – अब मैं तुम्हारे घर नहीं आऊँगा। प्रकार – संज्ञा उपवाक्य

च. आश्रित उपवाक्य – कि यह जगत मिथ्या है। प्रकार – संज्ञा उपवाक्य

छ. आश्रित उपवाक्य – यदि तुम मेरे साथ आते। प्रकार – क्रिया विशेषण उपवाक्य

ज. आश्रित उपवाक्य – जो भी माँग रहा था। प्रकार – विशेषण उपवाक्य

5. क. उपवाक्य का नाम – संज्ञा उपवाक्य

ख. उपवाक्य का नाम – विशेषण उपवाक्य

ग. उपवाक्य का नाम – क्रिया विशेषण उपवाक्य

घ. उपवाक्य का नाम – विशेषण उपवाक्य

ङ. उपवाक्य का नाम – संज्ञा उपवाक्य

च. उपवाक्य का नाम – विशेषण उपवाक्य

छ. उपवाक्य का नाम – क्रिया विशेषण उपवाक्य

ज. उपवाक्य का नाम – संज्ञा उपवाक्य

झ. उपवाक्य का नाम – संज्ञा उपवाक्य

ञ. उपवाक्य का नाम – विशेषण उपवाक्य

6. क. जो सच बोलता है, उसे कोई डर नहीं होगा।

ख. थोड़ा विश्राम कीजिए, फिर आगे जाइए।

ग. मूर्ति खंडित करने वाले लोगों को पुलिस ढूँढ़ रही है।

घ. सच बोलने वालों का ईश्वर साथ देता है।

ङ. जो गुणवान होता है, वह हर स्थान पर आदर पाता है।

च. बैठिए और बातें कीजिए।

छ. उसने परिश्रम किया फिर भी वह गरीब है।

ज. कुछ लोग पीछे बैठकर शरारत कर रहे हैं।

झ. पिताजी घर आ गए और तब हम लोगों ने भोजन किया।

ञ. आपके कहने पर सब मान गए।

7. (क) सरल वाक्य – भुवनेश्वर की पहली गेंद पर वार्नर आउट हो गया।

मिश्र वाक्य – जैसे ही भुवनेश्वर ने पहली गेंद फेंकी, वार्नर आउट हो गया।

संयुक्त वाक्य – भुवनेश्वर ने पहली गेंद फेंकी और वार्नर आउट हो गया।

(ख) सरल वाक्य – उसके बुलाने पर मैं तुरंत आ गया।

मिश्र वाक्य– जैसे ही उसने मुझे बुलाया, मैं तुरंत आ गया।
संयुक्त वाक्य– उसने मुझे बुलाया, मैं तुरंत आ गया।

(ग) सरल वाक्य– साधु द्वारा गाय काढ़ते ही सारा दूध फैल गया।
मिश्र वाक्य– जब साधु ने अपनी गाय काढ़ी, तब सारा दूध फैल गया।
संयुक्त वाक्य– साधु ने अपनी गाय काढ़ी और सारा दूध फैल गया।

(घ) सरल वाक्य– गरजते हुए बादल में बिजली चमक रही थी।
मिश्र वाक्य– जब बादल गरज रहे थे, तब बिजली चमक रही थी।
संयुक्त वाक्य– बादल गरज रहे थे और बिजली चमक रही थी।

(ङ) सरल वाक्य– रात को एक शोर सुनकर मैं जाग गया।
मिश्र वाक्य– जैसे ही मैंने रात को एक शोर सुना, मैं जाग गया।
संयुक्त वाक्य– मैंने रात को एक शोर सुना और मैं जाग गया।

(च) सरल वाक्य– उसके घर आने पर सबने उसका सत्कार किया।
मिश्र वाक्य– जब वह मेरे घर आई, तब सबने उसका सत्कार किया।
संयुक्त वाक्य– वह मेरे घर आई और सबने उसका सत्कार किया।

(छ) सरल वाक्य– 15 अगस्त को लाल किले की प्राचीर से प्रधानमंत्री ने सुंदर भाषण दिया।
मिश्र वाक्य– जब प्रधानमंत्री 15 अगस्त को लाल किले की प्राचीर पर गए, तब उन्होंने सुंदर भाषण दिया।
संयुक्त वाक्य– प्रधानमंत्री 15 अगस्त को लाल किले की प्राचीर पर गए और उन्होंने सुंदर भाषण दिया।

(ज) सरल वाक्य– मेरे घर के सामने बगीचे में बच्चे खेल रहे हैं।
मिश्र वाक्य– मेरे घर के सामने एक बगीचा है जिसमें बच्चे खेल रहे हैं।
संयुक्त वाक्य– मेरे घर के सामने एक बगीचा है और उसमें बच्चे खेल रहे हैं।

(झ) सरल वाक्य– तमाशा खत्म होने पर सभी अपने घर चले गए।
मिश्र वाक्य– जैसे ही तमाशा खत्म हुआ, सभी अपने घर चले गए।
संयुक्त वाक्य– तमाशा खत्म हो गया और सभी अपने घर चले गए।

(ञ) सरल वाक्य– तुम्हारा कहा हुआ मैं भूल गया।
मिश्र वाक्य– जो तुमने कहा था, मैं उसे भूल गया।
संयुक्त वाक्य– तुमने कुछ कहा था, परंतु मैं उसे भूल गया।

अध्याय–19 विराम–चिह्न

1. क. (द) ख. (अ) ग. (स) घ. (द)

2. क. (द) ख. (स) ग. (अ) घ. (स) ङ. (अ)

3. क. रामकुमार, मोहन और सोहन जा रहे थे
ख. उनके भाई ने कहा, "तुम्हें मेरी इच्छा का पता कैसे होगा"?
ग. अरे! तुम तो भूल ही गए, आज मेरा जन्मदिन है।
घ. मोहन व्याकुल बोला– "अब मैं घर लौट रहा हूँ।"

4. क. रमेश! रास्ते में रुक कर देखो, यहाँ कौन है?
ख. वाह! तुमने तो कमाल ही कर दिया।
ग. साकेत एक महाकाव्य है, जिसे मैथिलीशरण 'गुप्त' ने लिखा है।

ग. रमेश ने कहा– "मुझे बहुत समय हो गया।"

ङ. मित्रो! यहाँ आओ, बैठो।

5. गाइड के निर्देश पर हमारी गाड़ी आगे बढ़ी। थोड़ा आगे चलकर हमारी गाड़ी अचानक रुक गई। गाड़ी के बिल्कुल सामने झरने के किनारे बाघ, बाघिन धूप सेंकते दिखाई दिए।

6. क. मैंने उसे कृपापूर्वक कहा– मैं भी औरों की तरह एक पर्वतारोही हूँ, इसलिए इस दल में आई हूँ। शारीरिक रूप से ठीक हूँ, इसलिए मुझे अपने दल के सदस्यों की मदद नहीं करनी चाहिए क्या? मैंने पेय पदार्थ देकर हंस, कुंती और चामेली की प्यास नहीं बुझाई लेकिन उसने मुझे अपना किट नहीं ले जाने दिया क्योंकि वह बी. ए. में पढ़ती है, मेरी जूनियर है।

ख. दूसरे साहब अपनी दाढ़ी को सहलाते हुए कह रहे थे– "अरे जैसी नीयत होती है, अल्लाह भी वैसी बरकत देता है। इन लोगों का क्या है, यह लोग रोटी के टुकड़े पर जान देते हैं। इनके लिए बेटा बेटी, धर्म ईमान सब रोटी का टुकड़ा है।"

ग. वह इतना रंगीन, मस्त और सजीलेदार हो गया है कि उसको अखाड़े की मिट्टी में सनी हुई देह से उबकाई आने लगी है। जो बचपन में धूल से खेला है, अखाड़े की मिट्टी से कैसे वंचित रह सकता है, रहता है तो उसका दुर्भाग्य है। अरे! यह साधारण धूल नहीं है, यह वह मिट्टी है, जिसे देवता पर चढ़ाया जाता है।

अध्याय–20 पत्र लेखन

1. अपने जन्मदिन पर मित्र द्वारा भेजे गए उपहार के लिए धन्यवाद पत्र

मालू रास्ता
चौड़ा रास्ता, जयपुर
दिनांक 2 फरवरी 20_ _

प्रिय मित्र

नमस्कार

मुझे यह कहते हुए बहुत खुशी हो रही है कि मैंने अपना जन्मदिन आप जैसे मित्रों के साथ मनाया। आपने मुझे जन्मदिन पर जो खास उपहार दिया है मैं इसके लिए दिल से धन्यवाद देता हूँ।

उपहार देखकर मुझे बहुत खुशी हुई और मैं इसे अपने दैनिक जीवन में उपयोग करूँगा। इस उपहार ने मेरे जन्मदिन को और खास बना दिया। आपकी मित्रता मेरे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है और मैं हमेशा इसे बनाये रखना चाहता हूँ।

एक बार फिर से धन्यवाद और बहुत सारा प्यार

आपका अभिन्न दोस्त

विभव मीणा

2. मित्र को अपने साथ कुछ वक्त बिताने का निमंत्रण देते हुए पत्र

1 डी. गोविंदपुरी

अजमेर।

दिनांक 04 05 20_ _

प्रिय सहेली लिपिका

सप्रेम नमस्ते,

तुम्हारा पत्र मिला था, लेकिन परीक्षा में व्यस्त रहने के कारण मैं उत्तर न दे पाई। सोचा था कि परीक्षाओं के बाद पत्र लिखूँगी। तुम्हारी वार्षिक परीक्षाएँ भी समाप्त हो चुकी होंगी और परीक्षा फल भी मिल गया होगा। तुमने लिखा था कि तुम्हारी अजमेर की विश्व प्रसिद्ध दरगाह के दर्शन की बड़ी इच्छा है। मैं चाहती हूँ कि यह ग्रीष्मावकाश तुम हमारे साथ बिताओ। तुमसे मिले हुए भी बहुत समय हो गया है। इस बहाने हमें कुछ दिन एक साथ रहने का मौका भी मिल जाएगा।

मुझे विश्वास है कि तुम मेरा अनुरोध स्वीकार करते हुए पत्रोत्तर शीघ्र दोगी।

तुम्हारी प्रिय सखी

कृतिका

3. नगर निगम अधिकारी को नगर में डेंगू, चिकनगुनिया फैलने के कारण एवं उससे निपटने की तैयारियों के संबंध में पत्र

रुचिका कुमारी

9 ए, मधुपुरी, लुधियाना

दिनांक: 12 अगस्त 20_ _

सेवा में

श्रीमान अध्यक्ष महोदय,

नगर निगम, लुधियाना।

महोदय,

निवेदन है कि इस समय हमारे शहर में डेंगू और चिकनगुनिया एक महामारी का रूप ले चुके हैं, रोगियों से अस्पताल भरे पड़े हैं। इसका मुख्य कारण सफाई की उचित व्यवस्था न होना है। सफाई कर्मचारियों की लापरवाही तथा अकर्मण्यता के कारण गंदगी का प्रकोप दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। ओपन उफनते सीवर, ओवरफ्लो नालियों का सड़कों पर बहता गंदा पानी और स्थान-स्थान पर लगे कूड़े के ढेर सचमुच नारकीय दृश्य उपस्थित कर रहे हैं। बीमारी और गंदगी के कारण स्थानीय वासियों का जीवन नर्क बनकर रह गया है। गंदगी के कारण दिन में मक्खियों और रात को मच्छरों का प्रकोप इतना बढ़ गया है कि हमारी नींद और चैन दोनों ही गायब हो गए हैं।

अतः आपसे निवेदन है कि स्थिति की गंभीरता को देखते हुए तुरंत ही इस दिशा में समुचित कदम उठाएँ और नगर की सफाई व्यवस्था सुचारु करें, ताकि हमें इस गंदगी और महामारी की नारकीय यंत्रणा से मुक्ति मिल सके।

विश्वास के साथ,

भवदीया

रुचिका कुमारी

4. अपनी सखी को वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर बधाई पत्र

675, आदर्श नगर, नागपुर

दिनांक : 20 अक्टूबर 20_ _

प्रिय मित्र गरिमा,

सप्रेम नमस्कार।

तुम्हारा कुशल पत्र प्राप्त हुआ। यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि तुमने विद्यालयस्तरीय वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। इस सफलता के लिए मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करो। मेरा विचार है कि विद्यालयों में इस प्रकार के क्रियाकलाप बड़े उपयोगी हैं। प्रजातंत्र व्यवस्था में इस प्रकार का प्रारंभिक प्रशिक्षण प्राप्त होना परम आवश्यक है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम अपनी सफलता को इसी प्रकार आगे भी बनाए रखोगी। पुनः एक बार हार्दिक बधाई स्वीकार करो।

शुभकामनाओं सहित,

तुम्हारी अभिन्न सहेली

मुस्कान भार्गव

5. विद्यालय में आयोजित वृक्षारोपण कार्यक्रम का विवरण देते हुए नानाजी को पत्र

राम बाग

नई दिल्ली

दिनांक 26 जुलाई 20_ _

आदरणीय नाना जी

सादर चरण स्पर्श।

आशा है, आप सब सकुशल होंगे। आज हमारे विद्यालय में वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में जिलाधिकारी पधारे थे। उन्होंने वृक्षों के महत्व के बारे में तथा पर्यावरण की सुरक्षा के बारे में अनेक बातें बताईं। उनके साथ अन्य कई अधिकारी भी आए थे।

जिलाधिकारी महोदय, अधिकारी, प्रधानाचार्य, शिक्षकगण तथा स्कूल के कुछ छात्रों ने मिल-जुलकर कई पौधे लगाए। मुझे भी इस आयोजन में पौधा लगाने के लिए अवसर प्राप्त हुआ।

इस अवसर पर नृत्य, नाटक जैसे अन्य कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। इन कार्यक्रमों के माध्यम से पर्यावरण सुरक्षा का संदेश दिया गया। यह आयोजन सभी के लिए बहुत महत्वपूर्ण बन गया।

नानीजी को चरण स्पर्श।

आपका प्रिय

अंकुर शर्मा

6. पासबुक खो जाने की सूचना देते हुए नई पासबुक जारी करने हेतु बैंक अधिकारी को पत्र

सेवा में,

श्रीमान शाखा प्रबंधक महोदय

बैंक ऑफ बड़ौदा

गणपति शाखा, इंदौर

विषय—नई बैंक पासबुक जारी करने के संबंध में

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं राजेश कुमार आपकी बैंक में खाताधारक हूँ। आपकी गणपति नगर बैंक शाखा में मेरा बचत खाता है, जिसका खाता संख्या 3278XXXX है। मैं अपने काम से बाहर गया था, उस समय मेरा बैग चोरी हो गया। जिसमें मेरे अन्य जरूरी कागजात के साथ पासबुक भी चोरी हो गई, जिसके कारण मैं अपने खाते की जानकारी तथा लेन-देन करने में असमर्थ हूँ।

अतः आपसे नम्र निवेदन है कि मेरी नई पासबुक जारी करने की कृपा करें। इसके लिए मैं आपका आभारी रहूँगा।

धन्यवाद

नाम : राजेश कुमार

खाता संख्या : 3278XXXX

मोबाइल नंबर : 8100XXXXX

हस्ताक्षर : ……………………

7. **प्रधानाध्यापक को कक्षा-वर्ग बदलवाने के लिए प्रार्थना-पत्र**

सेवा में,

प्रधानाध्यापक महोदय

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय

भोपाल (म.प्र.)

विषय— कक्षा-वर्ग बदलवाने के संबंध में

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं अभय भटनागर कक्षा 8 (ब) का छात्र हूँ। मैं आपसे 8 (ब) से 8 (अ) में कक्षा बदलवाने का अनुरोध कर रहा हूँ। वर्तमान कक्षा में कुछ उद्दंड छात्रों की वजह से शोर-शराबा अधिक रहता है। शिक्षक महोदय की पढ़ाई की शैली मेरे अनुकूल नहीं है, जिसके कारण मुझे पढ़ाई में कठिनाई हो रही है। कक्षा 8 (अ) में बेहतर शिक्षण वातावरण है। मेरे कुछ मेधावी साथी भी इस कक्षा में पढ़ते हैं। शिक्षक महोदय की पढ़ाने की शैली भी मेरे अनुकूल है। कक्षा 8 (अ) में जाने से मेरी पढ़ाई में सुधार होगा और मैं बेहतर प्रदर्शन कर सकूँगा।

आपसे विनम्र निवेदन है कि मेरी इस प्रार्थना पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करके कक्षा-वर्ग को बदलने की कृपा करें। आपकी इस कृपा के लिए मैं आपका आभारी रहूँगा।

धन्यवाद,

आपका आज्ञाकारी शिष्य

दीपक गजपुरा

कक्षा 8 (ब)

अनुक्रमांक 13

दिनांक 17-7-20_ _

8. सेवा में

श्रीमान प्रधानाध्यापक,

आदर्श विद्या मंदिर, चिड़ावा।

विषय— अस्वस्थता के कारण प्रधानाचार्य को पाँच दिन के अवकाश हेतु प्रार्थना पत्र

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं कल रात से अस्वस्थ हूँ। डॉक्टर ने मुझे पूर्ण आराम करने की सलाह दी है। डॉक्टर के अनुसार मुझे पूरी तरह स्वस्थ होने में लगभग पाँच-छह दिन लगेंगे। अतः मैं विद्यालय में आने में असमर्थ हूँ। आपसे प्रार्थना है कि आप मुझे 15.9.20_ _ से 19.9.20_ _ तक पाँच दिन का अवकाश प्रदान करने की कृपा करें। मैं आपका सदैव आभारी रहूँगा।

दिनांक: 15.9.20_ _

आपका आज्ञाकारी शिष्य

अंशुल गुप्ता

कक्षा 8

9. संपादक को समाचार पत्र में रचना प्रकाशित करने का अनुरोध करते हुए पत्र

240 लोक विहार

गौतमपुरा

पटना

दिनांक : 2 अगस्त 20_ _

सेवा में

संपादक महोदय,

हिंदुस्तान दैनिक समाचार पत्र

पटना

विषय: समाचार पत्र में लेख के प्रकाशन हेतु

महोदय,

मैं आपके प्रतिष्ठित समाचार पत्र 'हिंदुस्तान' का नियमित पाठक हूँ। इस समाचार पत्र की स्पष्टवादिता और समाचारों की विश्वसनीयता के कारण मैं इसे बहुत पसंद करता हूँ। महोदय बचपन से ही लेखन में मेरी काफी रुचि रही है। कविता, कहानी लेखन मुझे विशेष प्रिय है। मेरी कुछ रचनाएँ विद्यालय पत्रिका, दैनिक जागरण, दैनिक भास्कर, ई-पत्रिका में प्रकाशित हो चुकी हैं।

मैं चाहता हूँ कि मेरी रचनाएँ आपके समाचार पत्र में भी प्रकाशित हों। आज चारों ओर व्यापक भ्रष्टाचार की समस्याओं को आधार बनाकर मैंने एक लेख लिखा है, जो आपकी सेवा में प्रेषित है। यदि आप इसे अपने समाचार पत्र के संपादकीय विचार स्तंभ में प्रकाशित करें, तो मैं आपका सदा आभारी रहूँगा।

धन्यवाद सहित।

भवदीय

सचिन गुलिआनी

10. सेवा में

श्रीमान प्रधानाचार्य महोदय,

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय

गुना।

विषय: स्थानांतरण प्रमाण पत्र (टी.सी.) प्रदान करने के संबंध में।

मान्यवर,

विनम्र निवेदन है कि मेरे पिताजी न्याय विभाग में लिपिक पद पर कार्यरत हैं। उनका स्थानांतरण गुना से अहमदाबाद हो गया है। मुझे भी अपने पिताजी के साथ अहमदाबाद जाना है। अतः श्रीमान जी से निवेदन है कि मुझे विद्यालय से स्थानांतरण पत्र दिलवाने की कृपा करें, ताकि मैं वहाँ राजकीय विद्यालय में प्रवेश लेकर अपना अध्ययन जारी रख सकूँ।

धन्यवाद!

दिनांक: 25 दिसंबर 20......

आपका आज्ञाकारी शिष्य

रोहित नंदन

कक्षा 8 अ

11. सेवा में,

प्रबंधक महोदय

दिल्ली परिवहन निगम

दिल्ली

विषय– कॉलोनी में बस सेवाओं की अव्यवस्था के संबंध में

महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि मैं मोहित नटेश राजविहार एक्सटेंशन दिल्ली का निवासी हूँ। मैं अपनी कॉलोनी में बस सेवाओं की खराब स्थिति से आपको अवगत कराना चाहता हूँ। राजविहार एक्सटेंशन में बस सेवा की स्थिति बहुत दयनीय है। बसें अपने निर्धारित समय से काफी देर से आती हैं, जिससे खासकर सुबह काम पर जाने वालों और छात्रों को बहुत परेशानी होती है। हमारी कॉलोनी के लिए पर्याप्त बसें नहीं हैं, जिससे बसों में अधिक भीड़ हो जाती है। बसों की सफाई का ध्यान नहीं रखा जाता, अधिकांश बसों की सीटें टूटी हुई अथवा उखड़ी हुई हैं, जिससे यात्रियों को यात्रा करते समय कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

इन अव्यवस्थाओं के कारण, यात्रियों को बहुत कठिनाई हो रही है। मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि आप इन समस्याओं पर ध्यान दें और शीघ्र ही आवश्यक कार्रवाई करें, ताकि कॉलोनीवासियों को बेहतर बस सेवाएँ मिल सकें।

भवदीय

अरविंद सिंह चौहान

रामविहार एक्सटेंशन

दिल्ली

दिनांक 12.08.20_ _

अध्याय–21 संवाद लेखन

1. समय के महत्व पर माँ-पुत्र के बीच संवाद

माँ — वंश बेटा, उठो, सुबह हो गई। देखो, सूरज निकल आया है।

वंश — मम्मी थोड़ी देर और सोने दो, छुट्टी का दिन है।

माँ — छुट्टी है तो क्या हुआ? समय तो बीत ही रहा है। समय का महत्व जानो और उसका सदुपयोग करो।

वंश — समय का महत्व, सदुपयोग! मैं समझा नहीं।

माँ — बेटा समय का सही इस्तेमाल करना चाहिए। समय बहुत कीमती है। एक बार जो समय बीत गया, वह लौटकर नहीं आता।

वंश — लेकिन मैं क्या करूँ। अभी तो कुछ काम भी नहीं है।

माँ — काम नहीं है तो भी समय का सदुपयोग कर सकते हो। जैसे– अपनी मनपसंद पुस्तक पढ़ो या दोस्तों के साथ खेलो या कुछ रचनात्मक कामों में समय लगाओ।

वंश — ठीक है मम्मी, मैं समझ गया। मैं अब समय व्यर्थ नहीं नष्ट करूँगा।

माँ — बहुत अच्छा। खुश रहो बेटा।

2. अपने आस-पास की स्वच्छता बनाए रखने के लिए छात्रों में परस्पर संवाद।

कबीर — हमारे यहाँ इतनी ज्यादा गंदगी क्यों है?

कमल — क्योंकि कबीर हम परिवेश को स्वच्छ रखने पर समुचित ध्यान नहीं देते हैं।

कबीर — मैं एक नागरिक के रूप में क्या कर सकता हूँ?

कमल — घरेलू कचरे को सड़क के किनारे रखे हुए कचरा पात्रों में डालना चाहिये। हमें अपने घर के सामने के सार्वजनिक मार्ग (सड़क) को साफ रखना चाहिये। हमें प्रत्येक रविवार या अन्य अवकाश के दिन एक घण्टा सामुदायिक सफाई के लिये अर्पित करना चाहिये। हमें सार्वजनिक स्थानों पर गंदगी करने से बचना चाहिये। हमें दीवारों, पगडंडियों और सड़कों पर थूकने से अपने आप को रोकना चाहिये। हमें खुली जगह में मूत्र व मल त्याग करने से बचना चाहिये।

कबीर — एक नागरिक के रूप में मुझे क्या नहीं करना चाहिये?

कमल — हमें सड़कों पर कूड़ा करकट नहीं फेंकना चाहिये। हमें बस व रेल के डिब्बों में छिलके व अन्य कचरे से गंदगी नहीं फैलानी चाहिए। हमें प्लास्टिक की थैलियों का प्रयोग नहीं करना चाहिये। हमें दीवारों पर पोस्टर नहीं चिपकाने चाहिये। हमें बचा हुआ भोजन (जूठन) नहीं फेंकना चाहिये।

कबीर — क्या भारत सरकार ने स्वच्छ भारत के लिए कोई कार्य योजना शुरू नहीं की है?

कमल — अरे! हाँ, भारत सरकार ने 'स्वच्छ भारत अभियान' शुरू किया है। ग्रामीण व शहरी भारत को अगले पाँच वर्षों में साफ बनाना है।

कबीर — यदि हम सब नागरिक इन नियमों का पालन करें तो हम स्वच्छ भारत के लिये योगदान कर सकते हैं।

कमल — हाँ, मैं आशा करता हूँ, विद्यार्थी और नागरिक भारत को स्वच्छ सुनिश्चित करने के लिए भरसक प्रयास करेंगे।

3. तंबाकू और धूम्रपान के दुष्प्रभावों पर शिक्षिका और छात्रों के बीच संवाद

शिक्षिका — नमस्ते बच्चो, आज हम तंबाकू और धूम्रपान के हानिकारक प्रभावों पर चर्चा करेंगे।

सभी छात्र— जी मैम, बहुत अच्छा।

शिक्षिका — क्या आप जानते हैं कि यह स्वास्थ्य के लिए कितना बुरा है? तम्बाकू और धूम्रपान का हमारे मस्तिष्क पर बुरा प्रभाव पड़ता है। इससे कैंसर जैसी बीमारी भी हो जाती है। फेफड़े खराब हो जाते हैं। इसके अलावा अन्य अनेक रोग शरीर को दुर्बल बना देते हैं।

एक छात्र— इसलिए मैम हमारे स्कूल के बाहर बोर्ड लगा है, जिसमें धूम्रपान न करने की चेतावनी लिखी है।

शिक्षिका— बहुत सही! तो बच्चो हम सभी संकल्प लेते हैं कि भविष्य में हम कभी धूम्रपान तथा तंबाकू का उपयोग नहीं करेंगे।

एक छात्रा— साथ ही, जो भी ऐसा करता है उसे इसकी हानियाँ बताकर इसे छोड़ने के लिए कहेंगे।

शिक्षिका — यह तो बहुत अच्छी बात है। हम सब इसका ध्यान रखेंगे।

4. मोबाइल के अधिक इस्तेमाल से परेशान दो मित्रों के बीच संवाद

अमित — मित्र, मुझे लग रहा है कि आजकल मैं मोबाइल फोन का उपयोग अधिक कर रहा हूँ।

रवि — सही कह रहे हो, दोस्त, मुझे भी लगता है कि मोबाइल मुझसे भी अधिक चिपक गया है। बीच-बीच में जब भी टाइम मिलता है, मैं मोबाइल देखने लग जाता हूँ।

अमित — मोबाइल के कारण पढ़ाई और नींद दोनों ही नहीं हो पाती हैं।

रवि — मेरी भी यही स्थिति है, मोबाइल की वजह से मेरा तो सिर भी दर्द करने लगा है।

अमित — मेरी अध्यापिका जी बता रही थीं कि ज्यादा देर तक मोबाइल देखने से चिंता और अवसाद भी हो जाते हैं।

रवि — सही कहा, और हाँ रात को सोने से पहले मोबाइल देखना भी गलत है।

अमित — मुझे लगता है कि हमें मोबाइल के अधिक उपयोग से बचना चाहिए।

रवि — बहुत बढ़िया विचार है। चलो आज से ही शुरू करते हैं।

5. अध्यापक व छात्रों के बीच ग्लोबल वार्मिंग पर संवाद

शिक्षक — आज हम ग्लोबल वार्मिंग के बारे में चर्चा करेंगे, यह एक ऐसा विषय है, जिस पर सभी को जागरूक होना चाहिए।

छात्र — सर, ग्लोबल वार्मिंग क्या है और यह कैसे होता है?

शिक्षक — आजकल तुम मौसम में बदलाव देख रहे हो, गर्मी बहुत बढ़ गई है। यह ग्लोबल वार्मिंग ही है। इसका प्रमुख कारण वनों की कटाई, कोयला, तेल जैसे ईंधनों का अधिक प्रयोग तथा बढ़ती औद्योगिक गतिविधियाँ हैं।

छात्र — इन सबका क्या प्रभाव होता है?

शिक्षक — इन सब गतिविधियों से ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन होता है, जो पृथ्वी के तापमान को बढ़ा रहा है।

छात्र — ग्लोबल वार्मिंग के और क्या दुष्परिणाम हैं?

शिक्षक — मौसम में बदलाव, समुद्र के स्तर का बढ़ना, पारिस्थितिक असंतुलन तथा मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव आदि अनेक दुष्परिणाम होते हैं।

छात्र — ग्लोबल वार्मिंग से कैसे बचा जा सकता है?

शिक्षक — गीले कूड़े और सूखे कूड़े को बढ़ावा, वृक्षारोपण संरक्षण, प्लास्टिक पर पाबंदी तथा कचरा रिसाइक्लिंग करने जैसे उपाय शामिल हैं।

छात्र — इस महत्वपूर्ण जानकारी के लिए बहुत बहुत धन्यवाद सर जी।

6. क्रिकेट मैच के संबंध में दो मित्रों के बीच संवाद

उत्कृष्ट — सुयश क्या तुमने कल विद्यालय में हुए क्रिकेट मैच को देखा था?

सुयश — हाँ देखा था, क्या शानदार मैच था? तुम्हारी टीम ने बहुत अच्छा खेला।

उत्कृष्ट — हाँ विशु की बल्लेबाजी तो कमाल की थी। उसने एक शतक भी ठोका।

सुयश — एक बार तो लगा कि तुम्हारी टीम लक्ष्य पाने में पिछड़ रही है।

उत्कृष्ट — सही कह रहे हो, दूसरी टीम के दो गेंदबाज मोहन और मानव ने अपनी गेंद से बल्लेबाजों को बहुत परेशान किया। दोनों ने मिलकर हमारी टीम के पाँच खिलाड़ी पवेलियन भेज दिए।

सुयश — हाँ, सही है लेकिन मित्र आखिरी ओवर में आपके द्वारा लगाए तीन छक्कों की मदद से आपने टीम को जीत दिला दी।

उत्कृष्ट — सच में, इस मैच में बहुत रोमांच रहा था। चलो अगले मैच की तैयारी करते हैं।

सुयश — ठीक है मित्र चलता हूँ।

7. डाकिये और बूढ़े व्यक्ति के बीच संवाद

वृद्ध व्यक्ति — क्या आप ही इस क्षेत्र की डाक बाँटते हैं?

डाकिया — जी, बाबूजी बताइए। आपकी क्या समस्या है?

वृद्ध व्यक्ति — मुझे पिछले महीने मुझे मेरा मनीआर्डर नहीं मिला।

डाकिया — मनीआर्डर कहाँ से आना था?

वृद्ध व्यक्ति — मेरे पुत्र ने मुझे भेजा था जो मुझे नहीं मिला।

डाकिया — ओह यह तो ठीक नहीं है।

वृद्ध व्यक्ति — क्या आप देख सकते हैं कि वह कहाँ है?

डाकिया — ठीक है, मैं पोस्ट ऑफिस में जाकर पता करता हूँ।

वृद्ध व्यक्ति — जी बहुत बहुत धन्यवाद।

8. रिक्शा चालक और यात्री के बीच संवाद

यात्री — भैया! चौक बाजार तक चलोगे।

रिक्शा चालक — जी साहब, चलूँगा।

यात्री — कितना किराया लोगे?

रिक्शा चालक — पचास रुपये दे देना साहब।

यात्री — पचास रुपये तो बहुत अधिक हैं पिछली बार मैं चालीस रुपये में गया था।

रिक्शा चालक — नहीं साहब, महँगाई हर रोज बढ़ रही है। खर्च भी पूरा नहीं होता। फिर चौक बाजार तक जाने में जाम भी बहुत मिलता है।

यात्री — चलो ठीक है, पैंतालीस रुपये ले लेना।

रिक्शा चालक — ठीक है, साहब, बैठिए। मैं चलता हूँ।

9. छात्रों की बढ़ती नशे की प्रवृत्ति पर संवाद

सुधांशु — मीना कैसी हो, बहुत दिन बाद दिखाई दे रही हो।

मीना — मैं बढ़िया हूँ, तुम बताओ? हाँ काफी समय हो गया।

सुधांशु — मैं भी ठीक हूँ। लेकिन आजकल विद्यालय के बाहर कुछ अजीब सा माहौल दिख रहा है।

मीना — क्या मतलब?

सुधांशु — मतलब, कुछ लड़के विद्यालय के बाहर आकर सिगरेट और गुटखा का सेवन करते हैं। लगता है उन्हें नशे की लत लग गई है।

मीना — हाँ, मैंने भी देखा है। यह बहुत दुःख की बात है कि हमारी युवा पीढ़ी नशे की तरफ जा रही है।

सुधांशु — बिल्कुल सही कहा। नशा न केवल सेहत के लिए बुरा है बल्कि यह सामाजिक और मानसिक समस्याएँ भी पैदा करता है।

मीना — मैंने सुना है कि रोहन (एक छात्र) की पढ़ाई भी प्रभावित हो रही है। वह कक्षा में अक्सर लेट आता है और पढ़ाई में भी मन नहीं लगाता।

सुधांशु — हाँ, और उसका परिवार भी बहुत परेशान है। नशे की आदतें परिवार को भी दुःखी कर देती हैं।

मीना — हमें कुछ करना चाहिए। उन्हें समझाना होगा कि नशे से छुटकारा पाना जरूरी है।

सुधांशु — सही कहा। चलो, आज शाम को मिलकर उनसे बात करते हैं और उन्हें सहारा देने की कोशिश करते हैं।

मीना — बिल्कुल। हमें मिलकर इस समस्या से लड़ना होगा और अपने छात्रों को नशे से बचाना होगा।

10. परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने को आधार बनाकर गोविंद तथा हर्ष के मध्य एक काल्पनिक संवाद

गोविंद — अरे हर्ष! कैसे हो? सुना है तुम्हारी परीक्षाएँ आने वाली हैं।

हर्ष — हाँ गोविंद, बस तैयारी कर रहा हूँ। इस बार परीक्षा में अच्छे अंक लाने का लक्ष्य है।

गोविंद — यह तो बहुत अच्छी बात है। तुम्हारी तैयारी कैसी चल रही है?

हर्ष — ठीक-ठाक, बस थोड़ा तनाव है। पिछली बार मेरे अंक उतने अच्छे नहीं थे, जितने मैं चाहता था।

गोविंद — मैं समझता हूँ, चिंता मत करो। मेरे पास एक योजना है।

हर्ष — ओह, सच में। क्या योजना है?

गोविंद — हम हर रोज कुछ घंटे साथ मिलकर पढ़ाई करेंगे। एक-दूसरे को प्रश्न पूछेंगे, जो भी मुश्किल लगेगा, उसे मिलकर सुलझाएँगे।

हर्ष — यह बहुत अच्छा आइडिया है। मुझे लगता है कि यदि हम मिलकर पढ़ाई करेंगे तो इस बार परीक्षा में अच्छे अंक ला सकते हैं।

गोविंद — ठीक है, मैं तुम्हारी बात से सहमत हूँ। चलो आज से ही शुरू करते हैं।

हर्ष — हाँ, बिल्कुल, चलो।

11. भारत-पाक क्रिकेट मैच को लेकर मित्रों में संवाद

सजल — अरे, क्या तुम्हें पता है? भारत-पाकिस्तान का मैच होने वाला है। इस बार तो मजा आने वाला है।

सोमेश — हाँ, बिल्कुल! मुझे तो अभी से रोमांच हो रहा है, पिछले मैच में भारत ने पाक को करारी हार का मजा चखाया था। इस बार वह अपनी हार का बदला लेने का प्रयास करेगा।

गर्वित — हाँ, पिछली बार रोहित बहुत अच्छा खेला था, लेकिन इस बार हमें पूरी टीम से अच्छे प्रदर्शन की उम्मीद है।

विक्रम — मुझे लगता है, इस बार हमारी गेंदबाजी भी बहुत मजबूत है। शमी और बुमराह अच्छे गेंदबाज हैं।

त्रिसूजा — बिल्कुल, बल्लेबाजों में भी हमारे पास राहुल, कोहली, शुभमन गिल जैसे बल्लेबाज हैं।

विजय — लेकिन हमें पाकिस्तान को भी हल्के में नहीं लेना चाहिए, उस टीम में भी बेहतर खिलाड़ी हैं।

सोमेश — हाँ, सच तो है, लेकिन मुझे पूरा विश्वास है कि इस बार भी भारत ही जीतेगा।

सजल — सही है, हम मैदान में पाकिस्तान को धूल चटा देंगे।

अमित — बस, अब तो मैच होने का बेसब्री से इंतजार है।

सजल — चलो, टिकट बुक करते हैं और मैच का आनंद लेंगे।

सोमेश — तो फिर देर किस बात की, चलो टिकट बुक करते हैं।

अध्याय–22 कहानी लेखन

1. **खरगोश और कछुआ**

किसी जंगल में तालाब के किनारे एक खरगोश और एक कछुआ निवास करते थे। उन दोनों में अच्छी मित्रता थी खरगोश अपनी तेज चाल एवं कछुआ अपनी धीमी चाल के लिए प्रसिद्ध था। खरगोश को अपनी तेज चाल पर अभिमान था। इसी कारण एक दिन वह कछुए की धीमी चाल का मजाक उड़ाने लगा खरगोश की बात कछुए को बुरी लगी। उसने कहा, "भले ही तुम्हारी चाल तेज है, किंतु यदि दौड़ हुई तो मैं तुम्हें हरा दूँगा।" फिर क्या था दौड़ प्रारंभ हो गई। खरगोश बहुत तेज दौड़ा और कम समय में ही बहुत दूर निकल गया। इधर कछुआ अपनी धीमी चाल में निरंतर चलता रहा। लगभग एक किलोमीटर की दूरी तय कर खरगोश रुका और पीछे मुड़कर देखा कछुए का दूर-दूर तक कहीं अता पता नहीं था। जब खरगोश को कछुआ दिखाई नहीं दिया तो उसने सोचा कि कुछ देर आराम कर लिया जाए। उसके मन में यह बात थी कि जब कछुआ दिखाई देगा तो वह उठकर तेजी से दौड़ लगाएगा और जीत जाएगा। खरगोश रुक गया और आराम करने के चक्कर में उसे नींद आ गई। इधर कछुआ लगातार चलता रहा। खरगोश देर तक सोता रहा। जब उसकी नींद खुली तो कछुआ फिर उसे दूर तक नजर नहीं आया। वह अचानक उठा एवं तेजी से मंजिल की ओर बढ़ने लगा किंतु वहाँ पहुँचने पर उसके होश उड़ गए यह क्या! कछुआ तो वहाँ पहले से ही मौजूद था। खरगोश हार चुका था। उस दिन खरगोश का अहंकार टूट गया और उसने कछुए का मजाक उड़ाना बंद कर दिया

2. **शेर और खरगोश**

एक जंगल में एक शेर रहता था। वह प्रतिदिन बहुत सारे जानवरों को मार डालता था। सभी जानवर इस बात से बहुत चिंतित थे। इस समस्या के निदान के लिए जानवरों का एक प्रतिनिधिमंडल शेर के पास पहुँचा प्रतिनिधिमंडल के अगुआ ने शेर से विनती की, "महाराज! आप जंगल के राजा हैं और हम आपकी प्रजा। आप प्रतिदिन अनेक जानवरों को मार डालते हैं, उन सबको खा भी नहीं पाते। ऐसी ही स्थिति रही तो एक दिन जंगल में सारे जानवर खत्म हो जाएँगे। महाराज! जब प्रजा ही नहीं रहेगी तो आप राजा कैसे रह पाएँगे?" शेर यह सुनकर कुछ देर चुप रहा, फिर गरज कर बोला, "इसका उपाय क्या है?" अगुआ बोला, "महाराज! आप घर पर ही रहा करें। हम में से कोई एक जानवर प्रतिदिन आपके पास आ जाया करेगा और जब इस प्रकार आपको बिना किसी कष्ट के भोजन प्राप्त हो जाएगा।"

इस समझौते के अनुसार प्रतिदिन एक जानवर शेर के पास जाता और शेर उसे मारकर खा जाता। इसी क्रम में एक दिन एक खरगोश की बारी आई। खरगोश बुद्धिमान था, वह जानबूझकर शेर के पास देर से पहुँचा। शेर बहुत भूखा था वह दहाड़ता हुआ बोला, "एक तो पिद्दी जैसे हो, तुमसे मेरी भूख नहीं मिटेगी। दूसरे देर से आए हो। अब मैं जंगल के किसी भी जानवर को जिंदा नहीं छोड़ूँगा।" खरगोश बोला, "महाराज! मैं अकेला नहीं था। आपके भोजन का ध्यान रखते हुए मेरे साथ पाँच खरगोश और थे। किन्तु रास्ते में एक अन्य शेर मिल गया। उसने हमसे कहा, "इस जंगल का राजा मैं हूँ और मेरे पाँचों साथियों को मारकर खा गया मैं किसी तरह जान बचाकर आया हूँ।" शेर दहाड़ा "मेरे रहते दूसरा कौन होगा? कहाँ है वह? मुझे उसके पास ले चलो।"

खरगोश शेर को एक कुएँ के पास ले गया। वह बोला, "वह शेर इसी गुफा में से निकला था शायद आपको देखकर इसी में घुस गया है" शेर कुएँ में झाँका तो उसे पानी में अपनी परछाई दिखाई दी। उस परछाई को दूसरा शेर समझकर

वह दहाड़ा, कुएँ में अपनी ही आवाज की प्रतिध्वनि सुनाई दी। शेर क्रोध के कारण विवेकशून्य हो गया था। वह परछाई को दूसरा शेर समझकर उसे मारने के लिए कुएँ में कूद गया और पानी में डूबकर मर गया। इस प्रकार खरगोश की सूझबूझ से जंगल के सभी जानवरों को शेर के आतंक से मुक्ति मिल गई।

3. हाथी और घोड़ा

किसी जंगल में एक घोड़ा रहता था। उसकी जिंदगी बहुत मजे में बीत रही थी क्योंकि जहाँ वह रहता था वहाँ घास का एक हरा भरा मैदान था। उस मैदान की घास बड़ी कोमल व स्वादिष्ट थी। घोड़े को आराम से भोजन मिल जाता था, उसे भोजन के लिए भटकना नहीं पड़ता था। एक दिन उस घास के मैदान में एक हाथी आ धमका। उसे भी वह घास बहुत अच्छी लगी। वह जल्दी-जल्दी घास को चरने लगा। चरने के बाद वह बहुत आनंदित हुआ और घास पर लोट-पोट होने लगा, जिससे सारी घास टूटने लगी। यह देखकर घोड़ा बहुत चिंतित हुआ। उसे अपने भविष्य की चिंता सताने लगी।

हाथी से पार पाना घोड़े के बस की बात नहीं थी। बहुत सोच विचार के बाद उसने शेर से मदद लेने की सोची लेकिन फिर उसे डर लगा कि मदद करने के बजाय कहीं शेर उसे ही खा गया तो? अब क्या होगा? अचानक घोड़े को मनुष्य से मदद लेने का विचार आया। घोड़ा मनुष्य के पास गया और उसे अपनी समस्या के बारे में बताया। घोड़े की बात सुनकर मनुष्य ने कहा कि वह हाथी को घास के मैदान से भगा तो देगा किंतु दोबारा आ गया तो? घोड़े को यह बात सही लगी। मनुष्य ने हाथी से छुटकारा पाने के लिए उसे मार डालने की योजना बनाई। घोड़े ने स्वीकृति में सिर हिलाया। मनुष्य ने कहा कि जब वह हाथी को मारने जाएगा तो हाथी भाग जाएगा। अतः घोड़ा अपनी पीठ पर उसे लेकर दौड़े। इस प्रकार हाथी के भागने से पहले ही वह उसके निकट पहुँचकर उसे मार डालेगा। घोड़ा इसके लिए तैयार हो गया। योजना के अनुसार हाथी तो मारा गया किंतु मनुष्य को घोड़े की सवारी करना बहुत अच्छा लगा। उसने घोड़े को अपना दास बनाते हुए पाल लिया। घोड़े को अपने दुश्मन से छुटकारा मिल गया, किंतु वह सदा-सदा के लिए मनुष्य का दास बन गया।

4. चिड़िया और अंडे

किसी जंगल में एक चिड़िया और एक चिड़ा रहते थे। उनका जीवन सुख से बीत रहा था। समय बीतने के साथ-साथ चिड़िया ने अंडे दिए। अंडे दोनों को अत्यंत प्रिय थे। चिड़िया अंडे सेती और चिड़ा भोजन इकट्ठा करता। एक दिन उस पेड़ के पास से होकर एक हाथी गुजरा। शक्ति के घमंड में चूर उस हाथी ने उस पेड़ को जड़ से उखाड़ कर फेंक दिया, जिस पर चिड़िया अंडे से रही थी। चिड़िया के अंडे जमीन पर गिरकर चकनाचूर हो गए। चिड़िया को बहुत दुख हुआ और उसे हाथी पर बहुत क्रोध आया। उसने हाथी से बदला लेने की ठान ली। हाथी जैसे विशाल और शक्तिशाली जानवर के सामने चिड़िया की कोई औकात नहीं थी। उसके लिए हाथी से बदला लेना असंभव था। उसने एक उपाय सोचा। उसी जंगल में उसके तीन साथी और रहते थे। कठफोड़वा, वीणारव मक्खी और मेंढक। चिड़िया उनके पास गई और अपनी दुख भरी कहानी सुनाई। हाथी द्वारा किए गए अत्याचार को जानकर वे भी क्रोध से भर गए। अब सभी मिल हाथी को सबक सिखाने को तैयार थे। वीणारव मक्खी बोली, "मैं हाथी के कान में भिन-भिन भिनाऊँगी जिससे उसे नींद आ जाएगी।" कठफोड़वा बोला, "नींद आते ही मैं हाथी की आँखें फोड़ दूँगा।"

मेंढक बोला, "उस समय जब हाथी प्यासा होगा तो बहुत गहरे गड्ढे के पास अपने साथियों के साथ मैं टर्र-टर्र करूँगा।" हाथी यह सोचकर गड्ढे की तरफ भागेगा कि वहाँ पानी है और उस गहरे गड्ढे में गिरकर निकल नहीं पाएगा। इस प्रकार हाथी भूख प्यास से तड़पकर मर जाएगा। योजना के अनुसार सबने मिलकर कार्य किया। हाथी मर गया और इस प्रकार चिड़िया का बदला पूरा हो गया।

5. द्रोणाचार्य और अर्जुन

द्रोणाचार्य विभिन्न अस्त्र-शस्त्र चलाने में निपुण थे। उन्हें धनुर्विद्या में महारत हासिल थी। वह कौरव और पांडवों को अपने आश्रम में शस्त्र विद्या की शिक्षा देते थे। वह अपने शिष्यों को कुशल धनुर्धर बनाना चाहते थे इसके लिए वह राजकुमारों को धनुर्विद्या के नवीनतम कौशल सिखाते और उनका अभ्यास कराते थे। एक दिन द्रोणाचार्य ने अपने शिष्यों की परीक्षा लेने के लिए मिट्टी की एक चिड़िया बनाकर वृक्ष की डाल पर रख दी। उन्होंने सभी राजकुमारों को बुलाकर चिड़िया की आँख को तीर से बेधने का आदेश दिया। सर्वप्रथम दुर्योधन ने निशाना साधा तभी द्रोणाचार्य ने उससे पूछा कि उसे क्या दिखाई दे रहा है? दुर्योधन ने कहा कि उसे चिड़िया के अतिरिक्त वृक्ष की टहनी, फल और पत्तों के बीच से झाँकता आकाश साफ दिखाई दे रहा है यह उत्तर सुनकर द्रोणाचार्य ने यह कहते हुए कि अभी उसे बहुत कुछ सीखना है। उसे वहीं से हटा दिया इसी प्रकार बारी-बारी से सभी को लक्ष्य बेधने के लिए बुलाया। परंतु किसी ने भी ऐसा उत्तर नहीं दिया जो द्रोणाचार्य को संतुष्ट कर सके। अंत में अर्जुन से निशाना साधने के लिए कहा गया। निशाना साध लेने पर गुरुजी ने उससे भी वही प्रश्न किया। उसने जवाब दिया कि मुझे केवल चिड़िया की आँख दिखाई दे रही है यह सुनकर द्रोणाचार्य ने तीर चलाने का आदेश दिया तीर चिड़िया की आँख में लगा द्रोणाचार्य ने प्रेम के साथ अर्जुन की पीठ थपथपा कर शाबाशी दी और सभी शिष्यों से कहा कि लक्ष्य को ध्यान में रखकर काम करना ही सफलता की कुंजी है

6. चरवाहा और गाय

एक गाँव में रामू नाम का एक चरवाहा रहता था। उसके पास एक गाय थी। चरते समय वह गाय एक गड्ढे में गिर गई। रामू ने बहुत प्रयत्न किया लेकिन वह गाय को गड्ढे से बाहर नहीं निकाल सका थक-हारकर वह गाँव लौट आया। गाँव से कुछ लोग रस्सी लेकर आए, लेकिन गाय को नहीं निकाल सके। रामू वहीं गड्ढे के पास बैठ गया और गाँव के लोग वापस लौट आए। थोड़ी देर बाद उसे एक उपाय सूझा। उसने पास से ही मिट्टी खोदकर गाय के ऊपर डालना शुरू किया। शरीर पर मिट्टी पड़ते ही गाय ने उसे हिलाकर नीचे गिरा दिया। इस प्रकार रामू मिट्टी डालता गया। गाय मिट्टी को गिराकर उस मिट्टी के ऊपर होती जाती, धीरे-धीरे गड्ढा आधा भर चुका था गाय अब गड्ढे से ऊपर आती जा रही थी। रात हो गई, लेकिन रामू ने हार नहीं मानी। रामू की मेहनत रंग लाई, गड्ढा मिट्टी से भर गया तो गाय उछलकर बाहर आ गई गाय पाकर रामू बहुत प्रसन्न था। अब गाय भी प्रसन्नता से रामू के साथ-साथ घर को लौट रही थी

7. बंदर और गौरैया

जंगल में एक पेड़ पर एक गौरैया रहती थी। उसने परिश्रम करके पेड़ पर एक मजबूत और सुंदर घोंसला बनाया, जिसमें वह सुखपूर्वक अपने बच्चों के साथ रहती थी जाड़े का मौसम था। अचानक एक दिन जोर से बारिश हुई उसी पेड़ पर एक बंदर था। ठंड का मौसम और ऊपर से बरसात; बंदर परेशान होकर इधर-उधर उछलने-कूदने लगा, लेकिन उसे कहीं रुकने की भी जगह नहीं मिल रही थी। परेशान बंदर एक डाल पर चिपककर बैठ गया बंदर की दुर्दशा देखकर गौरैया से नहीं रहा गया और बड़े ही दुखी स्वर में उसने बंदर से कहा "बंदर भैया, मैंने आपको कितनी बार समझाया था कि आप अपने लिए एक घर बना लें, लेकिन आपने एक नहीं सुनी। अब कितने परेशान हो रहे हो। बंदर को गौरैया की सीख बिल्कुल भी अच्छी नहीं लगी। खिसियाकर उसने गौरैया का घोंसला तोड़-मरोड़कर फेंक दिया। बेचारी गौरैया बंदर को समझाने के कारण अपने घोंसले से हाथ धो बैठी

8. साँप और किसान

एक गाँव में एक किसान रहता था गाँव से थोड़ी दूर पर उसका खेत था। जिसमें अनाज उगाकर वह अपने परिवार का पालन-पोषण करता था। एक बार ठंड के दिनों में वह अपने खेत पर गया। वहाँ उसने देखा कि ठंड के कारण

एक साँप अकड़ा पड़ा था। ऐसा लग रहा था कि कुछ ही देर में वह मर जाएगा। किसान बहुत दयालु था। वह साँप को ठंड में मरते हुए नहीं देख सकता था। कोई उपाय न देख उसने साँप को उठाकर अपने सीने से चिपका लिया। किसान से गर्मी पाकर साँप को कुछ चेतना आई। धीरे-धीरे गर्मी पाकर साँप सही हो गया। अचानक उसने अपने विषैले दाँतों से किसान को ही काट लिया। थोड़ी ही देर में किसान मर गया।

9. शेर और चूहा

किसी वन में एक शेर रहता था। एक दिन वह अपनी गुफा के सामने एक पेड़ की शीतल छाया में सो रहा था। उसी वृक्ष के नीचे एक चूहा भी जमीन में बिल बनाकर रहता था। चूहा अपने बिल से निकला और शेर के ऊपर चढ़ गया। वह अपने स्वभाव के अनुसार अपने तीखे दाँतों से शेर के बाल कुतरने लगा। शेर जाग गया। उसने अपने पंजे से चूहे को पकड़ लिया। नींद से जागा क्रोधित शेर चूहे को मारने ही वाला था कि चूहा गिड़गिड़ाया,
श्रीमान्! हम आपकी प्रजा हैं, आप हमारे राजा हैं, आप मुझे क्षमा कर दीजिए, मेरे प्राण बख्श दीजिए।
एक दिन मैं इसका बदला अवश्य चुका दूँगा। शेर को चूहे की प्रार्थना पर दया आ गई और उसने उसे छोड़ दिया।
कुछ समय पश्चात् वही शेर शिकारियों द्वारा बिछाए गए जाल में फँस गया। शेर ने जाल से मुक्त होने की बहुत कोशिश की किन्तु असफल रहा। शेर अपनी बेबसी के कारण जोर-जोर से दहाड़ने लगा। उसकी दहाड़ सुनकर वही चूहा तुरंत वहाँ पहुँचा और उसने अपने तीखे दाँतों से जाल को कुतर दिया। शेर मुक्त हो गया। तब शेर को अनुभव हुआ कि किसी पर किया गया उपकार कभी व्यर्थ नहीं जाता।

10. बातूनी कछुआ और हंस

किसी तालाब में एक कछुआ रहता था। उसी तालाब में दो हंस तैरने के लिए आते थे। धीरे-धीरे कछुए और हंसों के बीच में दोस्ती हो गई। हंस बहुत ज्ञानी भी थे। वे कछुए को अद्भुत बातें बताते। ऋषि मुनियों की कहानियाँ सुनाते। कछुआ मंत्रमुग्ध होकर उनकी बातें सुनता। बाकी तो सब ठीक था पर कछुए को बातों के बीच में टोका-टाकी करने की बहुत बुरी आदत थी। अपने सज्जन स्वभाव के कारण हंस उसकी इस आदत का बुरा नहीं मानते थे। उनकी मित्रता चलती रही।
एक बार भयंकर सूखा पड़ा। उस तालाब का पानी सूखने लगा। एक समय ऐसा भी आया कि तालाब में केवल कीचड़ ही रह गई। कछुआ बड़े संकट में पड़ गया। वहीं पड़ा रहता, तो कछुए का अंत निश्चित था। हंस अपने मित्र पर आए संकट को दूर करने का उपाय सोचने लगे। एक दिन हंसों ने कछुए से कहा, "यहाँ से पचास कोस दूर एक झील है, उसमें काफी पानी है। तुम हमारे साथ वहाँ चलो। वहाँ तुम मजे से रहोगे।" कछुआ रोनी-सी आवाज में बोला, "पचास कोस! इतनी दूर जाने में मुझे महीनों लगेंगे। तब तक तो मैं मर ही जाऊँगा।" हंसों ने अक्ल दौड़ाई और एक तरीका खोज निकाला। वे एक लकड़ी का टुकड़ा उठाकर लाए और बोले, "मित्र! हम दोनों अपनी चोंच से इस लकड़ी के दोनों सिरों को पकड़कर एक साथ उड़ेंगे। तुम इस लकड़ी को बीच में पकड़े रहना। इस प्रकार हम उस झील तक तुम्हें पहुँचा देंगे। उसके बाद तुम्हें कोई चिंता नहीं रहेगी।" उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा, "याद रखना, उड़ान के दौरान अपना मुँह न खोलना वरना गिरकर मर जाओगे।" कछुए ने यह बात मान ली। तब लकड़ी पकड़कर हंस उड़ चले। उनके बीच में लकड़ी को मुँह में दबाकर कछुआ लटका गया। एक कस्बे के ऊपर से उड़ रहे थे कि नीचे खड़े लोगों ने आकाश में अद्भुत नजारा देखा। बूढ़े, बच्चे, औरतें व जवान सभी ऊपर देखने लगे। उन्होंने ऐसा विचित्र दृश्य देखकर खूब शोर मचाया। कछुए की नजर उन लोगों पर पड़ी। उसे आश्चर्य हुआ कि उन्हें इतने लोग देख रहे हैं। वह अपने मित्रों की चेतावनी भूल गया और चिल्लाया, "देखो, कितने लोग हमें देख रहे हैं।" उसका मुँह खुलते ही वह नीचे गिर गया। नीचे गिरते ही उसकी हड्डी-पसली का भी पता नहीं लगा। हंसों को अपने मित्र की मूर्खता पर बहुत दुख हुआ। हंसों को नया ज्ञान प्राप्त हुआ कि असमय की गई मूर्खता भी मृत्यु का कारण बन जाती है।

अध्याय–23 निबन्ध लेखन

1. सर्व शिक्षा अभियान

प्रस्तावना—'सब पढ़ें सब बढ़ें' नारे को सार्थक करने के लिए सर्व शिक्षा अभियान का प्रारंभ भारत सरकार द्वारा किया गया है। यह एक प्राथमिक बुनियादी शिक्षा प्रदान करने का अभियान है।

प्रारंभ—सर्व शिक्षा अभियान भारत सरकार द्वारा सन 2001 में शुरू किया गया था, जिसमें सभी 6–14 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा प्रदान की जाती है।

उद्देश्य—सर्व शिक्षा अभियान का उद्देश्य 2010 तक प्राथमिक शिक्षा को सार्वभौमिक बनाना था। इस अभियान के मुख्य उद्देश्य थे– गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और शिक्षा तक सभी बालकों की पहुँच।

लाभ—इस अभियान से अनेक लाभ हुए हैं, जिनमें बच्चों को मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा मिलती है तथा शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हुआ है।

अन्य सहायक कार्यक्रम—सर्व शिक्षा अभियान की मुख्य उपलब्धियाँ हैं—बच्चों का स्कूल में नामांकन बढ़ाकर शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार, स्कूल छोड़ने की दर कम होना। इसके अतिरिक्त वंचित समूह तक शिक्षा की पहुँच तथा लैंगिक असमानता कम होना इसकी उपलब्धियाँ हैं।

उपसंहार—सर्व शिक्षा अभियान से भारत में शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है, जिसमें अधिक बच्चों को स्कूल जाने और बेहतर शिक्षा प्राप्त करने में मदद मिली है।

2. खेलो–कूदो, आगे बढ़ो

प्रस्तावना—खेलों का मनुष्य जीवन में बहुत अधिक महत्व है, क्योंकि खेलने से हमारा शरीर स्वस्थ रहता है तथा मानसिक विकास होता है।

खेलों की आवश्यकता—खेलों से हमारे अंदर आत्मविश्वास, सहयोग, अनुशासन, साहस, एकता आदि मानवीय गुणों का भी विकास होता है। हमें नए-नए लोगों से मिलने और समझने का अवसर मिलता है। शारीरिक और मानसिक विकास के लिए खेलों की बहुत आवश्यकता है।

विभिन्न प्रकार के खेल—खेलों को मुख्यतः दो श्रेणियों में बाँटा जा सकता है– इनडोर गेम और आउटडोर गेम। घर के अंदर खेले जाने वाले खेल इनडोर गेम कहलाते हैं, जैसे– शतरंज, कैरम, लूडो, साँप सीढ़ी, टेबिल टेनिस आदि। घर से बाहर खेले जाने वाले खेल आउटडोर गेम कहे जाते हैं। जैसे– क्रिकेट, फुटबॉल, बैडमिंटन, टेनिस, बास्केट बॉल, हॉकी, खो-खो, कबड्डी आदि।

खेलों का महत्व—खेलों का जीवन में बहुत महत्व है। यह न केवल शारीरिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है, बल्कि मानसिक और सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। खेलों से आत्मविश्वास, टीमवर्क और अनुशासन जैसे जीवनोपयोगी कौशल विकसित होते हैं।

उपसंहार—खेलो, कूदो और आगे बढ़ो। यह एक नारा नहीं, बल्कि एक जीवनशैली है, जो स्वस्थ और खुशहाल जीवन जीने में मदद करती है। इसलिए खेलों को अपने जीवन का अनिवार्य हिस्सा बनाएँ और जीवन में आगे बढ़ें।

3. रेलवे प्लेटफॉर्म का दृश्य

प्रस्तावना—यातायात के साधनों में रेलगाड़ी का महत्वपूर्ण स्थान है। यह सस्ती, सुलभ और अधिक सुरक्षित सवारी है। रेलवे स्टेशन, जहाँ रेलगाड़ी रुकती है, वहाँ बने चबूतरों को रेलवे प्लेटफार्म कहते हैं।

रेलवे प्लेटफॉर्म का दृश्य—एक बार मैं अपने परिवार के साथ जयपुर जाने के लिए रेलवे स्टेशन पहुँचा, वहाँ प्लेटफार्म का दृश्य बहुत ही हलचल से भरा था। प्लेटफार्म पर गाड़ी में चढ़ने, उतरने वालों, अपने संबंधियों अथवा मित्रों को

विदाई तथा अगवानी करने वालों की भीड़ लगी हुई थी। प्लेटफॉर्म पर भीड़ का बहुत शोर-शराबा था। इसके अतिरिक्त सामान उठाने, गाड़ी में रखने, उतारने वाले कुली भाग-दौड़ कर रहे थे। एक-दो भिखारी भी प्लेटफॉर्म पर दिखाई दे रहे थे। खाने-पीने के सामान की तथा दैनिक उपयोग की चीजें तथा पत्र-पत्रिकाओं और पुस्तकों की अनेक स्टाल लगी हुई थीं। कुछ लोग प्लेटफॉर्म पर बनी बैंचों पर बैठे थे, कुछ चहलकदमी कर रहे थे।

गाड़ी का आगमन—कुछ ही देर में जयपुर जाने वाली गाड़ी आने की घोषणा हुई। लोगों में चहल-पहल बढ़ गई। निर्धारित समय पर रेलगाड़ी प्लेटफॉर्म पर आ गई। यात्री डिब्बे में चढ़ने के लिए रेलगाड़ी की ओर लपके, उधर उतरने वाले यात्री भी डिब्बे से उतरने लगे। चढ़ने और उतरने वाले धक्का-मुक्की करने लगे। हम भी निर्धारित डिब्बे पर पहुँचे और थोड़ी मशक्कत के बाद अपनी सीट पर जाकर बैठ गए।

उपसंहार—रेलवे प्लेटफॉर्म का दृश्य बड़ा ही रोचक और आकर्षक होता है। यहाँ यात्रियों की भीड़ बहुत अधिक रहती है। कभी भीड़ कम होती है तो कभी रेलगाड़ी आने पर फिर भीड़ बढ़ जाती है। फिर से यात्रियों के चढ़ने-उतरने का दृश्य प्रारंभ हो जाता है।

4. बाढ़ का दृश्य

प्रस्तावना—जब धरती को पानी की प्यास लगती है, तब तो पानी की बूँद भी नहीं बरसती और कभी पानी इतना बरसता है कि नदियाँ उसे अपने किनारों के आँचल में समेट नहीं पातीं और यही पानी बाढ़ के रूप में अभिशाप बन जाता है।

बड़ोदरा में बाढ़—भारी बारिश के कारण विश्वामित्री नदी उफान पर बहने लगी। लगातार बारिश से बड़ोदरा में बाढ़ के हालात बन गए। बाढ़-बारिश के चलते कई लोगों की मौत हो गई, हजारों लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाया गया। शहर के रिहाइश भर में ज्यादा इलाकों में 4 से 5 फुट पानी भर गया।

बाढ़ में घिरे जीव-जन्तु—बाढ़ के कारण जीव-जन्तु खासकर पालतू मवेशी—गाय, भैंस, अन्य कुत्ते आदि जानवर बुरी तरह फँस गए। इसके अलावा साँप, कछुए और साही जैसे जानवर भी बाढ़ में घिर गए थे। अनेक जीव-जन्तु इस बाढ़ में फिसलकर मर गए।

कालोनियों में मगरमच्छ—विश्वामित्री नदी जो बड़ोदरा से होकर गुजरती है, मगरमच्छों का घर है और बाढ़ के कारण वे नदी से बाहर निकलकर शहर की कालोनियों में फैल गए, जिनमें से कुछ 15 फीट तक लंबे थे। जिससे स्थानीय लोगों में दहशत फैल गई। वन विभाग ने कई मगरमच्छों को नदी में पहुँचाया।

विभीषिका—बाढ़ के कारण बड़ोदरा में जान-माल की बहुत हानि हुई, बाढ़ की विभीषिका का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि लोग कई हफ्तों तक सामान्य स्थिति में नहीं आ पाए। बाढ़ के बाद फैली गंदगी, उससे उत्पन्न बीमारियों ने इस विभीषिका को और बढ़ा दिया।

उपसंहार—बाढ़ के कारण न केवल इंसानों को बल्कि जानवरों को भी अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। हमारे देश में प्रत्येक वर्ष कहीं न कहीं बाढ़ के कारण जान-माल की हानि होती रहती है। बाढ़ रोकने के लिए सुनियोजित प्रयास और प्रबंध किए जाएँ, ताकि बाढ़ की विभीषिका से बचा जा सके।

अध्याय–24 मौखिक अभिव्यक्ति

छात्र स्वयं करें और समझें।

अध्याय–25 सड़क सुरक्षा एवं परिवेशीय सजगता

1. 'सड़क सुरक्षा' सुरक्षित यातायात से सम्बन्धित एक उपाय है जिसमें सड़क दुर्घटना में लोगों को चोट लगने और उनसे मौत होने आदि घटनाओं को कम करने का प्रयास किया जाता है। इस हेतु यातायात के विभिन्न नियमों का पालन करने की अपेक्षा की जाती है ताकि यातायात सर्वाधिक सुरक्षित हो। परिवहन हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। ऐसी दशा में 'सड़क सुरक्षा' से सम्बन्धित नियमों का पालन करना प्रत्येक व्यक्ति के लिए अनिवार्य है।
2. (क) पैदल चलते समय हमें सड़क के फुटपाथ पर चलना चाहिए।
   (ख) सड़क पार करते समय हमें ट्रैफिक लाइट में लाल बत्ती होने पर जेब्रा क्रॉसिंग से सड़क पार करनी चाहिए।
3. ट्रैफिक लाइट में पीली, लाल तथा हरे रंग की तीन बत्तियाँ होती हैं। पीली बत्ती लाल बत्ती के होने का संकेत देती है। लाल बत्ती होने पर वाहन रोकना पड़ता है। हरी बत्ती चालक को आगे बढ़ने का संकेत देती है।
4. सड़क पर बनी सफेद और काली धारी वाली पट्टियों को 'जेब्रा क्रॉसिंग' कहते हैं। इसके ऊपर से पैदल यात्री सड़क पार करते हैं।
5. 'सड़क की भाषा' से आशय यातायात के नियमों का ज्ञान होने से है। सड़क पर अनेक संकेतक चिह्न बने होते हैं हमें उनके बारे में जानकारी होनी चाहिए, तभी हम सुरक्षित यात्रा कर सकते हैं।
6. सीट बेल्ट दुर्घटना की स्थिति में वाहन चालक एवं सवारी को आगे की टक्कर होने से रोकती है। यह वाहन चालक व सवार सभी व्यक्तियों के लिए महत्वपूर्ण है।
7. (क) 101 नं. (ख) 108 नं. (ग) 100 नं.। (घ) हमें पुलिस और एंबुलेंस को सूचना देनी चाहिए तथा घायलों की प्राथमिक चिकित्सा करनी चाहिए।
8. (क) ट्रैफिक लाइट पर खड़े रहकर इंजन न बंद करने से ईंधन की खपत बढ़ती है तथा वायु प्रदूषण भी होता है।
   (ख) आगे की गाड़ी व अपनी गाड़ी के बीच एक गाड़ी की दूरी रखनी चाहिए।
9. गाड़ी चलाते समय मोबाइल फोन पर बातें करने से चालक का ध्यान बातों की ओर चला जाता है। फलतः वाहन से नियंत्रण हटते ही प्रायः दुर्घटना हो जाती है। अतः वाहन चलाते समय मोबाइल पर बातें नहीं करनी चाहिए।
10. मुझे अपने दादाजी और विज्ञान अध्यापक महोदय से यह जानकारी मिली कि सड़क चिह्न पूरी दुनिया में एक जैसे होते हैं। इनके द्वारा मुझे यह भी ज्ञात हुआ कि विभिन्न देशों में अलग-अलग भाषाएँ बोली जाती हैं। ये भाषाएँ प्रायः वाहन चालकों को समझ में नहीं आतीं। दूसरे शब्दों में सड़क के नियमों को समझने में भाषाई विभिन्नता रुकावट बन जाती है। इसी कारण सड़क के नियमों को संकेत रूप में समझाने के लिए पूरे विश्व में सड़क चिह्न एक जैसे होते हैं।
11. पैदल यात्रा पारपथ को जेब्रा क्रॉसिंग इसलिए कहते हैं क्योंकि सड़क पर जिस जगह यह क्रॉसिंग होती है वहाँ वैसी ही धारीदार पट्टियाँ बनी होती हैं जैसी जेब्रा पशु के शरीर पर बनी होती हैं। इस प्रकार जेब्रा क्रॉसिंग का आशय धारीदार पट्टियों से होता है।
12. विद्यालय जाते समय और घर वापस आते समय हम सड़क के जिन चिह्नों को देखते हैं उनमें से कुछ के अर्थ निम्न हैं—
   (i) आगे मोड़ है। (ii) प्रवेश निषेध। (iii) बाएँ प्रतिबंधित। (iv) आगे विद्यालय है। (v) पैदल यात्रा प्रतिबंधित है। (vi) गति अवरोधक। (vii) गति सीमा। (viii) यू टर्न निषेध (ix) ओवरटेक निषेध।
13. हमें यातायात के निम्नलिखित नियमों का पालन करना चाहिए—
   1. हमें सदैव सड़क पर बायीं ओर ही चलना चाहिए।
   2. पैदल चलने की दशा में सड़क हमेशा जेब्रा क्रॉसिंग से ही पार करनी चाहिए।

3. सड़क संकेतों एवं चिह्नों को देखकर उनके द्वारा दिए गए सांकेतिक निर्देशों का सावधानीपूर्वक पालन करना चाहिए।

4. दो पहिया वाहन चलाते समय हेलमेट अवश्य लगाना चाहिए।

5. चार पहिया वाहन चलाते समय सीट बेल्ट अवश्य बाँधनी चाहिए। वाहनों को निश्चित किए गए स्थान पर ही पार्क (खड़ा) करना चाहिए।

14. सड़क पार करते समय हमें सर्वप्रथम दाएँ, बाएँ यह देखना चाहिए कि कहीं कोई वाहन तो नहीं आ रहा है। इसके बाद सड़क के विभिन्न संकेत चिह्नों को देखकर सावधानीपूर्वक सड़क पार करनी चाहिए। पैदल होने पर ज़ेब्रा क्रॉसिंग से ही सड़क पार करनी चाहिए।

15. 1. जब हम पैदल हों तो ध्यानपूर्वक चलना चाहिए। सामने से आ रहे यातायात पर नज़र रखनी चाहिए, जहाँ ड्राइवर नहीं देख पाए वहाँ सड़क पार करने से बचना चाहिए।

2. डिवाइडर अथवा रेलिंग के ऊपर से कभी नहीं कूदना चाहिए।

3. यदि हम साइकिल से यात्रा कर रहे हैं तो साइकिल पर क्षमता से अधिक भार नहीं लादना चाहिए, यदि सड़क पर साइकिल मार्ग हो तो केवल उसका ही उपयोग करना चाहिए अथवा हमेशा बायीं ओर चलना चाहिए।

4. सड़क पर मुड़ते समय यातायात पर दृष्टि डालनी चाहिए एवं हाथ से मुड़ने वाली दिशा में संकेत करना चाहिए।

5. यदि हम बस से विद्यालय जा रहे हों तो शरीर का कोई भी अंग खिड़की से बाहर नहीं निकालना चाहिए, शोरगुल कदापि नहीं करना चाहिए। इससे चालक का ध्यान बँटता है और दुर्घटना की सम्भावना बढ़ जाती है।

16. त्रिभुजाकार चिह्न	वर्णन
	यह चिह्न वाहन को सावधानी से चलाने की चेतावनी देता है और यह दर्शाता है कि आगे थोड़ी दूरी पर स्कूल है। अतः गति धीमी रखें।
	यह चिह्न दर्शाता है कि आगे ज़ेब्रा क्रॉसिंग है, पदयात्री सड़क पार करते हैं। अतः वाहन की गति नियंत्रित करें।

17. 1. प्रवेश निषेध, 2. हॉर्न प्रतिबंधित, 3. आगे विद्यालय है, 4. पैदल यात्रा प्रतिबंधित, 5. गति अवरोधक, 6. गति सीमा।

18. विद्यालय में जल का दुरुपयोग करने वाले छात्रों को हम समझाएँगे कि उन्हें जल का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए क्योंकि जल ही जीवन है, जल का सदुपयोग करना चाहिए। टंकी के नलों को खुला छोड़कर जल व्यर्थ में फैलाना नहीं चाहिए। क्योंकि जल पर्याप्त नहीं रहेगा तो हमारा जीवन संकट में पड़ जाएगा। हमारे दैनिक कार्य नहीं हो सकेंगे।

19. घर के पास गंदा पानी एकत्रित होने से मच्छरों का आतंक बढ़ जाएगा। क्योंकि मच्छर पानी में ही अण्डे देते हैं, ऐसी दशा में मलेरिया एवं डेंगू बुखार होने की सम्भावना अत्यधिक बढ़ जाएगी क्योंकि ये दोनों रोग मच्छरों के काटने से ही होते हैं। इसके निदान हेतु हम दो तरह का उपाय करेंगे—

1. एकत्रित गंदे जल में मिट्टी का तेल डाल देंगे ताकि उसमें पनप रहे मच्छर नष्ट हो जाएँ।

2. गंदे पानी की उचित निकासी के लिए अभिभावकों की मदद से सम्बन्धित व्यक्ति / विभाग से बात करेंगे।

20. हमें खाना खाने से पहले हाथ को साबुन से अच्छी तरह धोने के लिए इसलिए कहा जाता है क्योंकि जब हम काम कर

रहे होते हैं तो हमारा हाथ अलग-अलग वस्तुओं, स्थानों आदि तक पहुँचता है। इन वस्तुओं, स्थानों पर विद्यमान विभिन्न प्रकार के हानिकारक जीव हमारे हाथों में चिपक जाते हैं। ये शरीर के अन्दर पहुँचकर घातक नुकसान पहुँचा सकते हैं। इसीलिए साबुन से हाथ को अच्छी तरह धोने के लिए कहा जाता है।

21. बाजार से विभिन्न वस्तुओं/सब्जियों/फलों आदि को पॉलिथीन बैग में लाना उचित नहीं है। इसके लिए हमें घर से कपड़े का थैला ले जाना चाहिए। पॉलिथीन का अपघटन नहीं हो पाता इस कारण भूमि के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। इसका प्रभाव अन्नोत्पादन पर पड़ता है। इसके अलावा जानवर आदि भी इसे खा जाते हैं जिसके कारण उनकी मृत्यु तक हो जाती है।

22. बिजली बचाने के लिए हम अपने स्तर से निम्नलिखित प्रयास कर सकते हैं—

(क) जब आवश्यक हो तभी बल्ब, पंखे आदि जलाएँ/चलाएँ उन्हें अनावश्यक जलता हुआ/चलता हुआ न छोड़ें।

(ख) यदि सीमित रोशनी की आवश्यकता है तो अधिक वोल्टेज/वाट के बल्ब का प्रयोग न करें।

(ग) बिजली का अपव्यय न हो इस हेतु ISI मार्क उपकरणों का इस्तेमाल करने के लिए अभिभावक से कहेंगे।

23. हमें भलीभाँति मालूम है कि स्वस्थ जीवन के लिए स्वच्छ पर्यावरण अनिवार्य है। इसे स्वच्छ रखना हमारी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। इसकी स्वच्छता हेतु हम निम्नलिखित प्रयास कर सकते हैं—

(1) एक पेड़ लगाकर उसे तैयार करने का संकल्प लें।

(2) न तो जल को दूषित करें, न करने दें।

(3) विवाह या अन्य समारोहों में ध्वनि विस्तारक यन्त्रों से ध्वनि प्रदूषण होता है। इस हेतु लोगों को जागरूक करेंगे।

(4) कूड़ा-कचरे को निर्धारित स्थान पर ही इकट्ठा करने के लिए लोगों को प्रेरित करेंगे।

24. स्वच्छ भारत अभियान में हम अपने स्तर से यह योगदान दे सकते हैं कि विद्यालय/गाँव के साथियों के साथ अलग-अलग टोली बनाएँ और आस-पास के क्षेत्रों की साफ-सफाई करें। कूड़े-कचरे को निर्धारित स्थान पर एकत्रित कर उसका उचित निस्तारण करवाएँ। इस तरह किया गया छोटा-छोटा प्रयास अन्ततोगत्वा बहुत बड़ी सफलता अर्जित करेगा।

25. 'नमामि गंगे' योजना केंद्र सरकार द्वारा गंगा नदी के प्रदूषण को समाप्त करने के लिए शुरू की गई है। इसके तहत नदी के ऊपरी सतह की सफाई से लेकर बहते हुए ठोस कचरे की समस्या को हल करने, घाटों के निर्माण, मरम्मत और आधुनिकीकरण का लक्ष्य शामिल है। यद्यपि गंगा नदी की सफाई इसके सामाजिक-आर्थिक एवं सांस्कृतिक महत्व और विभिन्न उपयोगों के कारण बहुत कठिन है किन्तु बेहतर भविष्य के लिए ठोस कदम उठाने ही पड़ेंगे।

26. ई-प्रदूषण—इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों (मोबाइल फोन, टी.वी., रेफ्रिजरेटर आदि) के कचरे से उत्पन्न होने वाला प्रदूषण, ई-प्रदूषण कहलाता है। इस कचरे के कारण पर्यावरण में विभिन्न प्रकार की जहरीली गैसें बनती हैं जो स्वास्थ्य पर बहुत बुरा प्रभाव डालती हैं। इससे बचने के लिए ई-कचरे का वैज्ञानिक प्रबन्धन आवश्यक है अन्यथा धीरे-धीरे यह विकराल रूप धारण कर लेगा।